मेरी तमिलनाडु यात्रा

पुरातन काल में तमिलनाडु में जैनधर्म "राजधर्म" था। पाण्ड्य, चोल, आदि शासक कट्टर जैन थे। ये देव, शास्त्र गुरु के परम भक्त और असंदिग्ध श्रद्धानी थे। इसके प्रमाण यहाँ के भग्नावशेष-विशाल जिनालय, अनोखी कलायुत जिनबिम्ब शिलालेख (शासनकल्लु) पहाड़ियों पर उत्कीर्ण जिन प्रतिमाएँ, साधु-साध्वियों की वसतिकाएँ, युनिवर्सिटी, विद्यालयों के खण्डहर आदि हैं।

हमारे दिग्गज, धुरंधर, प्रतिभाशाली आचार्य कुन्दकुन्द, समन्तभद्र, पूज्यपाद सिंहनन्दी, वीरसेन, जिनसेन, अकलंक इसी प्रदेश में जन्में थे। इन्होंने अपने बुद्धि वैभव से जैनधर्म को सार्वभौमिकता प्रदान की।

मद्रास प्रान्त से गोदावरी कृष्णा, नैल्लोर, कुडापा जिले के 54 स्थानों में शिलालेख पाये गये हैं। विजय मंगलम्, आनन्द मंगलम् सित्ताम्बूर आदि में विशाल जिन मन्दिर दर्शनीय है। यहां धवलगिरी पर धवल ग्रन्थ पूरा हुआ था। श्री भद्रबाहु स्वामी के 12000 शिष्य यहाँ आकर रहे थे। उन्होंने चैत्य चैत्यालयों की वन्दना की, धर्मोपदेश दिया और तप किया। इससे सिद्ध है कि उस समय यहाँ लाखों सुबुद्ध धर्मपरायण क्षिगम्बर जैन परिवार होंगे।

यहाँ के जिनालयों के जीर्णोद्धार के लिए १०५ परम् पूज्य प्रथम गणिनी आर्यिका विजयामती माता जी की सद्प्रेरणा से अ.भा. दि. जैन संरक्षिणी महासभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने 1,00,000 एक लक्ष रुपये स्वीकृत किये हैं। 25000 रु. भिजवा दिए हैं। परन्तु कार्य कर्ताओं के अभाव के कारण कार्य संतोष जन्य नहीं हो पाता। कई स्थान विधर्मियों ने हड़प लिए हैं यथा तृपति बालाजी आन्ध्र प्रदेश में।

यहाँ हिंसा काण्ड अधिक हैं। मांसाहारी लोग हैं। वर्ष में एक दिन (संक्रान्ति) को "आडुपोंगल" उत्सव मनाते हैं। इस प्रकार के घिनौने त्यौहार को सर्वथा मिटाने का प्रयास होना चाहिए। अधिक से अधिक अहिंसात्मक साहित्य तमिल भाषा में भाषान्तर करा कर प्रचार होना आवश्यक है।

जैनेतर ही नहीं जैन लोग भी धर्म को भूल गये हैं। प्रातः देव दर्शन, पूजा, स्वाध्याय, आरती आदि क्रियाएँ नहीं करते। इनका कहना है कि यह सब वाद्यार (मन्दिर के पुजारी) का काम है हमारा नहीं। हमे वाद्यार कहते हैं तुम आरम्भादि खेती व्यापार करते हो इसलिए भगवान के पास आने योग्य नहीं। इस ओर पू. दर्शन, पूजन करने लगे हैं किन्तु भाषा की कठिनाई होने से पूर्ण सफलता नहीं हो रही है। विदुषीरत्न सिद्धान्त विशारद श्री १०५ प्रथम गणिनी आर्यिका विजयामती जी, आचार्य प्रवर श्री महावीर कीर्ति महाराज की शिष्या हैं। वक्तव्य कला में निपुण हैं। समाज में अच्छी जागृति हो रही है। संघ में १०५ आ. ब्रह्ममती जी १०५ क्षु. आदि मती जी, तथा ५ बाल ब्रह्मचारणियाँ हैं जो प्रत्येक कार्य में उत्साह से भाग लेती

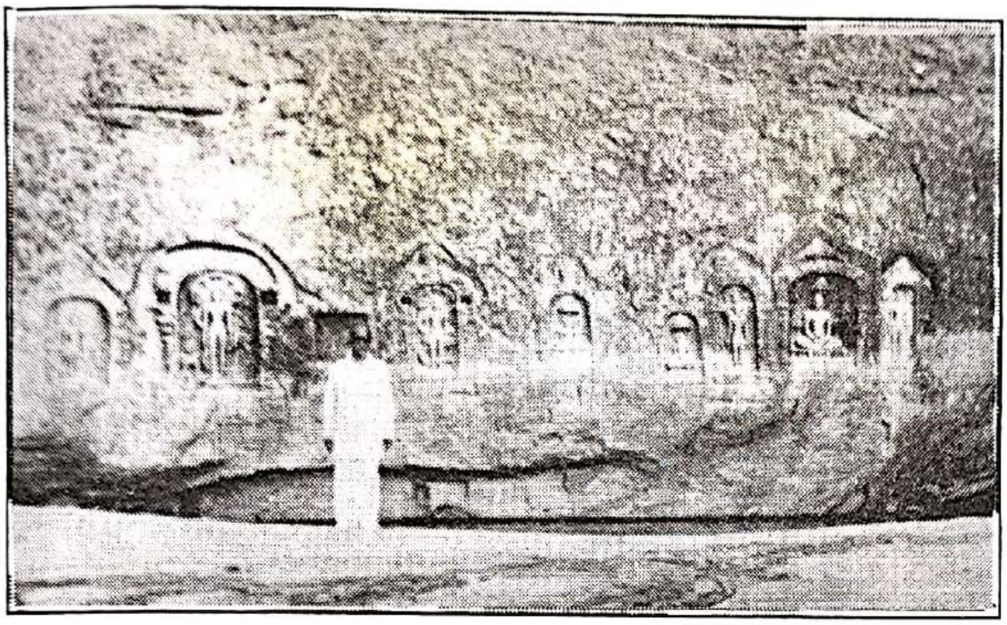

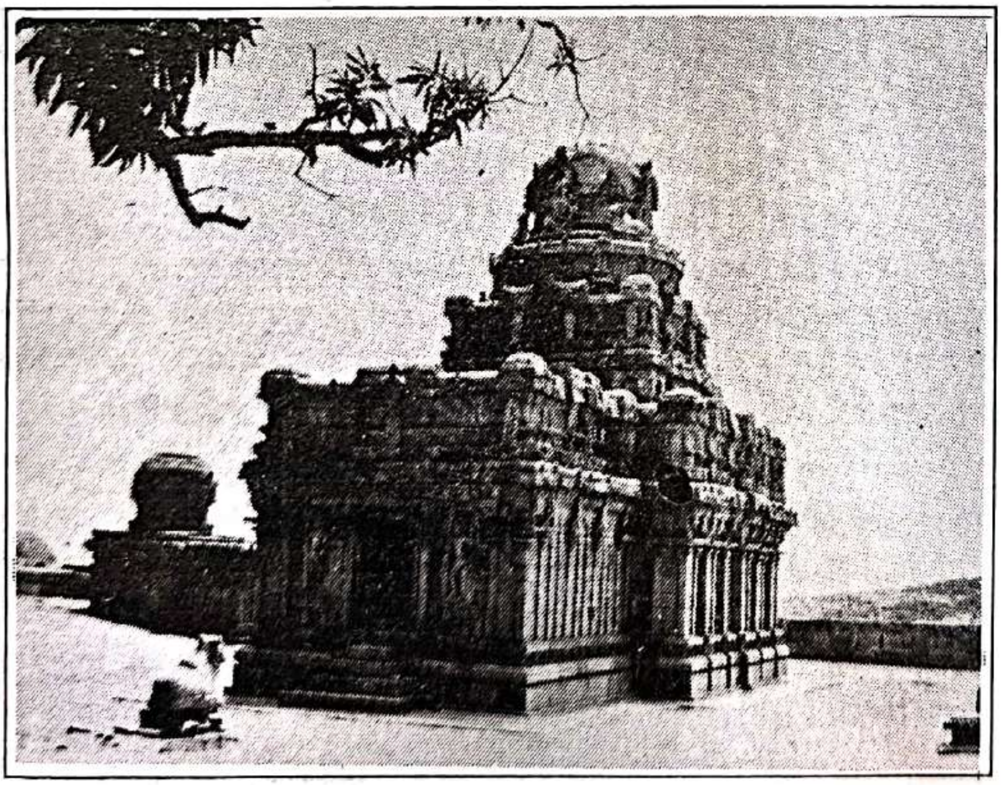

हैं और सतत ज्ञानाराधन में तत्पर रहती हैं। उनके प्रभाव से ६ स्थानों पर पाठशालाएँ स्थापित हुई हैं। व्यवस्था यथोचित नहीं हो रही हैं।

यहाँ का जीवन सात्विक है। सम्यग्दर्शन के पोषक बीज है। यहाँ सम्यग्दर्शन व्रत ४८ दिन का करते हैं इसे 'नरकाक्षी' व्रत कहते हैं। निरुनर कोंड्रम छोटी सी पहाड़ी है यहां विस्तृत गुफा है जिसे पाण्डवों की तपोभूमि कहा जाता है। गुफा में अतिशय कारक श्री पार्श्वप्रभु की मूर्ति उत्कीर्ण है। अन्य सैकड़ों मूर्तियां हैं यहीं यह मेला होता है। यहां की कला-कौशल को तोड़-फोड़ कर जो अनधिकार चेष्टा करते हैं उनकी भर्त्सना करना ट्रस्ट और तीर्थ क्षेत्र संरक्षण कमेटियों का कर्त्तव्य है।

हमारा अधिकांश साहित्य तमिल देश में "ग्रन्थलिपि" में निबद्ध है। अतः इस लिपि के ज्ञाताओं को पारिश्रमिक देकर ग्रन्थों को अनुवादित कराना परामवश्यक है है। इसके लिए केन्द्रीय सरकार से भी अनुदान लिया जा सकता है।

यहां की जैन संस्कृति का ह्रास शैवमत से विशेष हुआ है। इनके आतंक से राजा विधर्मी हुए और साथ ही प्रजा भी।

यहां के क्षेत्रों में "पोंन्नूरमलै" विशेष आकर्षक है। यह अति रम्य, शान्त और पवित्र है। चढ़ने को 350 सीढ़ियां हैं ऊपर श्री कुन्दकुन्द आचार्य परमेष्ठी के पावन चरण कमल मणिशिला पर उत्कीर्ण हैं। तलहटी में कुन्दकुन्द आश्रम और कुन्द-कुन्द विद्यापीठ है। विद्यापीठ में 10 छात्र हैं। आश्रम में ५ वेदियों से मण्डित जिनालय है। नन्दीश्वर द्वीप रचना भी है। श्री आ. कुन्द-कुन्द की वाणी हमें उतनी ही मान्य है जितनी भगवान महावीर की। इसीलिए उनकी परम्परा में उनका नाम समादर से लिया जाता है।

मंगलं भगवान वीरो, मंगल गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यौ, जैन धर्मोऽस्तु मंगलम्॥

यहाँ पोन्नूर मलै, कांजीवरं, अकलंक बस्ती आदि स्थानों पर सामूहिक मेले, सभा, आदि की योजना बनाना चाहिए। दक्षिण भारतीय महासभा और उत्तर भारतीय केन्द्रीय सभायें इस ओर ध्यान दें। उच्च कोटि का साहित्य प्रचार हो, पठन-पाठन की प्रणाली प्रचलित करें तो यहां की संस्कृति जीवित रह सकती है।

यहां भव्य जीव हैं। मौसम बड़ा ही अनुकूल है न अधिक गर्मी है न सर्दी। सुखद जल-वायु है। हमारे तीव्र उत्साह अद्भुत लगन मिशनरी भावना का यह पक्ष होगा कि फिर से दक्षिण में जैन संस्कृति का उत्थान होने लगे। यह कार्य तभी सरल हो सकेगा जब यहां मुनिगण, त्यागी, आर्यिका संघ, क्षुल्लक ब्रह्मचारी आदि इन प्रदेशों में विहार करेंगे। आज जितने भी विशाल या छोटे-छोटे दिगम्बर साधु संघ हैं वे सभी श्री कुन्द-कुन्द स्वामी की देन हैं। उन्हीं की शिष्य परम्परा है।

(प्रथम संस्करण से)

सुमेरचन्द जैन शास्त्री एम.ए.
साहित्यरत्न, न्यायतीर्थ

Scanned with OKEN Scanner

सम्पादकीय

परम् पूज्य प्रातः स्मरणीय चारित्र चक्रवर्ती मुनिकुञ्जर सम्राट वर्तमान मुनि परम्परा के प्रणेता श्री 108 आचार्य आदिसागर जी "अंकलीकर" महाराज तत् पट्ट शिष्य समाधि सम्राट बहुभाषी तीर्थ भक्त शिरोमणि 108 श्री महावीर कीर्ति जी महाराज तत् पट्ट शिष्य सिद्धान्त चक्रवर्ती तपस्वी सम्राट 108 आचार्य श्री सन्मति सागर जी महाराज, श्री सम्मेदशिखर सिद्ध क्षेत्र पर समाधिस्थ 108 आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज, 108 आचार्य श्री संभव सागरजी महाराज, बाल ब्रह्मचारी वात्सल्यरत्नाकर सदोपदेशी 108 गणधराचार्य श्री कुन्थु सागरजी महाराज, 108 आचार्य श्री भरत सागरजी महाराज, प्रथम गणिनी ज्ञानचिन्तामणि, विदुषीरत्न, धर्म प्रभाविका 105 आर्यिका श्री विजयामती माताजी एवं लोक के सभी आचार्य, उपाध्याय, मुनि, आर्यिका माताजी, क्षुल्लक, क्षुल्लिका माताजी समस्त गुरु चरणों में त्रिवार नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु। इच्छामि इच्छामि इच्छामि।

परम पूज्य आचार्यों ने कहा है कि दिगम्बर जैन तीर्थों की भाव सहित वन्दना करने से भव्य प्राणियों को नरक और पशु गति से छुटकारा मिल जाता है। भव्य प्राणी वही हैं जिन्हें तीर्थों की वन्दना का सौभाग्य प्राप्त होता है। यदि तीर्थों की पूर्ण जानकारी अथवा उनके महत्व से अपरिचित हों तो तीर्थ यात्रा अपूर्ण ही है। भारत वर्ष में जैन तीर्थों पर प्रकाश डालने वाली कई पुस्तकें हमें मिल सकती हैं, परन्तु प्राचीन तीर्थों को प्रकाश में लाने वाली पुस्तकें मिलना दुर्लभ है। परम पूज्य श्री १०५ प्रथम गणिनी आर्यिका रत्न विदुषी सम्यक् ज्ञान शिरोमणि सि. वि. हृदय सम्राट श्री विजयामती माताजी द्वारा लिखित प्रस्तुत पुस्तक "तामिल तीर्थ दर्पण" भी उन दुर्लभ ग्रन्थों (पुस्तकों) में से एक है। यह एक ऐसा स्वच्छ दर्पण है जिसमें तामिल प्रान्त में विस्मृति के अंधकार में डूबे दिगम्बर जैन संस्कृति के प्रतीक हजारों वर्ष प्राचीन अतिशय क्षेत्र, आचार्यों की तपः गुफाओं, पहाड़ों एवं मंदिरों को स्मृति के प्रकाश में लाया गया है। जिनके दर्शन स्पष्ट प्रतिविम्बित होते हैं। **इस दर्पण में इन क्षेत्रों एवं मंदिरों की वर्तमान जीर्ण शीर्ण स्थिति को उजागर किया है जो अपने जीर्णोद्धार के लिए समग्र दिगम्बर जैन समाज**

Scanned with OKEN Scanner

को सतत् पुकार रहे हैं। परम पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं प्रथम संस्करण के प्रकाशन के बाद कई स्थानों पर जीर्णोद्धार हुआ है। जहाँ तक प्रगति की सूचना मिल सकी उसे इस द्वितीय संस्करण में समावेश किया है।

आदरणीय सेठ श्री ताराचन्द जी बगड़ा, सेठ श्री चम्पा लाल जी एवं सेठ श्री सोहन लाल जी सेलम प्रवासी के अनुरोध पर परम् पूज्य १०५ प्रथम गणिनी आर्यिका रत्न श्री विजयामती माताजी ने तामिलनाडू प्रांत के प्रत्येक गांव गांव में अपने संघ सहित विहार कर उन ऐतिहासिक तीर्थों का पता लगाया जहां हजारों हजारों वर्ष पूर्व पूज्य आचार्यों एवं गणिनी आर्यिकाओं ने हजारों साधु साध्वियों के साथ पहाड़ों एवं गुफाओं में कठोरतम तपस्या कर समाधि ली थी। इस पुस्तक में उन तीर्थों में , गुफाओं में, मंदिरों में एवं पहाड़ों पर विद्यमान १००८ भगवान तीर्थङ्करों की प्रतिमाओं, देवी, देवताओं की प्रतिमाओं एवं प्राचीन अतिशय क्षेत्रों का वर्णन बड़ी ही रोचक, सरल बोधगम्य भाषा में करते हुए सभी भव्य प्राणीयों को दर्शनार्थ आमन्त्रित किया है। पूज्य माताजी ने इन तीर्थ स्थानों का जीर्ण शीर्ण एवं दयनीय स्थिति का विवेचन भी मार्मिक भाषा में कर समग्र भारत वर्षीय दिगम्बर जैन समाज को दिग्दर्शन देते हुए उनकी रक्षार्थ एवं जीर्णोद्धार कराने के लिए प्रथम संस्करण "तामिल तीर्थ दर्पण" द्वारा आह्वान किया था। इस ग्रन्थ के पठन मात्र से उन तीर्थों एवं तपोभूमि के लिए मस्तक अपने आप नत हो जाता है तथा उनके दर्शनों के लिए भावना उमड़ पड़ती है। दानी भव्य प्राणियों के लिए उन तीर्थों के जीर्णोद्धार कराने में अपनी नश्वर लक्ष्मी का सदुपयोग कर भव-भवान्तरों के लिए अक्षय पुण्य लाभ कमाने का सुन्दर एवं अनूठा मौका है। यह एक ऐसा "रेस" का मैदान है जहाँ राशि लगाने से हानि होने का तो एक तिल मात्र भी अन्धेशा नहीं है बल्कि स्थायी जन्म जन्मान्तरों में लाभ देने वाला विनियोग है।

वास्तव में तामिलनाडू में छिपी दिगम्बर जैन प्राचीन संस्कृति, अतिशय क्षेत्र, अतिशयकारी जिन बिम्बों गुफाओं एवं पहाड़ों को उनके साथ जुड़ी परम्परागत लोक कथाओं, मान्यताओं के साथ उजागर करने का पूज्य माताजी का यह दुर्लभ प्रयास सर्वथा सराहनीय तो है ही साथ ही इन क्षेत्रों का जीर्णोद्धार हेतु पुकारती हालत भी जैन समाज के कर्णधारों के लिए विचारणीय भी है।

श्री दिगम्बर जैन विजया ग्रन्थ प्रकाशन समिति झोटवाड़ा की स्थापना परम् पूज्य प्रातः स्मरणीय श्री १०५ प्रथम गणिनी आर्यिका श्री विजयामती माताजी से शुभाशीर्वाद प्राप्त कर ब्रह्मचारी श्री मोती लाल बड़जात्या कामां निवासी ने अक्टूबर १९८३ में की थी। अब जबकि दूसरी पुस्तक (ऐतिहासिकक ग्रन्थ)

Scanned with OKEN Scanner

श्री दिगम्बर जैन विजया ग्रन्थ प्रकाशन समिति

के

संस्थापक

ब्र. श्री मोतीलाल बड़जात्या कांमा निवासी की 72 वर्ष की आयु में समाधि दिनांक 8-11-84 को प्रात: 9-40 बजे कांमा (भरतपुर) में हुई ।

समिति 14वीं पुण्य तिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

नाथूलाल जैन 'टोंक वाला'
प्रबन्ध व्यवस्थापक

महेन्द्र कुमार जैन (बड़जात्या)
सम्पादक

Scanned with OKEN Scanner

का द्वितीय प्रकाशन हो रहा है, हमारे बीच समिति के संस्थापक नहीं रहे हैं। ब्र.श्री मोती लाल जी ने अन्तिम समय में अपने वस्त्रों का त्याग कर धार्मिक पाठ एवं श्री णमोकार मन्त्र की ध्वनि के मध्य इस असार संसार को दिनांक 8-11-84 को प्रातः ९.४० पर त्याग दिया। समिति ऐसे धर्मात्मा शान्त चित्त एवं गुरुभक्त की दिवंगत आत्मा की 14वीं पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

पुस्तक के प्रकाशन कार्य में आंशिक आर्थिक सहयोगी श्री एच. सी. जैन एवं समिति के सभी सदस्यों विशेषकर श्री नाथूलाल जैन टौंक वाला, श्री अभिषेक जैन का मैं हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर पुस्तक को तैयार कराने में मुझे सहयोग प्रदान किया है।

मेरा अनुभव एवं ज्ञान पुस्तक की सामग्री एवं ऐतिहासिक प्राचीन जैन संस्कृति के प्रतीक तामिल तीर्थ क्षेत्रों के विषय में अत्यन्त तुच्छ है। अतः साधु गण विद्वजन व पाठक गणों से अनुरोध है कि वे त्रुटियों के लिए क्षमा करें तथा अपने अमूल्य सुझावों से पुस्तक की लेखिका परम् पूज्य १०५ प्रथम गणिनी आर्यिका श्री विजयामती माताजी को अवगत करायें जिससे आगामी पुस्तकों में पर्याप्त सुधार हो सके।

पुनः त्रिवार नमोस्तु एवं आशीर्वाद की अभिलाषा लिए हुए।

गुरुभक्त

महेन्द्र कुमार जैन 'बड़जात्या'

Scanned with OKEN Scanner

तामिल तीर्थ दर्पण

अनुक्रमणिका

1. **तामिल जैन तीर्थ—**

परिचय एवं महत्व (1)

2. **अलुन्दूर पेट सर्कल—**

तिरुनरं कोंड्रम (1)

3. **कांजीवरम् सर्कल—**

कांजीवरम् (12), जिनकांची (12), पेरुनगर (15), आरपाकम् (15), मागरल (16)

4. **चेय्यार सर्कल—**

नावल (17), बेल्लै (17), वेलियमल्लूर (18), करन्दै-तिरुमुनिगिरी (18), तिरुप्पणमूर (20), वेणवाक्कम (21)

5. **वन्दवासी सर्कल—**

वन्दवासी (22), सल्लुकै (22), विरुदूर (23), नेल्लियानगुलम (23), विल्लीवनम (24), नल्लूर (24), अनन्तपुरम (25), एरम्बूर (25), मुदलुर (25) एलंगाडु (26), पोन्नूर गांव (26), बंगारम (27), सातमंगलम् (27), गुडलूर (28), तेल्लार (29), अगर कोर कौटे (29), पैरियकोरे कौटे (29), अरुगाऊर (30) मञ्जपट्टु (31) तेन्नात्तूर (31), इसाकोलत्तूर (32), सोलै अरुगाऊर (32), देसूर (32), नरकोइल (33), पोन्नूल मलै (34), वेणकुण्ड्रम (35), सैंद मंगलम् (36), एरुम्बूर (38), आयलबाडी (38)

६. **आरणी सर्कल—**

पेरनमल्लूर (39), वालपंदल (39), मेलपन्दल (39), कोइलांपूण्डी (39), नगरम (नेत्तापाक्कम-अतिशय क्षेत्र) (40), पूण्ड़ी (महान अतिशय क्षेत्र) (40), सेऊर (42), अनन्तपुरम (42), आरणी (42), तच्चूर (43), सदुपेरियापालियम् (43), तिरुमलै (44), ओदलवाडी (46), तच्चाम्बाडी (46)

Scanned with OKEN Scanner

तामिल तीर्थ दर्पण

अनुक्रमणिका

1. **तामिल जैन तीर्थ—**

   परिचय एवं महत्व (1)

2. **अलुन्दूर पेट सर्कल—**

   तिरुनरं कोंड्रम (1)

3. **कांजीवरम् सर्कल—**

   कांजीवरम् (12), जिनकांची (12), पेरुनगर (15), आरपाकम् (15), मागरल (16)

4. **चेय्यार सर्कल—**

   नावल (17), बेल्लै (17), वेलियमल्लूर (18), करन्दै-तिरुमुनिगिरी (18), तिरुप्पणमूर (20), वेणवाक्कम (21)

5. **वन्दवासी सर्कल—**

   वन्दवासी (22), सल्लुकै (22), विरुदूर (23), नेल्लियानगुलम (23), विल्लीवनम (24), नल्लूर (24), अनन्तपुरम (25), एरम्बूर (25), मुदलुर (25) एलंगाडु (26), पोन्नूर गांव (26), बंगारम (27), सातमंगलम् (27), गुडलूर (28), तेल्लार (29), अगर कोर कौटे (29), पैरियकोरे कौटे (29), अरुगाऊर (30) मञ्जपट्टु (31) तेन्नात्तूर (31), इसाकोलत्तूर (32), सोलै अरुगाऊर (32), देसूर (32), नरकोइल (33), पोन्नूल मलै (34), वेणकुण्ड्रम (35), सैंद मंगलम् (36), एरुम्बूर (38), आयलबाडी (38)

६. **आरणी सर्कल—**

   पेरनमल्लूर (39), वालपंदल (39), मेलपन्दल (39), कोइलांपूण्डी (39), नगरम (नेत्तापाक्कम-अतिशय क्षेत्र) (40), पूण्ड़ी (महान अतिशय क्षेत्र) (40), सेऊर (42), अनन्तपुरम (42), आरणी (42), तच्चूर (43), सदुपेरियापालियम् (43), तिरुमलै (44), ओदलवाडी (46), तच्चाम्बाडी (46)

Scanned with OKEN Scanner

7. सेञ्जीसर्कल—

तोण्डूर (47), कल्लपुलियूर (48), वलत्ति (48):, मलयनूर (49), तायनूर (50) तोरपाडी (50), तिरुनादनकोंड्रम (51), सिंजी (52), पेरुपुगै (54), वीरणमूर (55).

8. टिण्डीवनम् सर्कल—

टिण्डीवमनम् (56), वीडूर (56), पैरनी (57), पैराऊर (58), उप्पूवैल्लूर (59), आलग्राम (60), सेंडीपाक्कम (61), पेरुमण्डूर (61), विलुक्कम (62), मेलचित्तामूर (63), अलगूर (67), आतिपाकम् (68), वेल्लिमेडुपेट्टै (68)

9. पाण्डिचेरी—

पाण्डिचेरी (69)

10. कडलूर सर्कल—

ओ.टी. कडलूर (70), पनरौटी (72) सेलम (72)

11. मदुरै सर्कल—

मदुरई (73), नागमलै (74), मेत्तुपट्टीमलै (76), करलीपट्टीमलय (76), तिरुपरन कांड्रम मलय (77), कडगुमलै (78), यानैमलै (86), अलगरमलै (87), अरटी पट्टी (88), किलवलवू (89), पदुकोटे (92), सिद्धनवासलमलै (92), कुत्तिमलै (94), तंजाऊर (96), तंजाऊर कोटै (99), मनार गुड़ी (100), मनार गुडी का चैत्यालय (102), दीपं गुडी (102), कुम्भकोनम (104).

Scanned with OKEN Scanner

श्रद्धा सुमन

आओ दिखायें हम शुभ नगरी, तमिलनाडु शुभ तीर्थ की
रत्नराशियाँ बिखर रहीं जहाँ, धर्ममयी शुभ भाव की ।।१।।

गुफा कन्दरा पर्वत अगणित, श्रमणसिन्धु की वास थली
श्री कुन्द कुन्द गुरुतपः भूमि जो, गरिमा अपरंपार जी ।।२।।

ज्ञान ध्यान तप लीन निरन्तर, मुनि समूह की तपःथली
श्रमण संस्कृति मौलिकता को, विशद रूप वह श्रेष्ठ छवि ॥३॥

सर्वप्रथम परिचय दूँगी, श्री आदिसिन्धु कुल दीपक की
प्रथम गणिनी आर्यिका हैं वे तमिल दीर्थ दर्पण कर्त्री ।।४।।

महाविभूमि सहित दक्षिण यह, उत्तर भारत जगा रहीं
तमिल प्रान्त जिनभव्य क्षेत्र के, दर्शन की तब लड़ी लगी ।।५॥

सप्त वर्ष तक तमिलवासि को, मोक्षमार्ग दर्शाति रहीं
बोध करातीं धर्म तीर्थ का, धर्म प्रभाविका विजयामती ।।६।।

व्रती अनेको किये आपने, दीक्षा शिक्षा दात्री जी
एकादश प्रतिमा लेकर हम "जय विजय" भी धन्यु हुई ।।७॥

जीर्णोद्धार कर जिन मंदिर के, कीर्ति अनूपम खड़ी करी
अतुल छवि तुम छोड़ गई जी, भव्य प्राणि उर माँहि बसीं ।।८॥

आओ फिर से तमिलनाडु में, विजयध्वजा हे विजयामती!
गाथा तेरे यश गौरव की, डगर डगर में गूँज रही ।।९।।

गुरु प्रसाद ही अमृत सम, मम जीवन को वरदान हुई
माँगी तुंगी जी सिद्ध क्षेत्र पर, आर्यिका दीक्षा प्राप्त हुई ।।१०॥

शत 2 नमोस्तु शत 2 नमोस्तु, भवपार कर्त्री उद्धार करो
रत्नत्रय की किरणों से मुझ विमल प्रभा को विमल करो ।।११॥

श्रद्धावनता - आर्यिका १०५ विमलप्रभा
संघस्थ-प्र.ग.आ. १०५ ज्ञान चिंतामणि
श्री विजयामती माताजी।

Scanned with OKEN Scanner

तामिल नाडू

जैन तीर्थों

की

यात्रा कर

अपना जीवन सफल बनावें।

Scanned with OKEN Scanner

तमिल जैन तीर्थ

परिचय एवं महत्त्व

श्री कुन्द कुन्द देवाचार्य ने ''दंसणमूलो धम्मो'' बतलाया है अर्थात् धर्म की जड़ सम्यग्दर्शन है। सम्यग्दर्शन के मूल हेतू षट् आयतन कहे गये हैं यथार्थ निर्दोष सर्वज्ञ देव, उनसे उपदिष्ट समीचीन आगम, परम बीतरागी निर्ग्रंथ गुरु, सच्चे देव के पूजक, समीचीन आगम को मानने वाले और वीतरागी साधुओं के अनुयायी, इसका स्पष्ट अभिप्राय है कि देव, शास्त्र और गुरु हमारे आत्म धर्म के आधार स्तम्भ हैं। इन तीनों के प्रतीक हैं जिनालय। जिनालयों में देवाधिदेव की प्रतिमा रहती है, पूजन, स्वाध्याय, ध्यानादि के साधकभूत जिनआगम अवश्य विराजमान किये जाते हैं तथा साधु-सन्तों की वसतिका, गुफायें भी प्राय: मन्दिर के अन्दर या आस पास में रहती ही हैं। प्राचीनकाल में उत्तम संहनन होने से मनोबल और धृतिबल भी तदनुकूल होने के कारण साधु-साध्वियाँ प्राय: वन, पर्वतों, गुफाओं में निवास करते थे। हाँ जिनालयों में भी धर्म ध्यान साधना करने के अनेक उल्लेख हैं। जो भी हो, हमारी संस्कृति और धर्म के आधार जिनालय हैं। जो हजारों-हजारों वर्षों से ही नहीं लाखों और करोड़ों वर्षों से हमारे आचार-विचार, त्याग, तपस्या, शील संयम और आत्म शोधन के साधनों का संरक्षण करते आ रहे हैं। ''जिन'' भवनों से हमारा जीवन है, और हमारे जीवन से ये भवन हैं। क्योंकि ''न धर्मो धार्मिकैर्बिना'' धर्मात्माओं के बिना धर्म नहीं टिक सकता। प्राचीन संस्कृति के स्मारक इन रम्य, सौम्य किन्तु जीर्ण भवनों का संरक्षण, जीर्णोद्धार करना प्रत्येक जैन भव्य मात्र का अनिवार्य कर्त्तव्य हो जाता है ये जितने प्राचीन होंगे, हमारे धर्म को भी उतनी ही प्राचीनता प्राप्त होगी। यही नहीं कला विज्ञानादि भी इनके माध्यम से ही सिद्ध होती है। अस्तु, ''तामिलनाडू'' अति

Scanned with OKEN Scanner

प्राचीन किन्तु पिछड़ा देश है। इसका कारण विधर्मियों के अत्याचार, अनाचार ही हो सकते हैं। किन्तु वर्तमान में उनको खोजकर उनका संरक्षण, पुनरुद्धार या जीर्णोद्धार नहीं कराना यह हमारा ही अंधेर खाता होगा। अपने हाथों अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मारना है।

तामिलनाडू प्रदेश के कण-कण में तपस्वियों का तप तेज बिखरा पड़ा है। नन्हीं-नन्हीं सुरम्य पहाड़ियों पर तपः पूत आचार्यों के विशाल संघों के विहार के चिह्न आज भी मुस्कुराते हुए हमें त्याग और संयम का सन्देश सुना रहे हैं। गुफाओं में बने साधुओं के शयनागार और विशाल चट्टानों पर उत्कीर्ण जिन-बिम्ब एवं जिनालयों में जीर्णशीर्ण दशा में प्राप्त ताड़पत्र पर लिखित आगम, रत्नत्रय का मूर्तिमान रूप उपस्थित करते हैं। धर्म और धर्मात्मा का योग ही स्थायित्व की निशानी है। धर्मायतनों की उपेक्षा होने से यहाँ के धर्मानुयायियों की दशा भी दयनीय और सोचनीय हो गई है। यद्यपि यहां समन्तभद्र, कुन्दकुन्द, मल्लिसेन, पुष्पदन्तादि महान् आचार्यों ने जन्म लिया, घोर तप किया, धर्मोपदेश दिया। इसी प्रकार हजारों आर्यिकाओं के संघों ने विहार कर यहाँ के धर्म-बन्धुओं को अनुशासित कर धर्मात्मा बनाया। कहा जाता है और हमने देखा भी है कई स्थानों में पहाड़ियों की विशाल गुफाओं में गुरुकुलों के भग्नावशेष हैं जिनमें 8-8 हजार 10-10 हजार आर्यिकायें ससंघ अध्ययन और अध्यापन करती थीं। हजारों श्राविकायें उनके चरणों में आगामाभ्यास करती थीं। इसी प्रकार 8-8 हजार मुनियों का समूह एक साथ गुफाओं में विचरण कर ध्यानाध्ययन की सिद्धि करते थे।

उज्ज्यनी नगरी में अन्तिम श्रुत केवली भद्रबाहु स्वामी के समय 12 वर्ष का दुष्काल पड़ा था। उस समय 24000 साधुओं में 12000 साधु उनके साथ द्रविण प्रान्त में पधारे थे। आचार्य श्री भद्रबाहु स्वामी ने श्रवण बेलगोल के चन्द्रगिरी पर्वत की गुफा में समाधि धारण की

Scanned with OKEN Scanner

प्रथम तीर्थंकर श्री 1008 आदिनाथ भगवान

Scanned with OKEN Scanner

और समस्त शिष्यों को इधर तामिल प्रान्त में विहार करने की अनुज्ञा दी। इससे स्पष्ट होता है कि यहाँ उस समय जैन धर्म अपने पूर्ण वैभव से प्रसरित था, श्रावक जन सुबुद्ध, गुरुभक्त और आत्म-कल्याण के इच्छुक होंगे। आज यद्यपि श्रावक अपने षट् कर्मों को भूल से गये हैं तो भी सरल, धर्मभीरू एवं गुरुभक्त हैं। साथ ही अपने कर्त्तव्यों को जानने, समझने और पालन करने के इच्छुक हैं। परन्तु अर्थाभाव और साधनाभाव के कारण पंगु हो रहे हैं। कई सौ वर्षों से साधुओं का विहार नहीं होने के कारण धर्मोपदेशों से वंचित रहे हैं। कुछ वर्षों से अल्पमात्रा में जो नहीं के बराबर है, कुछ साधु-साध्वियों ने इधर विहार कर धर्मांकुरों को पनपाने का प्रयत्न किया है। परम पूज्य आर्यिकारत्न प्रथम गणिनी सिद्धान्त विशारद श्री 105 विजयामती माता जी ने अपने संघ सहित तामिलनाडू यात्रा में कुछ जाग्रति लाने का प्रयत्न किया है और उनके जीर्णोद्धार के लिये अपने भक्तों को प्रेरित भी किया है। श्रीमान् सेठ निर्मल कुमार जी सेठी, अध्यक्ष महासभा ने एक लाख रुपया जिनालयों के जीर्णोद्धार के लिये प्रदान किये हैं। पूज्य आर्यिका 105 प्रथम गणिनी विजयामती माताजी के प्रयत्नों और प्रेरणाओं से कुछ गाँवों में रात्रि पाठशालायें भी स्थापित हुई हैं। यहाँ इस निबन्ध के लिखने का उद्देश्य तामिल प्रान्त के अतिशय क्षेत्रों, जिनालयों और मुनिवसतिकाओं का परिचय कराना है। इस कार्य के लिये सेलम निवासी भव्यात्मा श्रीमान सेठ ताराचन्द जी बगड़ा से प्रेरणा प्राप्त हुई है। उन्होंने इसके प्रथम संस्करण के प्रकाशन का भार स्वीकार कर अपनी प्रगाढ़ धर्म भक्ति और शृद्धा का परिचय दिया था, इसके द्वितीय संस्करण के प्रकाशन का भार श्री एच. सी. जैन ने कुछ अंश में लिया है वस्तुतः यह सम्यग्दर्शन के वात्सल्य अंग की पुष्टि है। मन्दिरों का परिचय श्री 105 सि. वि. प्रथम गणिनी आर्यिका श्री विजयामती माताजी की डायरी से यहाँ लिख रही हूं। इसका उद्देश्य मात्र भारत के समस्त दिगम्बर जैन बन्धुओं को परिचय कराना है। ताकि अधिक

Scanned with OKEN Scanner

से अधिक संख्या में आकर यात्रा करें और मुक्त हस्त से दान देकर अपनी सिसकती संस्कृति को जाग्रत करें तथा लोभ कषाय पर विजय प्राप्त कर सातिशय पुण्यार्जन करें। गृहस्थाश्रम में जिन पूजा के बाद दान का सर्वोत्तम महत्व है। अर्थ की सार्थकता दान देने से ही हो सकती है। कहा भी है "निज हाथ दीजै साथ लीजै, खाया खोया बह गया" अगर सम्पत्ति को स्थायी बनाना है तो धर्मायतनों के रक्षण में लगाने से ही स्थायी रह सकती है। यहां के जिनालय जितने विशाल हैं उतने ही अनुपम कला से शोभित हैं मूर्तियों की सौम्य छवि तो अनुपम और अद्वितीय है, परन्तु इनको सुरक्षित रखना परमावश्यक है। अतः निम्न पंक्तियों में क्रमशः जिनालयों का संक्षिप्त परिचय दिया जायेगा। विशेष जानकारी के लिये यहां आकर प्रत्यक्ष दर्शन करना चाहिये। इसके पूर्व यहां के तामिल निवासी बन्धुओं के रहन-सहन, आचार-विचारादि के विषय में संक्षिप्त परिचय देना उचित होगा ताकि यात्रियों को उनके साथ वात्सल्य बन्धुत्व स्थापित करने में सरलता होगी।

तामिलनाडू में जैनों का निवासः

प्राचीन इतिहास से विदित होता है कि इस प्रान्त के सभी भागों में जैनों का निवास था। लाखों की संख्या में ये धर्म साधना करते थे और हजारों की संख्या में साधुओं का निरन्तर विहार होता रहता था। वर्तमान में जैनों का निवास चेंगलपट्ट (Chengalputtu) मद्रास (Madras) उत्तर आरकोट (North Arcot) दक्षिण आरकोट (South Arcot) और तंजाऊर (Thangaur) जिले में है। ये लोग सभी दिगम्बर और शुद्ध आगम परम्परा के अनुयायी हैं। सभी की रीति-रिवाज, धार्मिक क्रियाकाण्ड एवं उत्सवादि की पद्धति एक ही प्रकार की है। पन्थवाद का यहां नामो-निशान भी नहीं है। लगभग 100 गांव होंगे, जिनमें जैन दिगम्बर मन्दिर जिनालय और श्रावकों के घर हैं। 60-70 जिनालय तो अतिप्राचीन और जीर्ण अवस्था में पाये जाते हैं जिनका

Scanned with OKEN Scanner

पुनर्निर्माण अत्यावश्यक है। **इधर करीब 20-30 वर्षों से श्वेताम्बर जैनों का आवागमन हो गया है। इनका आतंक उत्तर भारत की भांति इधर भी प्रारम्भ हो गया है। दो-चार प्राचीन मन्दिरों को हड़प भी कर चुके हैं, जो समग्र दिगम्बर जैन समाज के लिये सोचनीय ही नहीं लाञ्छनीय भी है।** इस अत्याचार को रोकना दिगम्बर जैन समाज का परम कर्त्तव्य है। यदि समाज और धर्म के कर्णधार नेता इधर ध्यान नहीं देंगे तो हमारी संस्कृति और धर्म खतरे में पड़ जायेंगे।

आजीविका के साधनः

यहां प्रायः अधिकांश जन खेती करने वाले हैं। माताएं और बहिनें भी किसानी कार्य (Agriculture) में संलग्न रहती थीं। किन्तु अभी कुछ भाई और बहिनें आधुनिक शिक्षा प्राप्त कर शिक्षक-शिक्षिका (Teachers) और प्रोफेसर (Professors) हो गये हैं। व्यापार भी वृद्धिंगत हो रहा है। कुछ लोग मील (फैक्ट्री) आदि भी खोलने लगे हैं। प्रोफेसनल डिग्रियां प्राप्त करने में उद्यमशील हैं अर्थात् भौतिकवाद की होडा-होडी में नवीन पीढ़ी के लोग झुक गये हैं जिससे फैशन और आधुनिक विदेशी रंग में रंगकर धार्मिक जीवन से हटने लगे हैं।

धार्मिक क्रियाकाण्डः

सभी तामिल दिगम्बर जैन समाज का संचालन धर्माचार्य—भट्टारक स्वामी जी द्वारा होता है। इस समय मठ दक्षिण आरकोट जिले के मेल चित्तामूर गांव में स्थित है। ये धर्म गुरु कहे जाते हैं। इनका नाम श्री लक्ष्मीसेन जी पट्टाचार्यवर्य स्वामी जी हैं। पहले इनका मुख्य कार्यालय (मठ) कांजीवरम् में था—जो जिन काञ्ची से आज भी प्रसिद्ध है। यहां की परम्परानुसार उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार, व्रतारोपण आदि कार्य इन्हीं स्वामी जी के द्वारा कराये जाते हैं। इस समय यह मठ तिरूमलै में स्थापित कर दिया गया है।

यहां की मातायें और बहिनें अधिक व्रत नियम पालन करती हैं

Scanned with OKEN Scanner

यथा पूर्णिमाव्रत, चतुर्दशी, अष्टमी, अनन्तव्रत, तीर्थङ्कर नाम व्रत आदि। इनमें "तीर्थङ्करों के नाम लेकर भोजन करना" व्रत विशेष प्रचलित है। हां इन व्रतों को प्राय: एकासन-एकभुक्ति या आचाम्ल भोजन कर, करते हैं, उपवास बहुत कम करती हैं। अधिकांश जनसंख्या गांवों में निवास करती है। अत: इनका रहन-सहन सादा सरल और भारतीय शील सौजन्य के अनुकूल है।

व्रतोपवास के उद्यापनादि या नित्य पूजा-पाठ पण्डित—वाद्यार (Vathyars) लोग ही करते हैं। वही प्रतिदिन घर-घर से दूध लाता है और स्वयं ही अभिषेकादि कर निर्माल्य वस्तुओं को ले जाता है। श्रावक-श्राविकायें बाहर दूर बैठकर मात्र देखते और सुनते हैं। प्राय: प्रात: काल कोई दर्शन करने नहीं आते हैं, सायंकाल अवश्य आरती में सम्मिलित होते हैं। परन्तु आरती अकेला पण्डित "वाद्यार" ही करता है। पण्डित को यहां इन्द्रन् बोलते हैं और यह भी मानते हैं कि इन्द्र को ही पूजा भक्ति का अधिकार है। फलत: श्रावक धर्म लुप्त प्राय: हो गया है। यद्यपि वे कुछ सामूहिक उत्सवादि मनाते हैं—जैसे ब्रह्मदेव महोत्सव, जिन रथोत्सव, पोङ्गल, दीपावली आदि किन्तु इन सभी में पूजा-पाठ का कार्य वाद्यार ही करता है। इसका मूल कारण गुरुओं का विहार नहीं होना और उपदेश का नहीं मिलना है। वर्तमान में कुछ श्रावक-श्राविकाएँ भी स्वयं अभिषेक पूजा करने लगे हैं। सभी प्राचीन पद्धति से पंचामृताभिषेक करते हैं।

ये लोग धर्मोपदेश के प्यासे हैं, साधु के प्रति भक्ति बेजोड़ है, आर्थिक स्थिति कमजोर होने से अधिक विहार आदि नहीं करा पाते किन्तु गांव में पधारे साधु को हर प्रकार से सेवा, भक्ति, आहार आदि से संतुष्ट करने का लक्ष्य रखते हैं। व्रत नियम भी सरलता से धारण कर श्रद्धापूर्वक पालन करते हैं। यहां सायंकाल आरती का शिष्टम अपने ढंग का निराला है। प्रथम अष्ट मंगल द्रव्य का प्रदर्शन करते हैं पुन:

Scanned with OKEN Scanner

क्रमशः 1, 3, 5 और 48 दीपों से जिनेन्द्र प्रभु की आरती उतारते हैं। इसे अष्ट मंगल द्रव्य 'दीपाराधना' के नाम से पुकारते हैं। यहां अब इस विषय की चर्चा न कर मूल उद्देश्य की ओर कलम बढ़ाना ही उचित है। अत: जिन भवनों का परिचय दिया जाता है।

श्री 1008 बाहुबली स्वामी के महामस्तकाभिषेक में हम ससंघ आये हुए थे। उस समय सेलम निवासी सेठ श्री ताराचन्द्र जी बगड़ा एवं सेठ श्री सोहनलाल जी तथा सेठ श्री चम्पालाल जी पाण्डीचेरी आदि भी आये थे। इन्होंने तामिलनाडू यात्रा करने की प्रार्थना की। हमने कहा—भैया ले जाओगे तो हो सकती है। आप लोगों के सहयोग से ही सम्भव है। तदनुसार हम श्रवण वेलगोल चातुर्मास कर बैंगलोर होते हुए हुसूर आये। यहां से सेलम सूचना देते ही उसी दिन सेठ श्री ताराचन्द जी एवं सेठ श्री सोहनलाल जी सपत्नीक अपनी कार लेकर पहुंच गये और तामिल यात्रा प्रारम्भ कराई। आप लोगों का तथा सभी धार्मिक बन्धुओं का सहयोग सराहनीय रहा। सर्वप्रथम संघ सेलम आया। आबाल वृद्ध सभी भक्ति में झूम उठे। तामिल प्रान्त में इतना बड़ा संघ शताब्दियों बाद ही प्रविष्ट हुआ था। वृहद् सिद्ध चक्र विधान प्रथम बार हुआ। इसके अतिरिक्त 10-15 अन्य विधान, प्रवचन, ऋषि मण्डल, अखण्ड जाप सप्ताह, अखण्ड णमोकार मन्त्र जापादि हुए। इस समय यहां 1 चैत्यालय सेठ श्री हीरालाल जी पाटनी के मकान में था। आज वृहद् सुरम्य जिनालय भी प्रतिष्ठित हो चुका है। उस समय संघ में 6 मातायें, 5 बाल ब्रह्मचारिणियां, ब्रह्मचारी, संचालक, श्रावक, श्राविका मिलाकर 15 व्यक्ति थे। संघ यहां 27 दिन ठहरा और महत्ती प्रभावना के साथ विहार हुआ। यहां से विहार कर सर्वप्रथम संघ तिरुनादर कोंड्रम पहुंचा। इसका दूसरा नाम जिनपुरम् व तिरुनरुंकोन्ड्रम है।

आर्यिका विमल प्रभा

Scanned with OKEN Scanner

तामिल तीर्थ दर्पण

ऊलुन्दूर पेट सर्कल

तिरुनरूंकोंड्रम (Thirunarung kondram) अतिशय क्षेत्र:

यह क्षेत्र अत्यन्त प्राचीन है। यहां पहले जैन मुनि संघ का विशाल रूप में निवास था। कहा जाता है कि श्री गुणभद्र मुनिराज के नेतृत्व में "वीर संघ" रहा था। यहां करीब 600 फीट ऊंची पहाड़ी में एक अति विशाल गुफा और उसी के बगल की गुफा में ही भव्य जिनालय है। यहां के शिला लेख से विदित होता है कि यहां पर श्री राम, लक्ष्मण, सीता सती सहित आये थे और इसी गुफा में निवास किया था। ये दोनों गुफायें यद्यपि स्वाभाविक हैं तो भी उनका वर्तमान रूप कृत्रिम है। पहाड़ी पर चढ़ने के मार्ग पर प्रथम ही दाहिनी ओर श्री धरणेन्द्र जी और बायीं और ब्रह्मदेव एवं आगे अति मनोहर श्री पार्श्व प्रभु की पद्मासन प्रतिमा है। 52 सीढ़ियां चढ़ने पर मुख्य द्वार आता है, जिस पर समुन्नत शिखर है। शिखर पर लाइट फिटिंग है। यह द्वार कलात्मक प्राचीन संस्कृति का प्रतीक है। पुनः 5-7 कदम चलकर 9 सीढ़ियां चढ़कर जिनालय का सुविस्तृत प्रांगण आता है। गुफा मन्दिर के ठीक सामने उन्नत ध्वज स्तम्भ है जिसके ऊपर तांबे के घण्टे मंढे हुए प्रतीत होते हैं। इसमें तीन खण्ड रूप ध्वजा है और उसमें लटकती हुई प्राचीन टाइप की घंटियां हैं जो वायु के झोंकों से छुमछुम की आवाज (ध्वनि) से भव्यों को आह्वान करती रहती हैं। मन्दिर में प्रवेश करते ही प्रथम छोटा-सा मण्डप है। पुनः बराण्डा और फिर जिनभवन द्वार है। यहीं से सामने की गुफा में श्री चन्द्रप्रभु स्वामी की लगभग 5 फीट सुखासन प्रतिमा है जो गारे से निर्मित कही जाती है। राम रावण के काल की

Scanned with OKEN Scanner

अन्यत्र भी कई प्रतिमायें ऐसी निर्मित मिलती हैं जैसे पैठन जी अतिशय क्षेत्र में मुनिसुव्रतनाथ जी की प्रतिमा गुफा (भौंरे) में है जिसके सामने बैठकर खरदूषण ने विद्या सिद्ध की थी, ऐसी किंवदन्ती है। हो सकती है, यह भी उतनी ही प्राचीन हो। प्रकोष्ठ के अन्दर सुन्दर यक्ष-यक्षी की रंगीन मूर्तियां हैं। पुनः दूसरा प्रकोष्ठ आता है जिसमें 30 स्तम्भ हैं। दाहिनी और ब्रह्मयक्ष और कुष्मांडिनी देवी की मूर्तियां हैं, इन दोनों के बीच गुफा द्वार है। गुफा में प्रवेश करते ही दाहिनी ओर पर्वत भित्ति में उत्कीर्ण श्री 1008 पार्श्वप्रभु भगवान की अत्यन्त चमत्कारी अतिशयवान सुमनोज्ञ यक्ष-यक्षी सहित खड्गासन मूर्ति है। इसके चमत्कारों से जैन जैनेतर सभी नित्यप्रति दूर-दूर से आते हैं और मनोभिलाषाओं की पूर्ति में पूजा-पाठ करते हैं। इसके आगे एक लम्बी वेदी बनाई गई है, जिसमें 1 नन्दीश्वर, 2 महावीर स्वामी, 3 आदिनाथप्रभु, 5 पार्श्वप्रभु की, 1 सुपार्श्वनाथ, 1 समवशरण पीठ सहित नेमिनाथ (इस प्रकार के पीठ तामिलनाडू में ही देखे हैं)। नव देवता पञ्च परमेष्ठी आदि की मूर्तियां सप्त धातु की हैं। यह गुफा भी अद्वितीय है। प्रकाश के लिये लाइट फिटिंग है। हवा के लिये एक छोटा-सा झरोखा है। इस कमरे में 100-125 (सौ-सवा सौ) लोग बैठकर पूजा-पाठ भक्ति कर सकते हैं। बाहर निकल कर पुनः 30 खम्भे वाले प्रकोष्ठ में नव देवता की 3 प्रतिमायें, 1 पार्श्वनाथ स्वामी की सुखासन, 1 महावीर स्वामी, 1 मल्लिनाथ प्रभु की मूर्तियां हैं। ये सभी काले पाषाण की अत्यन्त रमणीक वीतराग छवि युक्त वैराग्य भाव जगाने में पूर्ण सक्षम हैं। इसके बाद 2-3 सीढ़ी चढ़कर गर्भगृह आता है, इसमें 1 नवदेवता और 1 चौबीसी काले पाषाण की हैं। पुनः 5 वें द्वार में प्रवेश करने पर श्री चन्द्रप्रभु भगवान की भव्य प्रतिमा मिलती है, इसकी प्रदक्षिणा भी है, जिसमें पीछे की ओर 4-5 टूटी-फूटी कोठरियां और तीन बराण्डे हैं। मन्दिर के शिखर पर चारों ओर जिन बिम्ब उत्कीर्ण हैं। तीनों गुफाओं को घेर कर बाहर से परिक्रमा है। शिखर पर चढ़ने के लिये पहाड़ ही में छोटी-छोटी सीढ़ियां छांट कर बनायी गई हैं। यहां बाईं ओर एक विशाल मण्डप बन रहा है, जिसके मध्य में श्री

Scanned with OKEN Scanner

शासन देवता, पद्मावती देवी का मन्दिर बनेगा। यह मण्डप तैयार हो चुका है), पद्मावती देवीजी की प्रतिमा भी प्रतष्ठित हो गई है और इसके चारों ओर कुछ कमरे भी धर्मशाला के रूप में बन चुके हैं। नीचे पहाड़ी की तलहटी में 1 प्राचीन धर्मशाला है, बगीचा, कुंआ भी है। यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था है। यहां प्रतिवर्ष मई मास में 10 दिन ब्रह्मोत्सव के नाम से मेला लगता है। आजकल नरकाक्षी व्रत (सम्यक् दर्शन व्रत) करते हैं और 48 दिन तक इस व्रत को पालते हैं– अन्तिम दिन यहां आकर उत्सव मनाते हैं।

पांचों पाण्डवों ने यहां तपस्या की थी, ऐसा उल्लेख मिलता है। चन्द्र प्रभु मन्दिर की गर्भ गुडी में सुरंग भी है, दूसरी सुरंग बाहर की गुफा में है, यह कितनी लम्बी है पता नहीं। मन्दिर के बाहर एक विशाल भवन है जो सम्भवतः सभा मण्डप रहा होगा या स्वाध्याय शाला। इसी के सामने शासन देव मन्दिर है जिसे इतर जाति वालों ने हड़पने का प्रयत्न किया था परन्तु उन्हें परास्त होना पड़ा। किसी समय यहां 3-4 सौ जैन-नैनारों के घर थे। किन्तु इस समय केवल 1-2 ही घर हैं, ये भी नहीं के बराबर हैं। दो शिखर हैं। चन्द्रप्रभु मन्दिर जी के शिखर के पीछे 5 फीट खड्गासन पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति है पास ही श्वेताम्बरों का आवागमन होने से इस क्षेत्र पर उनकी आंखें लगी हैं, किन्तु यहां के कार्यकर्त्ता सतर्क होने से उनका बस नहीं चला। सीढ़ियों पर चढ़ते ही शासन देव देवी हैं, जहां स्वेतावासों ने अपने नाम का पत्थर लगाने की अनधिकार चेष्टा की। परन्तु दिगम्बरों ने चलने नहीं दी। हमारा संघ पहुंचने से उन्हें इस विषय में विशेष तत्परता मिली। अब वे पूर्ण सावधान है।

यह गांव मद्रास से करीब 250 कि.मी. मद्रास-तिरचना पल्ली रोड पर है। इस सड़क पर ऊलुन्दूरपेट उतर कर तिरुवन्नै नल्लूर रोड से पिल्लैयार कुप्पम् जाना चाहिये। यहां से यह क्षेत्र 5 कि. मी. दूरी पर है। ऊलुन्दूर पेट और पिल्लैयार दोनों ही जगह से बस जाती है। क्षेत्र के नाम से गांव का नाम भी तिरुनायर कोंड्रम ही है। अन्य मतावलम्बी लोग इसको तिन्ड्रंकोट्टै कहते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

कांजीवरम् सर्कल

कांजीवरम्—Kanchipuram (चेंगलपेट जिला)

यह अत्यन्त प्राचीन प्रसिद्ध विशाल नगर है। शहर में एक चैत्यालयनुमा जिनालय है, नीचे धर्मशाला है और पीछे बगीचे के स्थान में मैदान पड़ा है। इस रोड पर करीब 30 दिगम्बर श्रावकों के घर हैं। पूरे शहर में 90 होंगे। यह नव निर्मित जिनालय है इसमें मूल नायक प्रतिमा श्री 1008 महावीर स्वामी की पद्मासन सफेद पाषाण की है। 2-3 बिम्ब और भी हैं जो प्राचीन प्रतीत होते हैं। कहते हैं यहाँ पहले 70 जिनालय थे। यह शहर 4 भागों में बंटा है— 1. जिनकांची, 2. बौद्धकांची 3. शिवकांची एवं 4. वैष्णवकांची।

जिनकांची— Jinkanchi-Thiruparuttri kundram

तिरुप्परुत्तिकुण्ड्रम—

यह महान क्षेत्र है। प्राचीन काल में यह विशाल विद्यापीठ था। यहीं भट्टारक जी का मठ था। यह अपने ढंग का बड़ा ही सुन्दर कलात्मक है। इसमें चोल (Chola) पल्लव (Pallava) और विजयनगर (Vijayanagara) राजाओं के समय की पच्चीकारी, नक्कासी, चित्रकारी एवं वास्तुकला के चिह्न अंकित हैं। यह 2500 वर्ष प्राचीन जिनालय कहा जाता है। सर्व प्रथम चार मठ— 1 जिनकांजीवरम्, 2. कोल्हापुर, 3. दिल्ली और 4. पेनगोंडा (आंध्र) थे। इनमें यह विशेष आकर्षक रहा है। यह काँजीवरम् शहर से 3 कि.मी. है। इसका नाम तिरुप्परुत्तिकुण्ड्रम् है। इसका कारण है कि सबसे प्राचीन जिनालय श्री चन्दुप्रभु स्वामी का है इसके चारों ओर परती-कपास की खेती है, इसी से तिरुप्परुत्ति (परुत्ति माने कपास) नाम पड़ा है। प्रतिमा विशाल पाषाण की है, जिसका शिर भंग कर दिया गया है, मन्दिर बन्द पड़ा है, पूर्ण ध्वंश प्रायः है। इसी के पास विशाल श्री महावीर जिनालय

Scanned with OKEN Scanner

है, जो यहां के 85 जिनालयों में सबसे प्रमुख और बड़ा था । 84 जिन मन्दिर जैनेतर हो चुके हैं। इसे 'जिनकांची' कहते है।

इस समय भट्टारक मठ यहां से मेल 'चित्तामूर' में स्थित है, अभी भी इसे जिनकांची मठ से ही पुकारा जाता है। इस समय यहां 1 श्रावक का घर और 1 पुजारी का घर है। प्राचीन समय में अनेक श्रावक परिवार थे। क्योंकि विद्यापीठ में हज़ारों विद्यार्थी, विद्यार्थिनी साधु एवं साध्वियां अध्ययन-अध्यापन करते थे। सबके आहार-पानी, निवास स्थान आदि की मर्यादा पूर्वक सुव्यवस्था थी।

यहाँ तीन मन्दिर हैं, प्रथम श्री महावीर स्वामी, 2. श्री आदिनाथ जिनालय, 3. श्री पार्श्वनाथ जिनालय। ये तीनों एक ही परकोटे में है। मध्य में श्री वीर जिनालय। इसमें तीन वेदियां हैं, 3 खन भीतर महावीर स्वामी स्वर्ण लेप युक्त सुखासन से विराजमान हैं। द्वितीय बिम्ब सफेद मकराने का है। दाहिनी ओर चतुर्विंशति, नन्दीश्वर और नव देवता प्रतिमाएँ हैं। नव मूर्तियां धातु की हैं। दूसरे प्रकोष्ठ में श्री पुष्पदंत स्वामी की चूना निर्मित विशालकाय पद्मासन है। तीसरे में धर्म देवी (कुष्माण्डिनी) है। बाह्य भाग में 2 प्रतिमा खड्गासन धातु की श्री वीर प्रभु की, 1 पार्श्वनाथ स्वामी तथा मध्य में सफेद पाषाण की बिना चिह्न की हैं। इसकी बगल में ''त्रिपदी नादर'' जिनालय है। इसमें खड्गासन श्री पार्श्वनाथ स्वामी विशालकाय हैं। दाहिनी ओर मन्दिर में श्री 1008 वासुपूज्य स्वामी हैं और बायीं ओर श्री पद्म प्रभु स्वामी की वेदी है जिसमें ताला बन्द है। इसका मेनगेट (मुख्य द्वार) बन्द रहता है, पुजारी खोलता नहीं। हमने खुलवाकर देखा तो इनके अलावा बगल में रखी एक आलमारी में जिनबिम्ब पाये जो सैंकड़ों की संख्या में चमचमा रहे हैं। सप्त धातु की बड़ी ही मनोज्ञ प्रतिमायें हैं, दैदीप्यमान जिन बिम्बों का दर्शन कर परमानन्द हुआ किन्तु दुर्व्यवस्था से महान खेद भी। परिक्रमा साइड में तीनों और लम्बे बराण्डे हैं। पीछे की ओर एक अति विशाल वृक्ष है, जो सतत् हराभरा एक ही साइज में रहता है, इसे 'धर्मकोरामरम' कहते हैं। इसकी हरी पत्ती को जलाने से तुरन्त जल जाती है जिससे इसमें तैलांश मालूम पड़ता है, कहते हैं इस वृक्ष

Scanned with OKEN Scanner

के नीचे आचार्य मल्लिसेन और आचार्य पुष्पसेन ध्यानाध्यन और ग्रन्थ लेखन करते थे। यह वृक्ष एक छोटे से चबूतरे पर है। इस चबूतरे की बगल में आचार्य श्री की प्रतिमा है जो जिनचन्द्र वामन मुनिवर के गुरु थे। ठीक वृक्ष के सामने दो पीठ हैं। इनमें भी प्रतिमा हैं जो श्री मल्लिसेन वामन और श्री पुष्पसेन वामन की कही जाती है। श्री मल्लिसेन वामन ने 'कोरैमरम' के नीचे 'मेरु मन्दिर पुराण' की रचना की थी। यह पुराण तामिल में पद्म पुराण के समान लोकप्रिय है। स्थान अत्यन्त पवित्र, शान्त और रम्य है।

इस प्रकार एक ही बराण्डे मं 6 मन्दिर हैं— 1. पद्मप्रभु स्वामी, 2. पार्श्वनाथ, 3. तिरुपदीनायर, 4. वासुपूज्य, 5. श्री धर्म देवी, 6. श्री त्रिलोकीनादर स्वामीयार सन्दी। धर्म देवी के मन्दिर का माप सूर्य के उत्तरायण और दक्षिणायन के माध्यम से बनाया है, इसमें 22-23 सितम्बर को रवि रश्मियां (सूर्य किरणें) प्रात: दो छोटे-छोटे झरोखों के द्वारा श्री देवीजी के मुखमण्डल पर पड़ती हैं, दाहिनी ओर पार्श्वनाथ का पुनः मन्दिर है। इसमें दोनों ओर 2-2 गुफायें हैं यह प्रतिमा $1^1/_2$ फुट की खड्गासन है। अंतिम गुफा के नीचे तलघर है जिसमें सैकड़ों साधु ध्यान कर सकते हैं इस समय चमगादड़ हैं। इसके आगे बराण्डा है, जिसमें 3-4 पाषाण मूर्तियां आड़ी तिरछी पड़ी हैं, कोई देखभाल नहीं है। यह मन्दिर पुरातत्व विभाग के नियंत्रण में है।

प्रारम्भ में गोपुर द्वार है। पुनः संगीत मण्डल है। इसमें 2000 लोग बैठ सकते हैं। इसे करीब 600 वर्ष पूर्व श्री पुष्पसेन आचार्य ने बनवाया था। यह तीन भागों में विभाजित है। प्रथम भाग की छत पर बने चित्र स्पष्ट हैं— 1 ओर पञ्चकल्याणकों का प्रदर्शन है, दूसरी ओर आदिनाथ जिनवर का जीवन चारित्र है। दूसरे और तीसरे भाग के चित्र खण्डित हो चुके हैं। कहते हैं विजयनगर राजा के समय में पुष्पसेन की शिष्या इरुगप्पन ने यह बनवाया था। यहां से 2 फर्लांग पर 5 समाधि स्थान भग्नावशेष मात्र हैं जो क्रमशः

1. कर्नाटक देवर 10 शताब्दी
2. चन्दन कीर्ति बामनर —1199 शताब्दी

Scanned with OKEN Scanner

3. अनन्तवीर्य बामनर—1012 शताब्दी
4. वामन मुनिवर—1300 शताब्दी 50 वर्ष काल
5. पुष्पसेनन्—1350 शताब्दी 50 वर्ष काल

9 मूर्तियां धातु की, 1 श्रुतस्कन्ध की हैं। यहां चीनी यात्री फाहियान आया था। 6 महीने यहां रहा, उसने अपनी यात्रा विवरण में लिखा है कि यहां 85 जिन मन्दिर थे, जिनमें सबसे बड़ा यह था। इसका जीर्णोद्धार कार्य प्रारम्भ कराया था। वर्तमान में स्थिति सुधार पर एवं प्रगति पर है।

पेरुनगर

यह वन्देवासी से 18 कि. मी. मुख्य सड़क पर है। यहां 1 घर है जिसमें श्रेयांसनाथ स्वामी का चैत्यालय है। किन्तु 18-20 मुदलियारों के घर हैं, जो हमारे दर्शनार्थ आये। इनके आचार-विचार नियम अपने अनुसार जानकर पूछा तो बताया "हम सब जैन थे"। यहां जैन मन्दिर था। जाकर देखा तो सुन्दर छाया में विशाल खण्डहर पड़ा है, एक चट्टान उठाकर देखी तो आधी प्रतिमा है। इसके पास वाले लोगों ने बतलाया यहां बहुत विशाल पद्मासन मूर्ति थी, जिसमें 4-5 वर्ष पूर्व दिल्ली सरकार ले गई। अभी भी जमीन के अन्दर बहुत-सी प्रतिमाएं निकल सकतीं हैं।

आरपाकम्— Aarpakkam अतिशय क्षेत्रः

यह अतिप्राचीन छोटा गांव है। यहां श्री आदिनाथ स्वामी का अत्यन्त विशाल जिनालय है। परन्तु पुजारी के अतिरिक्त कोई जैन परिवार नहीं है। उत्तर आरकोट जिले के जैन बन्धु यहां वार्षिक महोत्सव मनाते हैं। मूल नायक आदिश्वर प्रभु ठीक केशरिया जी के समान है, अतिशय भी उसी प्रकार का है। बच्चों का चौलकर्म (बाल उतरवाना) कर्णछेदन आदि यहां आकर करवाते हैं। नाना प्रकार की मनोकामना करते हैं। जैनेतर लोग भी मनौती करते हैं। प्रतिदिन भी लोग आते रहते हैं। मूलनायक के अतिरिक्त 1 प्रतिमा पाषाण की और है तथा 13 प्रतिमाएं धातु की हैं 5 मूर्तियां यक्ष-यक्षी की हैं तथा धर्मदेवी,

Scanned with OKEN Scanner

ब्रह्मदेवी, क्षेत्रपाल, । चतुर्विंशति तीर्थङ्कर प्रतिमा काले पाषाण की है। जिनालय के सामने उन्नत मानस्थम्भ है। बायीं ओर छत्रम् (धर्मशाला) है। परिक्रमा करीब 7-8 फीट चौड़ी है। पीछे वाटिका है। छत्रम् में एक बड़ा हॉल है जिसमें 1000-800 लगभग लोग बैठ सकते हैं। हमारे केशलोंच हुए जिसमें 10000 (10 हजार) रुपये की बोलियां हुई, यह रकम इस जिनालय के शिखर-गोपुर निर्माण में लगाई जायेगी, किन्तु अभी बहुत रकम की आवश्यकता है। यह जिनालय 2000 वर्ष से पूर्व का है। यहां रोग निवारण के हेतु भी लोग आते हैं। जलवायु बहुत अच्छी है। तमिल के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'Thirukalampakam' 'तिरुकलमाकम्' की रचना यहीं हुई थी। जैन मोनुमेन्ट Monouments भी हैं। ध्यान अध्ययन के योग्य शान्त, एकान्त, आकर्षक स्थान है। प्रभु मुद्रा प्रभावक और अघनाशक है दर्शन से सातिशय पुण्यार्जन करना चाहिये। यहां शिवरात्रि मेला विशेष संभ्रम से मनाया जाता है। आदिप्रभु निर्वाण महोत्सव भी प्रतिवर्ष सामूहिक रूप से मनाते हैं। यह गांव कांचीपुरम् से 12 कि.मी. है। बस का साधन है। हमारी प्रेरणा से इसका जीर्णोद्धार, शिखर निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ जो इस समय बहुत कुछ सुरक्षित हो गया है।

मागरल:

यह आरपाकम् के करीब $2^1/_2$ कि. मी. होगा। यहां एक बहुत छोटा-सा महावीर जिनालय है। यह भी अति प्राचीन 1500 वर्ष पूर्व का है। साहू जी ने जीर्णोद्धार कराया है। चारों ओर बहुत-सी जमीन पड़ी है जो इसी मन्दिर जी के अन्तर्गत है, सम्भवतः यह विशाल जिनालय टूट-फूट गया होगा। अब मात्र मध्य में कोठरीनुमा रह गया है। यहां भी कोई जैन परिवार नहीं है। आरपाकम् से पुजारी आकर प्रक्षाल करता है। **जैन दानी धर्मात्माओं की प्रतीक्षा में मानों यह अपने भग्नावशेषों को लिये है।**

Scanned with OKEN Scanner

चेय्यार सर्कल (नार्थ आर्काट जिला)

नावल— (Naval) 604409.

यह भी प्राचीन गांवों में एक है। छोटा है। जिन भवन साधारण छोटा सुन्दर है। यह विद्वानों का जन्मदाता प्रसिद्ध है। मूल नायक श्री 1008 वासुपूज्य स्वामी हैं। 21 मूर्तियां धातु की हैं। 2 कृष्ण पाषाण की प्रतिमायें हैं। ताड़पत्र ग्रन्थ हैं। शासन देवी देवता हैं। मन्दिर 4 प्रकोष्ठों में है। प्रथम मण्डप। द्वितीय में जिन प्रतिमायें, तीसरे में पूजा सामान और चौथे में मूल श्री वासुपूज्य स्वामी हैं। यहां गणधर प्रतिमा, पंच परमेष्ठी, नवदेवता, मेरु, चौबीसी, नन्दीश्वर प्रतिमा विशेष आकर्षक है। इस समय कोई विद्वान नहीं है। करीब 75 वर्ष पूर्व जीर्णोद्धार हुआ है. पुनः होना अनिवार्य है। व्यवस्था साधारण है। चंवर आदि रथोत्सव का सामान प्राचीन है, जिसके आधार पर यह 2500 वर्ष पूर्व का होना चाहिये। यह चेय्यार से 7 कि. मी. है।

वैल्लै— (Vellai)

यह चैय्यार से 8 कि.मी. है। यहां 11 परिवार दिगम्बर जैन नैनार हैं। जिनालय साधारण है। सब टूटफूट चुका है। नवीन बना रहे हैं। अभी वेदी तैयार नहीं हुई। मूल पार्श्वनाथ हैं किन्तु अब श्री आदिनाथ मंदिर को नवीन करेंगे। श्री पद्मावती देवी की भी प्रतिष्ठा होगी। धातु की मूर्तियां भी हैं। वैशाख में नव प्रतिष्ठा संभवतः हो चुकी है। सभी यहां सम्पन्न हैं। कुल 5 मूर्तियां हैं, जो टेबुल पर विराजमान थीं। छोटा-सा मन्दिर है। 2000-2500 वर्ष पुराना। वर्तमान में जीर्णोद्धार हो गया है फिर भी अभी बहुत सुधार की आवश्यकता है।

Scanned with OKEN Scanner

वेलियमल्लूर— Valiyamallur - 604407

यहां प्राचीन मन्दिर है। मूल नायक वर्धमान स्वामी हैं। बाहर भी एक पाषाण बिम्ब है। 14 प्रतिमाएं धातु की हैं, ये सभी काली हो रहीं हैं। धरणेन्द्र पद्मावती, दो यक्ष-यक्षी सप्त धातु की हैं। 2-3 ताड़पत्र ग्रंथ हैं। यहां 30 दिगम्बर जैन परिवार निवास करते हैं। मन्दिर पर शिखर नहीं है। चारों ओर से भी टूटा-फूटा पड़ा है। पूजा-पाठ की सही व्यवस्था नहीं है। पुजारी बेकार है। चेय्यार से 5 कि.मी. पूर्व की ओर है।

करन्दै-तिरुमूनिगिरि-अकलंक बस्ती भव्य दर्शनीय क्षेत्र:

यह क्षेत्र भव्य, दर्शनीय एवं विशेष महत्वपूर्ण, प्राचीन और आकर्षक अतिशय क्षेत्र है। कहते हैं अकलंक देव स्वामी का 6 महीने तक यहीं बौद्धों के साथ विवाद हुआ था। वह स्थान अभी भी है, पर कोई चिन्ह नहीं है। यहां अति उन्नत विशाल जिनालय है। इसके पीछे आधा फर्लांग से भी कम दूर छत्री है। जिसमें श्री अकलंक देव स्वामी की चरण पादुका हैं। छत्री खुली है। धूल मिट्टी से रक्षा की भी व्यवस्था नहीं है। यहां प्रतिवर्ष फागुन मास की अष्टाह्निका में 10 दिन तक ब्रह्म महोत्सव होता है। यहां एक घानी भी बनी है, जिसे बौद्धों ने अकलंक देव को परास्त कर पेरने के लिये तैयार किया था। अभी इसके चारों ओर कंटीले झाड़ झंकार हो रहे हैं। जिनालय बड़ा है। यह 2500 वर्ष तक का पुराना भी संभव है। किन्तु इससे भी पूर्व यहां एक छोटा सा आदिनाथ जिनालय जो अभी भी इसके दाहिनी ओर है, यह 2500 वर्ष प्राचीन कहा जाता है। इसके एक ही कम्पाउण्ड में 6 मन्दिर हैं और एक छत्री है। मध्य में श्री 1008 कुन्थुनाथ जिनालय है। इसके सामने ध्वज स्थम्भ है। गर्भग्रह में चूना के पीतवर्ण लेप युक्त पद्मासन करीब 5 फीट भगवान हैं। इनके सामने 1 अभिषेक बिम्ब, 21 धातु प्रतिमायें, 5 शासनदेवी देवता भित्ती पर 1 खड्गासन पार्श्व

प्रभु, 1 खड्गासन बाहुबली जी पाषाण निर्मित विशाल हैं। मन्दिर के अन्दर की दीवाल पर श्री कुन्थुनाथ स्वामी का जीवन चरित्र बड़े सुन्दर स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है। यह मन्दिर थोड़ी ऊंचाई 8-9 सीढ़ियां चढ़ने पर है। यहां से परिक्रमा की ओर 1 महावीर स्वामी जिनालय 25 सीढ़ियाँ चढ़कर है। इसमें भी 1 प्रतिमा सुवर्ण वर्ण चूना से निर्मित है और दूसरी कृष्ण पाषाण की अभिषेक बिम्ब है।

इसके पीछे ब्रह्मदेव मन्दिर है जो अपने ही ढंग का है, इसके और महावीर मन्दिर के मध्य विशाल बराण्डा युक्त मण्डप है जिसमें हजार जन धर्मोपदेश श्रवण कर सकते हैं।

चौथा मन्दिर श्री पार्श्वनाथ जिनालय है। पार्श्व प्रभु पाषाणमय लगभग 3 फीट ऊंचे हैं।

पांचवां श्री आदिश्वर जिनालय है जो सर्व प्राचीन है और अतिशयवान है। इसी जिनालय के पीछे 1 बहुत छोटी मूर्ति है, यह सब रचना 1 टेकड़ी पर ही है। यह मन्दिर भी गुहा मन्दिर जैसा था। कहते हैं इसी मूर्ति के प्रमाण से यह स्थान दिगम्बरियों को प्राप्त हुआ है। 1 बिम्ब नन्दीश्वर जी, 1 नव देवता भी है। यह सब पाषाण निर्मित हैं।

छटवां श्री कुष्माण्डिनी देवी जी का मन्दिर है। देवी बहुत मनोज्ञ और आकर्षक है। इसमें भी चूना से निर्मित एक विशाल जिन बिम्ब है और दूसरी मूर्ति अभिषेक बिम्ब है। इसके मुख्य द्वार के ऊपर दीवाल में श्री अकलंक देवाचार्य की प्रतिमा उत्कीर्ण है।

देवी जी के मन्दिर की बगल में 7 वीं 1 छत्रीनुमा 4-5 सीढ़ी चढ़कर मण्डप है। इसकी दीवाल में श्री 108 अकलंक देव स्वामी जी की अति प्राचीन प्रतिमा पीछी कमण्डल, पुस्तक, कुम्भकलश, माला सहित है। इस समय इसके केवल निशान मात्र दिखलाई पड़ते हैं। इसी के आधार पर इसकी बगल ही में दूसरी मूर्ति बनायी है, जो 60

Scanned with OKEN Scanner

वर्ष पूर्व की है। पाषाण पर चरण पादुका हैं। मन्दिर के अन्दर सीढ़ी के पास शिलालेख तामिल भाषा में शासन लिखित हैं। प्राचीन ग्रन्थ लिपि होने से पढ़ने में नहीं आया। विद्वानों को चेष्टा कर पढ़ना चाहिये। इस मन्दिर को तिरुगिरि—मुनिगिरि कहते हैं।

करैन्द और तिरुप्पणमूर गांव के मध्य में जो छत्री है, उसे अकलंक बस्ती कहते हैं और इसे श्री अकलंक देवाचार्य का समाधि स्थान बताते हैं। यह स्थान रमणीक तो है ही तपः पूत और शान्त भी है। यहां श्रावकों के 20 घर हैं सब कृषक हैं। जिनालय की दशा दयनीय है। चारों ओर से टूटा फूटा है, घास उगी है। बड़ी कठिनाई से दर्शन हुए। यह एक उत्तम क्षेत्र है, यदि दिगम्बर जैन समाज और तीर्थ क्षेत्र कमेटी के कार्यकर्त्ता इधर ध्यान दें तो यह तामिल का चम्पापुर क्षेत्र बनकर युग—युग तक जैन संस्कृति का जीवन्त प्रहरी बन सकता है। यहां शिखर से लेकर अन्य चारों ओर से जीर्णोद्धार होकर पंच कल्याणक प्रतिष्ठा व आचार्यों के पाद कमल विराजमान हो चुके है।

तिरुप्पणमूर— 604410 - Tirupanamoor.

यहां श्री पुष्पदंत जिनालय है। प्रथम ही विशाल मान स्थम्भ है। धातु 420 की मूर्तियां हैं। पाषाण की 3 मूर्तियां हैं। यह करन्दै से मात्र 2 फर्लांग ही है। श्री पुष्पदन्त स्वामी चूना निर्मित विशाल काय शुभ्रवर्ण हैं, इनके आजू बाजू 17 मूर्तियां धातु की हैं जो पूजा प्रक्षाल के अभाव में काली पड़ रहीं हैं। इनमें एक धरणेन्द्र का आकार बड़ा मनोज्ञ आकर्षक कलात्मक है। एक पीतल का छोटा सा मन्दिर 4 स्टोरी शिखर युक्त है। इसके चारों ओर प्रत्येक दिशा में 5-5 जिनबिम्ब हैं। मन्दिर के अन्दर चारों ओर 4 और मध्य में 1 प्रतिमा जी हैं। शिखर तो अति मनोरम है पर काला हो रहा है। पुनः इसके आगे प्रकोष्ठ में 3 चौबीसी धातु की हैं। तीसरे भाग में काले पाषाण के पुष्पदन्त स्वामी आजू बाजू 25 धातुबिम्ब हैं। गणधर मूर्ति इसगें विशेषाकार युक्त है दाहिनी ओर ब्रह्मयक्ष कुष्माडिनी देवी, धरणेन्द्र, पद्मावती, ज्वालामालिनी कृष्ण पाषाण की हैं। 5 धातु की यक्ष यक्षी हैं। पुनः इसके आगे मण्डप है,

Scanned with OKEN Scanner

बायीं ओर स्वाध्याय भवन एवं पुस्तकालय है। परिक्रमा की ओर क्षत्री में मुनि चरण पादुकाएं हैं। मन्दिर के मुख्य द्वार में घुसते ही दाहिनी ओर 24 तीर्थंकरों की चरण पादुका अभी प्रतिष्ठित हुई हैं। यह जिनालय लगभग 500-700 वर्ष प्राचीन कहा जाता है। यहां मौरेना पढ़े हुए शास्त्री हैं, जो शास्त्र भण्डारादि की देखभाल करते हैं। यदि करन्दै और इस गांव को मिलाकर जिनालयों की समुचित व्यवस्था हो जाय तो यह दिगम्बर जैन धर्म, जैन सिद्धान्त और जैन संस्कृति की अमर निशानी हो सकती है। अभी जाग्रति हो रही है।

वैणबाक्कम—

श्री महावीर जिनालयम्। यह जिनमन्दिर नवीन है, करीब 100 वर्ष प्राचीन होगा। किन्तु मूर्ति और भी प्राचीन प्रतीत होती है। 1 प्रतिमा चन्द्र प्रभु स्वामी की (काले और शुभ्र पाषाण) है। इनके अलावा श्री पार्श्व जिन प्रतिमा, नेमिनाथ जिन, पद्मावती और धरणेन्द्र भी मूल वेदी में विराजमान हैं। दूसरे प्रकोष्ट में बांयी ओर 7 जिनबिम्ब 2 यक्ष यक्षी हैं। 8-10 तांबे के यन्त्र हैं, इनमें एक कलिकुण्ड और 1 सिद्ध चक्र ये हिन्दी में हैं। मन्दिर के बायीं ओर परिक्रमा में श्री कुष्माण्डिनी (धर्म देवी) का मन्दिर है। यह मूर्ति काले पाषाण की सौम्य कलात्मक है। आगे मण्डप है। मन्दिर की व्यवस्था अच्छी है, प्रतिदिन अभिषेक पूजा होती है। हमने श्रावकों को भी पूजाभिषेक का नियम दिया है। साफ-सफाई भी रखते हैं। यहां 30 घर जैन बन्धुओं के हैं। सभी धर्मात्मा और भक्त हैं। यहां धर्मकर्त्ता श्री अर्क कीर्ति नैनार अच्छे विद्वान राजनैतिक नेता होकर भी विशेष धर्मप्रिय हैं। आपने प्रतिदिन जिनालय में जिनाभिषेक का नियम लिया है। इनके घर में चैत्यालय है, जिसमें सुवर्ण बिम्ब भी हैं। साधु भक्ति अपरिमित है। संघ सानिध्य में मण्डल विधान कराया जिसमें सभी श्रावक श्राविकाओं ने अभिषेक पूजा कर धर्मलाभ लिया। आगे इसी प्रकार करते रहेंगे यह भी नियम लिया। वर्तमान में यह अति सुन्दर व सुदृढ़ हो चुका है।

Scanned with OKEN Scanner

वन्दवासी सर्कल (नार्थ आर्काट जिला)

वन्दवासी—

यहां 1 जिनालय चैत्यालय समान है। मूलनायक सफेद पाषाण महावीर स्वामी हैं। 8 प्रतिमायें और हैं। अभी धर्मदेवी (अंबिका देवी) की नूतन प्रतिष्ठा भी महावीर जैन युवक संघ वन्दवासी द्वारा करायी गई है। नीचे धर्मशाला है। मन्दिर नवीन है। स्थिति अच्छी है। यहां श्रावकों के 150 घर हैं, दूर-दूर रहने से संगठन नहीं है। यह जिनालय मोटर स्टैण्ड के पास ही है। सुधार की अच्छी प्रगति है।

सल्लुकै—

यहां अति प्राचीन खण्डहर 1 मन्दिर छोटा-सा है, जिसमें प्राचीन 1 पद्मासन पाषाण मूर्ति है। जिसे महावीर स्वामी कहते हैं। इसी के पास 3-4 साल पूर्व जमीन खोदते समय कुछ प्रतिमाएं अष्ट धातु की निकली हैं जिन्हें सरकार ने अपने अधिकार में कर लिया है। यहां कोई श्रावक नहीं है। ये प्रतिमायें तहसील दफ्तर में पेटी में सील्ड कर रक्खी हैं। हमारे दर्शनार्थ मंगाई, इनमें 1 चौबीसी, 3 खड्गासन अन्य मूर्तियाँ हैं। 3 पद्मासन और 3 शासन देव देवियों की हैं। सर्व श्रेष्ठ खड्गासन बिम्ब सम्भ्वतः नेमिनाथ हों अत्यन्त प्रभावक हैं। सूचनानुसार आस-पस के श्रावक एकत्रित हुए। पांडिचेरी से भी सेठ लोग आये। पञ्चामृत अभिषेक व पूजन हुआ। बोलियों में 5000) रु. आये। जीर्णोद्धार का कार्य कराने का आश्वास दिया। सरकार का कहना है आप प्रतिमाओं की सुरक्षार्थ यदि मन्दिर बनायें तो हम मूर्तियां दे देंगे अन्यथा आर्टिकल डिर्पामेन्ट में भेज देंगे। अतः शीघ्रातिशीघ्र यहां मन्दिर निर्माण होना चाहिए। यहां 7-8 घर मुदलियारों के हैं। जिनके आचार-विचार जैनों के समान हैं, भक्ति और भावना है कि यहां अवश्य जिनालय बनें। सब जैन धर्म स्वीकार करने को

Scanned with OKEN Scanner

तैयार हैं। यह वन्दवासी से 6 कि. मी. है। इस समय लघु मन्दिर हो गया है।

विरुदूर—

यह वन्दवासी से 2 कि.मी. पूर्व में है। बस जाती है। यह प्राचीन बस्ती है। यहां 100 घर जैनों के हैं। 1 जिनालय श्री आदिनाथ भगवान का है। यह आरकोट नवाब के जमाने का है यहां देवीजी का पृथक मन्दिर है। जिनालय में 22 मूर्तियां धातु की हैं। मूलनायक श्री आदिनाथ यक्ष-यक्षी सहित हैं। पहले महावीर स्वामी थे। जो इस समय नित्यपूजा के स्थान पर हैं। (तमिल प्रान्त में प्रतिदिन 1 ही भगवान की पूजा की प्रथा है वह भी पुजारी द्वारा)।

मुख्य द्वार में प्रवेश करते ही दायीं ओर शासन देवी मन्दिर है। इसमें 3 प्राचीन पाषाण मूर्तियां है शेष 8-10 अन्य धातु की। 2 यन्त्र हैं। 1 मानस्थम्भ है, जिसमें 24 मूर्तियां हैं। चारों और 6-6 पद्मासन। यह अपने ढंग का निराला है। 1 बाहुबलि स्वामी, 1 गणधर स्वामी तथा मेरु भी है धातु का। जिनालय की दशा अच्छी नहीं है। व्यवस्था भी ठीक नहीं है। मन्दिर करीब हजार वर्ष पुराना है। यहां विमलनाथ शास्त्री है। उसी के निरीक्षण में पाठशाला प्रारम्भ कराई है। बच्चे लाभ ले रहे हैं। कुछ लोगों को नित्य अभिषेक का नियम भी दिया है। धर्मोपदेश अत्यावश्क है। पर्याप्त उन्नत हो गया है।

नेल्लियानगुलम. — Nelliangulam-604405 (नेमिनाथ जिनालयम्)

यह वन्दवासी से दक्षिण में करीब 25 कि. मी. है। मूलनायक श्री नेमिनाथ तीर्थङ्कर के अतिरिक्त 2 अन्य मूर्तियां हैं। 6 मूर्तियां शासन देव-देवियों की हैं। 1 नेमिनाथ स्वामी खड्गासन चांदी के, 1 पद्मासन रजत के, शेष 40 मूर्तियां जिन प्रतिमायें अष्टधातु की हैं। बाहर मण्डप है, जिसकी दीवारों पर सुन्दर रूप में स्पष्ट श्री नेमिनाथ स्वामी का भील की पर्याय से लेकर पूरा चरित्र चित्रित है। मुख्य द्वार में प्रवेश करते ही दायीं ओर भी लम्बे कमरे में लम्बी वेदी है, जिसमें 24 तीर्थङ्कर भगवान खड्गासन एक समान विराजमान हैं, यह चौबीसी अद्वितीय

Scanned with OKEN Scanner

है मध्य में श्री 1008 पार्श्व प्रभु खड्गासनमय यक्ष-यक्षी हैं। धातु की दो प्रतिमा और हैं। यह 2000 वर्ष पूर्व प्राचीन है। जिनालय की स्थिति अच्छी है। पाठशाला प्रारम्भ करा दी है। आबाल वृद्ध जागृत हैं। वृषभनाथन् विशेष धर्मानुरागी हैं। 1 ऋषिमण्डल यंत्र चांदी का है। अष्टमंगल द्रव्य छत्र, चमर आदि भी हैं। सभी जैन बन्धुभक्त धर्मात्मा हैं। श्री समंतभद्र शास्त्री यहीं के थे जो पोन्नूरमलै में रहते थे, अब समंतभद्र शास्त्री का स्वर्गवास हो जाने से सुधार की गति कुछ धीमी हो गई है।

विल्लीवनम्— (Villivanam - 604408)

महावीर स्वामी जिनालय है। साहू जी ने बारह हजार पांच सौ रुपया दिया था उससे कुछ जीर्णोद्धार हुआ है। अभी बहुत कुछ सुधार आवश्यक है। मूल नायक वीर प्रभु के अलावा श्री आदिनाथ स्वामी, श्री नन्दीश्वर आदि हैं। 20 प्रतिमायें धातु की हैं। यहां के बच्चों में अधिक उत्साह पाया। प्रतिदिन दुग्धाभिषेक और सायंकाल अष्टविध मंगल द्रव्यार्चना आरती होती है। शिखर का नव-निर्माण हो चुका है, चारों ओर ज्यों का त्यों पड़ा है। यहां श्रावकों के 20-25 घर हैं। वन्दवासी से 15 कि. मी. है पर बस नहीं जाती है।

नल्लूर— (Nallur—604406)

वृषभस्वामी जिनालय है। 40 जिनबिम्ब हैं। 6 शासन देव-देवियाँ हैं। 2 आदिनाथ स्वामी कृष्णवर्ण बिम्ब हैं। ब्रह्मयक्ष और कुष्माण्डिनी यक्षी विशाल हैं। यहां 50-60 घर हैं। मन्दिर विशाल है। मन्दिर जी के दाहिनी ओर समवशरण रचना है, जिसमें 5 कल्याणकों का प्रदर्शन दिखाया है। 25 तीर्थंकर नवीन मकराने के हैं। प्रतिदिन पूजा अभिषेक न होने से जाले लगे हैं। इसी की बगल में नवग्रह मन्दिर है। नव मूर्तियां तद् तद् रंग के पाषाण से बनायी हैं। मुख्य द्वार के बायीं ओर पाण्डुक शिला है। यह करीब 2000 वर्ष प्राचीन है। 1 विशाल देशी पाषाण का मानस्थम्भ है जिसमें 24 तीर्थंकर हैं। जिनालय की दशा साधारण है परन्तु परिक्रमा कच्ची है, घास फूंस उगी है। व्यवस्था ठीक नहीं है। यह गांव वन्दवासी से दक्षिण पूर्व 16 कि.मी. है, बस जाती

Scanned with OKEN Scanner

है, भजन मण्डली है, 1 माह तक प्रतिदिन 365 दीप जलाये जाते हैं। अष्टविध दीपार्चना प्रतिदिन करते हैं। अभी यहां के श्रावकों में कुछ जाग्रति होने से जीर्णोद्धार हुआ है तथा हो रहा है।

अनन्तपुरम्—गुफा मन्दिर—

यह गांव से 2 कि.मी. एकान्त जंगल में है। छोटी सी पहाड़ी है। मार्ग प्रशस्त नहीं है। पहाड़ी पर एक चट्टान में जिसके नीचे गुफा है। इस गुफा द्वार के ऊपर श्री 1008 पार्श्वनाथ स्वामी पद्मासन, 1 नेमिनाथ तीर्थंकर, 1 अनन्त नाथ स्वामी ये तीन प्रतिमायें बड़े उत्तम ढ़ंग से उत्कीर्ण हैं। अगल बगल में कुष्माण्डिनी देवी (धर्म देवी) की मूर्तियां हैं। सभी प्रतिमायें भव्य सर्वाङ्ग सुन्दर हैं। इसी चट्टान के बगल में दूसरी चट्टान पर श्री पार्श्वनाथ खड्गासन हैं। इसके नीचे भी गुफा है। इनमें साधुओं के निवास के भग्नावशेष हैं। एक शिलालेख भी है, जो पढ़ने में नहीं आता। यहां पाण्डवों ने तप किया था यह कहावत है। 8000 साधुओं ने यहां निवास किया था । आस पास छोटी-छोटी कई पहाड़ियां हैं। प्रतिवर्ष गांव के श्रावक आकर यहां पूजा पाठ करते हैं। स्थान अत्यन्त पवित्र और प्राचीन है जो श्रमण संस्कृति के मर्म का द्योतक है।

एरंबलूर—

यहां का जिनालय पूर्णतः ध्वस्त हो चुका है। मात्र जमीन है। 1 प्रतिमा श्री महावीर स्वामी की है। इसे 4-6 पत्थर लगाकर चौड़े में विराजमान कर रक्खा है। 4-5 श्रावकों के घर हैं, जो यहीं पूजा भक्ति कर लेते हैं। एक छोटी सी गुडी होना आवश्यक है। यह भी 2500 वर्ष पूर्व का है। गांव वालों ने मन्दिर बनवाने का आश्वासन तो दिया है परन्तु रुपयों का प्रश्न है। भक्तजनों को ध्यान देना चाहिये। हमने भी अपने मारवाड़ी दिगम्बर बन्धुओं से सहायता देकर लघु मन्दिर निर्माण प्रारम्भ कराया था संभवतया बन गया होगा।

मुदलुर— (Muddaloor)

यह वंदवासी से 5 कि.मी. दक्षिण में है। यहां बहुत पुराना जिनालय है। यह केवल जैनों का ही गांव है। अन्य कोई जाति ही नहीं है।

Scanned with OKEN Scanner

यह 5 गांवों का एक मन्दिर है। यह कोल्हापुर मठाधिपति का जन्म स्थान है। 3 मठाधिपति यहीं के हो चुके हैं। इस समय 50 घर जैनों के हैं। यहां श्री 1008 आदिनाथ जिनालय है। पद्मासन प्रतिमा $3^1/_2$ फुट उत्तुंग है पाषाण की। अन्य 5 प्रतिमायें हैं एवं 30 प्रतिमायें धातु की हैं। 11 प्रतमायें धातु की शासन देवी देवताओं की हैं। 1 विशाल मानस्थम्भ है जिसमें चारों ओर क्रमशः वृषभ नाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर भगवान हैं। अत्यन्त जीर्ण शीर्ण मन्दिर हो रहा है। सभी जन कृषक हैं। जीर्णोद्धार आवश्यक है।

एलंगाडु - अतिशय क्षेत्र—

श्री नेमिनाथ जिनबिम्ब अतिशयवान हैं। यह खड्गासन समवशरण रूप पीठ युक्त रमणीक और चमत्कारी है। मूलनायक श्री आदिनाथ स्वामी हैं। नेमीश्वर प्रभु के बारे में कहा जाता है कि यह प्रतिमा मैलापुर जिनालय में विराजमान थी। अचानक बाढ़ आ जाने से इन्हें बैलगाड़ी से श्रावक जन दूसरी जगह ले जा रहे थे। मार्ग में इस गाँव के आते ही गाड़ी स्वतः ही रुक गई। उस समय बहुत छोटा सा गोपुर था। इनके बाद ही यह विशाल मन्दिर बना है। भगवान तो ध्यातव्य हैं हीं किन्तु इसका प्रभामण्डल तो देखते ही बनता है। इसकी ऊंचाई 7 फीट, चौड़ाई 4 फीट है, जगमगा रहा है। जिन प्रतिमा का रूप लावण्य दर्शनीय है। यह पञ्च धातु की है। किट्टकालिमा रहित तपाये हुए सुवर्ण के समान कान्तिमान है।

4 मूर्तियां पाषाण की हैं। एवं 20 धातु की मूर्तियां हैं। जिनालय के तीन प्रकोष्ठ हैं। यहां 25 घर दिगम्बर जैन के हैं। भक्ति श्रद्धा और धर्मोत्साह है। साधारण स्थिति है। जीर्णोद्धार परमावश्यक है। चन्दा की जरूरत है। पानी का भी अभाव है। इस साल वर्षा अच्छी हो गई है।

पोन्नूर गांव— (Ponnur 604414)

यह प्राचीन नगर है। यहां 80 परिवार नैनारों के हैं। यहां श्री 1008 आदिनाथ भगवान का जिनालय है। यह एक छोटी सी टेकड़ी पर स्थित

Scanned with OKEN Scanner

है। इसे कनकगिरी आदिनाथ स्वामी (कनकमलैनादर) कहते हैं। इस गांव कों कनकपुर, (हेमपुर) पोन्नूर, स्वर्णपुर नामों से पुकारते हैं। इसे कुन्द-कुन्द स्वामी की तपोभूमि कहा जाता है। पोन्नूरमलै भी यहां से 1-1½ कि.मी. है। 20 सीढ़ियां चढ़कर मन्दिर में पहुंचते हैं। मन्दिर के सामने मानस्थम्भ है। बाहर शासन देवता मन्दिर है। उसमें 5 मूर्तियां धातु की हैं। मन्दिर में 5 मूर्तियां पाषाण की एवं 50 मूर्तियां धातु की हैं। बगल में विशाल सभामण्डप है, जिसमें 4-5 मूर्तियां खण्डित हैं। परिक्रमा के दाहिने ओर चरण पादुका हैं, नवीन स्थापित हैं। यहां एक पाठशाला भी चलती है 40-50 विद्यार्थी अच्छी तरह से पढ़ते हैं। भक्तामर स्तोत्र सुप्रभात स्तोत्र, मंगलाष्टक आदि एक दम शुद्ध, स्पष्ट मुख पाठ बोलते हैं। मन्दिर भी साफ सुथरा है। लाइट का अच्छा प्रबन्ध है। यह वन्दवासी से करीब 12 कि.मी. है। बस जाती है। पूज्य कुन्द-कुन्द स्वामी की मूर्ति भी विराजमान हो चुकी है।

बंगारम— (Vangaram-604408)

यह वन्दवासी से 6 कि.मी. पर है। रोड से आधा किलोमीटर अन्दर जाना पड़ता है। 1 जिनालय है। 30 श्रावकों के घर हैं। यह पोन्नूरमलै से केवल 3 कि.मी. है। यहां का जिनालय अति प्राचीन है। गोपुर जीर्ण शीर्ण हो चुका है। मूलनायक श्री 1008 आदिनाथ स्वामी जी हैं। 1 नव देवता 1 चतुर्विंशंति तीर्थङ्कर हैं, ये तीनों पाषाण निर्मित हैं, श्री धर्मदेवी एवं यक्ष भी पाषाण के हैं। 19 प्रतिमायें सप्त धातु की हैं। 5 शासन देवी-देवताओं की सप्त धातु की हैं। यहां श्रावक विशेष श्रद्धालु एवं भक्त हैं। जीर्णोद्धार के लिये प्रेरणा दी, करीब 10 हजार का चन्दा भी करा दिया गया है। अभी 2 समाचार मिला है, गोपुर पूरा तोड़ दिया और पुनः निर्माण कार्य चालू हो गया है। (16 जनवरी के सेलम पधारने पर श्री निर्मलकुमार जी को हमने बंगारम जाने का निर्देश दिया था संभवतः वे गये होंगे) अन्य श्रीमन्त भक्तों को भी ध्यान देना चाहिये। अभी भी जीर्णोद्धार की महत्ती आवश्यकता है।

सा.मंगलम्—

यह वन्दवासी से 4 कि.मी. है। यहां 60 श्रावक परिवार हैं। 1

जिनालय श्री 1008 चन्द्रप्रभु स्वामी का है। यह करीब 1500 वर्ष पूर्व का सुविशाल और समुन्नत है। सामने 33 फीट ऊंचा मानस्थम्भ है, जो एक ही पाषाण से निर्मित है। इसमें 5 पीठिकायें हैं। चारों ओर चार-चार तीर्थंकर बिम्ब हैं। अन्त में चोटी पर 4 खड्गासन प्रतिमा। इस प्रकार 24 बिम्ब हैं। चारों कोनों पर घण्टी लटक रहीं हैं। मन्दिर की दशा शोचनीय है। यद्यपि अभी जीर्णोद्धार हुआ है, इसमें नवीन श्री चन्दाप्रभु स्वामी सफेद पाषाण की कोल्हापुर भट्टारक जी द्वारा प्रतिष्ठित करायी है। सब 44 प्रतिमायें हैं। इनमें 3 पाषाण की, शेष सप्त धातु मय हैं। 1 श्रुत स्कंध, 1 बाहुबली स्वामी हैं। 9 शासन देव देवियां हैं। 1 सरस्वती देवी पाषाण की अजब निराली हैं। 1 धर्म देवी, 1 ब्रह्मदेव पाषणमय हैं। श्रावकों की भक्ति, रुचि, श्रद्धा एकदम नहीं है। दर्शन भी करने नहीं आते। चारों ओर मन्दिर टूट फूट चुका है। सांय अष्टमंगल द्रव्यार्चना होती है। अन्दर टाइल है। दो प्रकोष्ठों में खम्भे संभवतः किसी वैशणव मन्दिर के लाकर लगा दिये हैं, जो शोभित नहीं हैं। मध्य में अभिषेक पीठ है। जीर्णोद्धाराधीन है।

गूडलूक— Gudaloor- 604406. प्राचीन—

यह उत्तर आरकोट जिले में है। वन्दवासी से दक्षिण की ओर 25 कि.मी. पर है। वन्दवासी—टिण्डिवनम् रोड पर है।

यहां श्री 1008 कुन्थुनाथ तीर्थङ्कर मन्दिर है। 1 विशाल सुन्दर मानस्थम्भ है। दाहिनी ओर विशाल सभा मण्डप और उसी की बगल में श्री पद्मावती देवी की प्रतिमा अत्याकर्षक है। अन्य 30 जिन बिम्ब हैं, धातु के 8 यक्ष-यक्षी हैं। 1 पार्श्वनाथ स्वामी मूंगिया वर्ण के अति मनोज्ञ हैं। 2 सफेद मकराने की चरणपादुका श्री एलाचार्य कुन्द-कुन्द स्वामी की हैं, यहां का गोपुर शिखर छोटा होते हुए भी विशेष आकर्षक है, कला निराली है। चारों ओर यक्ष-यक्षी सहित जिन बिम्ब हैं। जिनालय के सामने बड़ा लम्बा बराण्डा है जिसके खम्बों पर एक ओर श्री बाहुबली स्वामी की बहुत मनोज्ञ आकर्षक प्रतिमा है, दूसरी ओर यक्ष महाराज हैं। जिनालय के स्थम्भों में भी जिन बिम्ब हैं जो टूटे फूटे ढेर पड़े हैं। मन्दिर की हालत खराब शोचनीय है। यहां 30 घर हैं। अधिकांश श्रावक श्रद्धालु, गुरुभक्त और जिन भक्त हैं। यहां का

Scanned with OKEN Scanner

रथोत्सव देखा। भगवान का श्री विहार बड़े ठाठ वाठ से करते हैं। अनोखी सजावट करते हैं। यह विद्वानों की नगरी है। हजारों वर्ष प्राचीन है। अभी 300 वर्ष पूर्व पुनर्निमित जिनालय है। कोल्हापुर भट्टारक श्री लक्ष्मीसेन पट्टाचार्य स्वामी जी की जन्म भूमि है। यहां भी पाठशाला प्रारम्भ करायी और रात्रिस्वाध्याय की प्रेरणा दी। वर्तमान में यह पर्याप्त उन्नत रूप में चल रही है।

तेल्लार— Tellar (उत्तर आर्काट जिला)

गुडलूर से टिण्डीवनम् रोड पर ही 2 कि.मी. पर यह अति प्राचीन गांव है। यहां एक मन्दिर है, जो मेन रोड से 15-20 कदम चलकर ही है। मूलनायक श्री 1008 वर्द्धमान स्वामी हैं काले पाषाण के सुखासन। 31 मूर्तियां अन्य हैं। 3 शासन देवता, 1 श्रुत स्कंध, 1 गणधर, 1 बाहुबलि स्वामी, 1 नव देवता, 1 मेरु आदि हैं। मन्दिर पूरा ध्वस्त हो चुका था। पुनः अभी शिखर बना रहे हैं, बाहर से चारों ओर मैदान ही है, अति लागत और बनावट की आवश्यकता है। यहाँ मात्र 10 ही परिवार हैं, जो धर्मात्मा और विवेकी हैं, पर पैसा से भरे पूरे नहीं है। धनाढ्य दानियों को इस ओर ध्यान देना चाहिये। गोपुर बन चुका है। संभवतः मार्च 1984 तक प्रतिष्ठा होने की आशा थी अब यहां भी पंचकल्याणक होकर जिनालय सुरक्षित हो गया है। फिर भी कार्य अभी भी होना है।

अगरकोरकोटै— Agarakorakottai—604406

यह उत्तर आरकोट में एक छोटा-सा गांव है। यहां मात्र 12 दिगम्बर जैन श्रावकों के घर हैं। यहाँ श्री 1008 पार्श्वनाथ स्वामी का जिनालय है। 3 प्रतिमाएं पाषाण की एवं 20 जिन बिम्ब धातु की हैं। अभी जीर्णोद्धार हो रहा था, आकर्षक मन्दिर है। दशा साधारण है। यह वन्दवासी से दक्षिण 20 कि. मी. है। अब जीर्णोद्धार का कार्यपूर्ण होकर प्रतिष्ठा हो गयी है।

पेरियकोरेकोटै—तपोभूमि—अतिशय क्षेत्र—

यहां 2000 वर्ष प्राचीन श्री 1008 आदिनाथ जिनालय है। प्रतिमा पाषाण निर्मित चमत्कारी है। 32 अष्टधातु की जीवन्त मनोहारी प्रतिमाएं

Scanned with OKEN Scanner

हैं। 1 सुमेरु-धातु का, 9 देवी-देवता हैं। 3 पाषाण के बिम्ब हैं। तीन चौबीसी विशेष आकर्षक हैं। एक ही धातु पीठ पर 72 मूर्तियां बनाई गई हैं। अभी जिनालय का जीर्णोद्धार हुआ है। अतः कुछ सन्तोष जनक है। यहां 60 घर नैनार-जैन श्रावकों के हैं, जो मन्दिर के चारों ओर स्थित हैं। सभी धर्मात्मा और विद्वान-विवेकशील हैं। सायंकाल शास्त्र सभा भी होती है। हमारी प्रेरणा से बच्चों की पाठशाला भी प्रारम्भ की है। समस्त तामिलनाडू में जहां तक हमारा विहार हुआ है, इसी गांव में रात्रि को स्वाध्याय का क्रम पाया, अन्यत्र नहीं। वृषभकुमार पुरोहित भी यहीं का विद्वान है। गांव से 1 फर्लांग पर एक स्वच्छ, नाति विस्तृत चट्टान पर चरण पादुका हैं। कहा जाता है—सैकड़ों वर्ष पूर्व यहां किन्हीं मुनिराज ने विधिवत् सल्लेखना धारणाकर समाधि मरण किया था, चट्टान की बगल में पीछी-कमण्डल सहित मूर्ति भी उत्कीर्ण है। चट्टान पर चढ़ने को 10-15 सीढ़ियां हैं। पहले यहां निर्जन जंगल था, अभी चारों ओर बंजारों की झोंपड़ियाँ हो गई हैं। चट्टान बीच में मेरु सरीखी है, व्यवस्था और देखभाल न होने से चारों ओर मल-मूत्र की गन्दगी हो रही थी। चारों ओर परकोटा होना परम आवश्यक है। यहाँ के लोगों को प्रेरणा भी दी है। पैसे का प्रश्न सर्वत्र है। ग्रामीण निवासी जैन कहते हैं हम लोग वर्षा न होने पर यहाँ चरणों का पञ्चामृताभिषेक-पूजन करते हैं तो अवश्य वर्षा होती है, परन्तु 2-3 साल से कम हो गई। इसका कारण अशुद्धि ही हो सकती है।

यहाँ पाठशाला चालू करायी और सफाई के लिये भी प्रेरणा दी। मन्दिर में तीन चौबीसी की प्रतिमा विशेष आकर्षक है।

अरुगाऊर—

यह एक छोटा-सा गाँव है। इसके पास जंगम्बूंडी गाँव है। 1 मन्दिर आदिनाथ स्वामी का है। 11 प्रतिमा धातु की, 3 पाषाण की हैं। मन्दिर छोटा किन्तु सुन्दर आकार में है। परन्तु पूर्ण जीर्ण हो चुका है। मन्दिर में चारों ओर कूड़ा है, कोई व्यवस्था नहीं है। 3 श्रावकों के घर हैं। 1 चौबीसी प्रतिमा आकर्षक है। 4-6 शास्त्र भी हैं। दशा शोचनीय है।

मञ्जपट्टु— Manjapattu-604501—

अतिशय क्षेत्र के सदृश गाँव में 1 मन्दिर है जो लगभग 200 वर्ष प्राचीन होगा किन्तु यह समय सम्भवत: जीर्णोद्धार का हो सकता है। प्रतिमाओं को देखने से, 1500 वर्ष पूर्व का होना चाहिये, ऐसा प्रतीत होता है। इसमें 59 धातु की मूर्तियाँ हैं। मूलनायक श्री मल्लिनाथ स्वामी कृष्ण पाषाण निर्मित हैं। ताड़पत्र ग्रन्थ 50-60 हैं। यहाँ 40 घर दिगम्बर जैन समाज के हैं। सभी भक्त एवं निष्ठावान हैं। परन्तु मन्दिर की दशा अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण है। जीर्णोद्धार अत्यावश्यक है।

यहाँ से लगभग $1^1/_2$ कि.मी. पर 'सीमंगलम्' गांव के किनारे पहाड़ी है। इस पर एक छोटी-रम्य गुफा है। गुफाद्वार के ऊपर चट्टान पर 1 महावीर स्वामी, 1 पार्श्वनाथ स्वामी, 1 बाहुबली स्वामी की, मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं, जो वर्षा हवा सब सहते हुए भी नवीन प्रतीत होती हैं। पहाड़ी पर जाने को सीढ़ियों का मार्ग है, जो टूट-फूट चुका है। कहते हैं इस गुफा में 7-8 फीट पद्मासन जिन प्रतिमा भी थीं, जिसे ग्वालों ने खण्डित कर दिया क्योंकि गुफाद्वार खुला है। तदनन्तर मद्रास सरकार ने म्युजियम में स्थापित करा दी। पहाड़ की सुरक्षा भी आर्टिकल डिपार्टमेन्ट के हाथ में है। पहाड़ी मात्र 20 फी. ऊचाई पर है। नीचे शिलालेख भी है परन्तु पढ़ने में नहीं आता। यह 1500 वर्ष प्राचीन कहा जाता है। पहाड़ की चढ़ाई के प्रारम्भ में शासन देव देवियों की मूर्तियाँ भी हैं जिन्हें गांव के लोग पूजते हैं। यह गाँव वन्दवासी से दक्षिण की ओर 25 कि. मी. पर है। यह देसूर से 3 कि. मी. है।

तेन्नात्तूर—

मञ्जापट्टु से 1 कि. मी. है। 1 मंदिर है। जीर्णोद्धार होने से सभी प्रतिमाएं एक कोठरी में विराजमान थीं। मूलनायक श्री महावीर स्वामी हैं। 3 प्रतिमायें पाषाण की एवं 27 धातु की हैं। 7 शासन देवी देवताओं की हैं। 1 तीन चौबीसी है। यहां 30 घर दिगम्बर जैन-नैनारों के हैं। प्रधान धर्मकर्त्ता अप्पाण्डैराज हैं। जो सम्पन्न और धर्मात्मा भी हैं। अभी वेदी शुद्धि होकर भगवान विराजमान हो चुके हैं।

Scanned with OKEN Scanner

इसा कोलत्तूर—

तेन्नातूर से 1 कि. मी. पर है। 1 मन्दिर है मूलनायक भगवान श्री महावीर स्वामी हैं। यहां धर्म देवी का चमत्कार विशेष है। 4-5 फीट की पाषाण मूर्ति है। 20 प्रतिमायें धातु की और 5 पाषाण की हैं। सभी सुन्दर और आकर्षक हैं। परिक्रमा साइड में 3 मूर्तियां दिवाल में उकेरी हुई हैं। 1 नव देवता की दीवाल में चिपका कर विराजमान है। यहां मनौती के रूप में धर्म देवी की मान्यता करते हैं। नैनारों के घर इस समय मात्र 6 ही हैं। कहते हैं यहां कई अच्छे विद्वान हुए हैं। मन्दिर प्राचीन है दशा सामान्य है। गिरने जैसा तो मंदिर नहीं परन्तु तो भी सुधार चाहता है। कुआ और फुलवाड़ी है।

सोलै अरुगाउर—Solai Arugavoor—604502—

यहां श्री आदि भट्टारक (श्री 1008 ऋषभ देव जी) मंदिर है। यह प्रतिमा पद्मासन है। धर्मदेवी जी काले पाषाण की सुन्दर हैं। सरस्वती, पद्मावती आदि 5 मूर्तियां धातु की, 3 पाषाण की हैं। 27 मूर्तियां अष्टधातु की तीर्थंकर प्रभु की हैं, 1 गणधर भगवान, 1 श्रुत स्कंध भी है। ये सभी बिम्ब स्वच्छ, सुन्दर एवं आकर्षक हैं संभवत: संघ आने की सूचना पाकर सफाई या मञ्जन किया गया होगा। क्योंकि यहां प्राय: सभी मंदिरों में अभिषेक पूजा ही नहीं होता। हां एक मूर्ति का अवश्य करते हैं बस। यहां 35 घर श्रावकों के हैं। मंदिर की दशा साधारण है। समाज जाग्रत नहीं है। उपदेश एवं प्रेरणा अत्यावश्यक है। यह वन्दवासी से करीब 30 कि.मी. है।

देसूर—

सौले अरुगाउर से 4 कि.मी. पर श्री आदिनाथ जिनालय है। 8 परिवार जैनों के निवास करते हैं। 15 धातु की प्रतिमायें सुमनोज्ञ हैं। धर्मचक्र अति सुन्दर है। 4-5 शासन देवी देवता हैं। लाइट डेकोरेशन सुन्दर है। जिनालय की दशा सामान्य है परन्तु श्रावक श्राविका दर्शनार्थ ही नहीं आते। सभी को दर्शन और सायं दीपार्चन का व्रत दिया। सर्वत्र उपदेश और साधु विहार परमावश्यक है। कईयों ने रात्रि भोजन त्याग किया।

Scanned with OKEN Scanner

नर कोइल—अतिशय क्षेत्र—आदिनाथ जिनालय—

गांव से नातिदूर छोटी सी पहाडी पर 1 मंदिर जो पूरा ढह चुका है, मात्र भग्नावशेष है। इससे कुछ नीचे एक कोठरी बनाकर सभी मूर्तियों को लाकर विराजमान किया है।

रमा रानी की ओर से 25 हजार करीब रुपये दिये गये हैं जिससे इसी कोठरी की बगल में छोटा सा मंदिर तैयार हुआ है। पैसे की कमी से यह कुछ अधूरा है। कुछ अव्यवस्थित पड़ा रहने से खराब हो गया है। यहां के श्रावक धर्मप्रेमी नहीं हैं। यह पहाड़ी 20-25 फीट ऊंची है। मूल प्रतिमा वृषभदेव स्वामी की है। 12 प्रतिमायें धातु की हैं, 5 शासन देवी देवताओं की हैं। प्रतिमायें शिल्ड हुए के समान विराजमान हैं, न कोई पूजा का प्रबन्ध है न आरती का। स्थान सुरम्य है, सायंकाल पहाड़ी की छटा देखते ही बनती है। मंदिर के पीछे विशाल चट्टान है जिसमें श्री बाहुबलि स्वामी की मूर्ति खुदी हुई है। यह अति सुन्दर है। चारों ओर कोट जैसा है, संभवतः यह राज नगरी रही होगी। इस समय केवल 4-5 ही घर हैं जो सम्पन्न होकर भी नहीं के बराबर हैं। पहाड़ी से उतरते ही तलहटी में एक गोल सुन्दर नाति उच्च चट्टान है जिसके चारों ओर क्रमशः महावीर स्वामी, आदिनाथ प्रभु, पार्श्वनाथ भगवान और चन्द्रप्रभु जी की सुमनोज्ञ, भव्य, दर्शनीय, नयाभिराम, पद्मासन मूर्तियाँ उत्कीर्ण है। ये अष्ट प्रातिहार्य और यक्ष-यक्षी सहित हैं जो साक्षात् गंधकुटी का स्मरण दिलाती हैं। सभवतः मानस्तम्भ के रूप में इसे तैयार किया होगा। यह कई हजार वर्षों का पुरातन है परन्तु इस समय अत्यन्त शोचनीय दशा में है। **हमारी सद् प्रेरणा से श्री सेठ निर्मल कुमार जी सेठी महासभा के अध्यक्ष ने 1 लाख रु. तमिल प्रान्त के मंदिरों के जीर्णोद्धार को देने की घोषणा की थी।** उसमें सर्व प्रथम इस मंदिर का निरीक्षण कर पुनर्निर्माण कार्य का प्रयत्न किया गया। आपने यहां मूलनायक श्री आदिनाथ जी की नवीन प्रतिमा भी प्रतिष्ठा करा कर भिजवादी है, जो पोन्नूरमलै के जिनालय में विराजमान है। कार्य प्रारम्भ होने के बाद भी यहां के कार्यकर्ताओं की लापरवाही से पुनः रुका है और भगवान ज्यों के त्यों ही अव्यवस्थित हैं। इधर ध्यान देना अनिवार्य है।

Scanned with OKEN Scanner

पोन्नूरमलै—तपोभूमि—अतिशय क्षेत्र—

यह वन्दवासी से पश्चिम दिशा में 8 कि.मी. है। इसके चारों ओर सुरम्य वनस्थली है। नीलगिरि उपवन जैसा है। तलहटी में कुन्दकुन्द विद्यापीठ है, जिसमें 10 विद्यार्थी अध्ययन करते हैं। इसका संचालन श्री शिवा आदिनाथन् जी करते हैं, उसी की साइड में दूसरा कुन्दकुन्द

Scanned with OKEN Scanner

आश्रम है, जिसमें एक मन्दिर है, जिसमें लाइन से 5 वेदियां हैं। मध्य में श्री 1008 आदिनाथ भगवान की विशाल पद्मासन सौम्य मूर्ति है। इसके बायीं ओर प्रथम वेदी श्री पार्श्वनाथ स्वामी की, दूसरी श्री बाहुबली स्वामी की बेदी, दाहिनी और सहस्त्रकूट चैत्यालय है और दूसरा चन्द्रप्रभु मंदिर है। सभी वेदियों में 10 मूर्तियाँ पाषाण की और 40-50 धातु की है। अभी-अभी सितम्बर, 1983 में प्रतिष्ठा हुई 52 धातु की प्रतिमायें विराजमान की हैं। इसके संचालक श्रीधर नैनार हैं। इसी में विद्यापीठ है, जो अभी बन्द है, यहां अन्य कोई जैनी की बस्ती नहीं है। इतर जाति की 2-4 झोंपड़ियाँ हैं नीरव शांत क्षेत्र है। इस एरिया का नाम कुन्दकुन्द नगर रक्खा गया है।

आश्रम से रोड क्रॉश कर पहाड़ का रास्ता है। यह पर्वत दक्षिण में आधा फर्लांग चलकर पर्वत पर चढ़ने की सीढ़ियां प्रारम्भ हो जाती हैं। इसके पूर्व छोटा चबूतरा है जिसके मध्य में 2500 वें वीर निर्वाणोंत्सव के उपलक्ष में निर्मित धर्मचक्र है। पहाड़ की सीढ़ियां कुल 300 हैं, जो अच्छी चौड़ी और कुछ ऊंची हैं। ऊपर चोटी पर विशाल मण्डप है। जिसमें 500-700 आदमी आराम से बैठ सकते हैं। इसके एक और बीच में श्री 108 कुन्दकुन्द स्वामी—एलाचार्य महाराज की विशाल चरण-पादुकाएं हैं। 2000 वर्ष से अधिक प्राचीन होने से कुछ जीर्ण हो गई हैं। ये एक छोटी सी शिला में उत्कीर्ण कर बनाई गई है। इस शिला का नाम मणिशिला है और पर्वत 'नीलगिरि' के नाम से प्रसिद्ध है। अभी हमारे उपदेश से इसके चारों ओर खिड़का लगा दिया है। जिससे बन्दरों द्वारा अविनय का भय न रहे। यही कुन्दकुन्द स्वामी की तपः स्थली है। यहीं पर श्री सीमंधर स्वामी का ध्यान कर देवों द्वारा विदेह क्षेत्र गये थे और साक्षात् श्री जिनेन्द्र प्रभु का दर्शन किया था।

इस पर्वत के चारों और 2-2, 3-3 मील पर श्रावकों के गांव है। अतः यहां पहाड़ में गुहाओं में निवास कर आचार्य श्री संघ सहित ध्यान अध्ययन करते थे और गांवों में आहार कर अपने रत्नत्रय के साधक शरीर की रक्षा करते होंगे। तमिल कुरल काव्य के अतिरिक्त अन्य ग्रन्थों की रचना भी यहीं हुई होगी। इस समय यहां 2 गुफायें हैं। वातावरण अत्याकर्षक, शांत और सुखद है। सर्वत्र निर्भयता है।

Scanned with OKEN Scanner

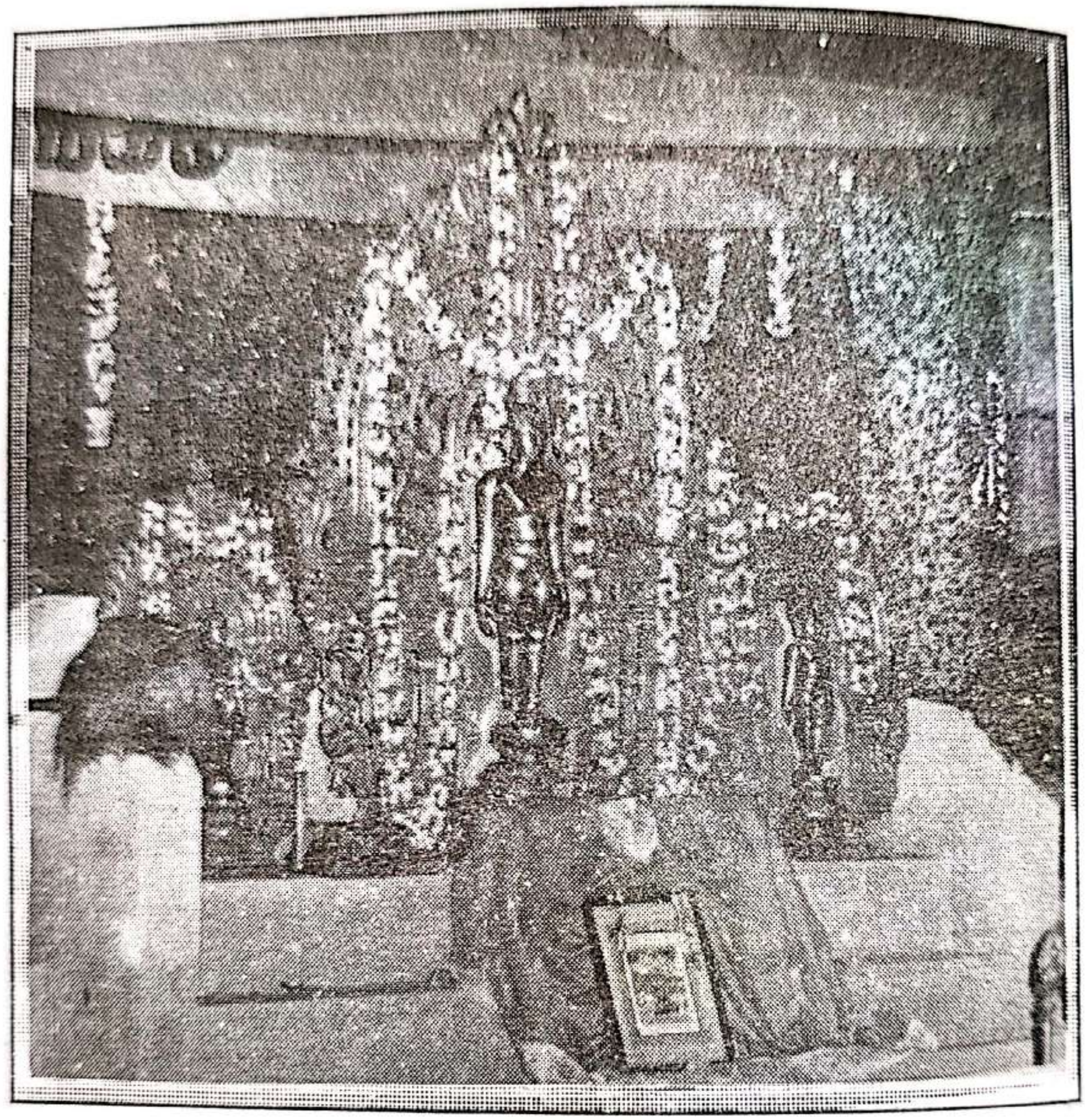

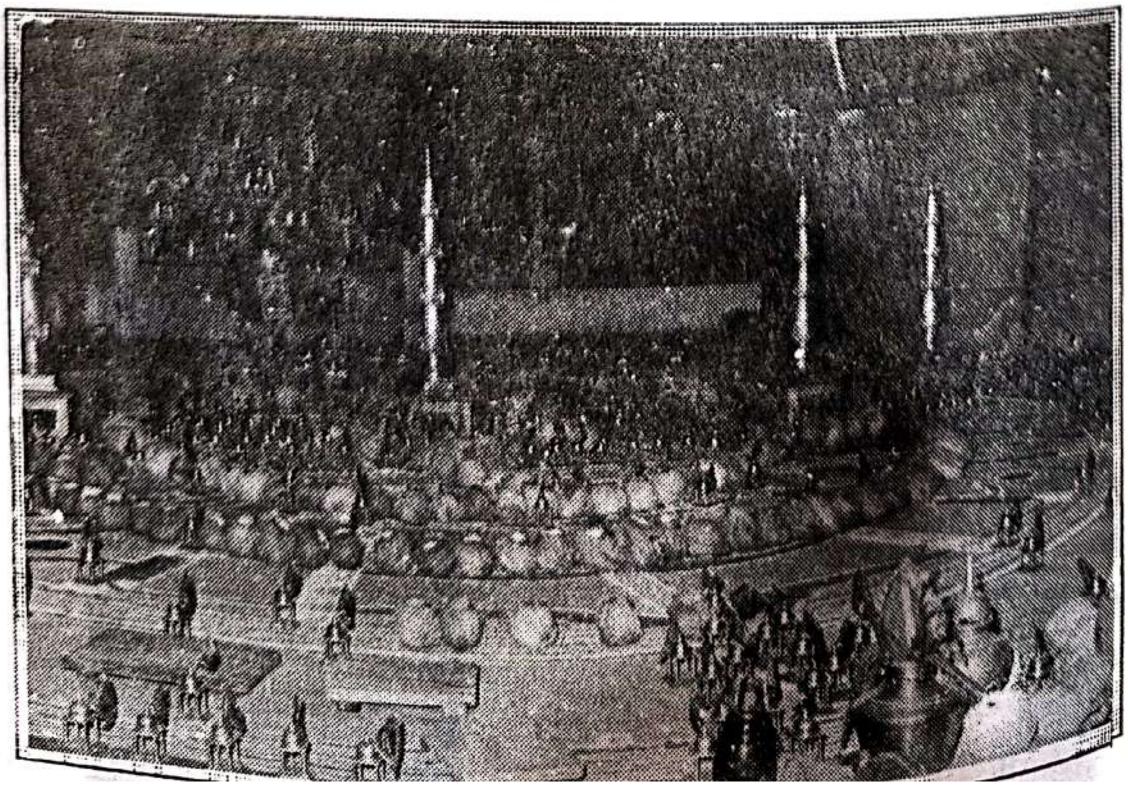

Scanned with OKEN Scanner

मुमुक्षओं को यहां का दर्शन अवश्य करना चाहिए। तथा यहां की स्थिति को सुधारना चाहिए। यहां मनुष्यों की क्या बात बन्दर भी क्रूर स्वभावी नहीं है। पर्वत के मण्डप का खुला रहने से बन्दरों द्वारा चरणों का अविनय होता था। हमारी प्रेरणा से श्रीपालन एस.पी. द्वारा चारों ओर जाल का परकोटा बनवाया। अब तो जिनप्रतिमा भी विराजमान हो गयी है।

वेणकुण्ड्रम—(Venkundram-604408)

ऐतिहासिक यह चौल समय Period (A. D. 1150) का है। यहां 37 घर जैन दिगंबरों के हैं। इस गांव की व्यवस्था जैन संघ द्वारा होती थी, ऐसा लिखित प्रमाण है। यहां 1 विशाल सुविस्तृत मंदिर है। मूलनायक श्री 1008 पार्श्वनाथ स्वामी हैं। यह काले पाषाण की पद्मासन अनोखी प्रतिमा है। इसके नीचे नवदेवता और आजू बाजू जिन प्रतिमायें हैं। इसकी ऊँचाई $1^1/_2$ फुट है। इसके अतिरिक्त दूसरे कक्ष में 3 वेदियां हैं, मध्य में 13 प्रतिमायें हैं। इनमें एक मूलनायक शेष पञ्च धातु की हैं। दाहिनी ओर 5 प्रतिमायें हैं— बाहुबलि, मेरु, नन्दीश्वर जी आदि। बायीं ओर धातु की 5 प्रतिमायें, 1 श्रुत स्कंध है, सब 23 प्रतिमायें हैं। इसी के दायीं और धर्म देवी का मंदिर है। देवी जी विशाल और सुन्दर पाषाण की हैं। मंदिर के सामने टीन के नीचे वृषभ स्वामी का विशाल पाषाण बिम्ब है, जिसे वर्षा हेतु पूजते हैं, 'मलै बिम्ब' कहते हैं। मुख्य द्वार के सामने एक अलग लम्बी वेदी है। इसमें मूल चन्द्र प्रभु जिन हैं। शेष 15 प्रतिमायें धातु की अति प्राचीन हैं। ब्रह्मदेव और 5 देवियां हैं। इसके आगे लम्बा चौड़ा बराण्डा है, इसमें 12 खम्बे हैं, बाहर पुनः एक बराण्डा और सभा मण्डप है। इसकी परिक्रमा काफी चौड़ी है, चारों ओर 25-30 कमरे बन सकते हैं और मार्ग भी रह जाये। इस प्रकार मंदिर भव्य, विशाल और दर्शनीय है। वाटिका कुआं भी है। सुरक्षा आवश्यक है। हालत तो साधारण है पर देखभाल बराबर नहीं है। श्रावक जन सज्जन और धर्मप्रेमी हैं। यह वन्देवासी से मात्र 1 कि.मी. है, रिक्शा साइकिल चलते हैं।

सैंदमंगलम्—(Senthamangalam-604404)

यहां 25 घर हैं। यह वन्देवासी से 5 कि. मी. पश्चिम में है।

Scanned with OKEN Scanner

वन्देवासी आरणी रोड पर है, बस जाती है। यहां का मन्दिर अति प्राचीन है। यह पल्लव नरेश द्वारा नवाब के सहयोग से निर्मित हुआ था। इस समय एकदम टूट चुका है फिर से बना रहे हैं। साहू जी से कुछ राशि रु. 10 हजार करीब संभवतः मिले हैं, गांव के लोग भी चेष्टा कर रहे हैं। गोपुर तैयार हुआ है, जगह बहुत लम्बी चौड़ी है। अतः समय के साथ रकम भी अधिक चाहिए। सभी प्रतिमायें 1 कमरे में हैं। अभी नींव खोदते समय बड़ी सुन्दर आकर्षक 4 प्रतिमायें जमीन से निकली हैं, धातु की खड्गासन। 1 प्रतिमा जलाशय से निकली बताई जाती है, यह पाषाण की 3 फीट ऊंची है। मूलनायक श्री आदिनाथ स्वामी हैं। सर्व 21 प्रतिमायें हैं। मूल खड्गासन बिम्ब है। यदि उत्तम रीति से धनाढ्यों का सहयोग मिले तो यह एक विशाल भव्य और उन्नत जिनालय हो जायेगा। यहां के श्रावक उपदेश सुनने के इच्छुक और धर्मात्मा, जिनभक्त, सरल हैं।

एरुंम्बूर—

यह छोटा सा गांव रोड़ से 2 कि.मी. है। आदिनाथ प्राचीन जिनालय है। 30 मूर्तियां धातु की हैं। 1 मूलनायक पाषाण की हैं। 7 मूर्तियां धातु की शासन देवी देवताओं की हैं। ताड़पत्र ग्रंथ 7-8 हैं। कुछ कन्नड़ और कुछ हिन्दी के भी हैं। यहां सोमकीर्ति जी नैनार हैं। इनके पिता जी वर्तमान भट्टारक जी से पूर्व पट्टाचार्य थे। सोमकीर्ति जी भी धर्मात्मा और अध्ययनशील हैं, द्वितीय प्रतिमा पालन का अभ्यास कर रहे हैं। मंदिर जी का थोड़ा जीर्णोद्धार किया है, किन्तु अभी विशेष पुनः निर्माण की आवश्यकता है।

आयलवाडी— (उत्तर आर्कांड जिला)

यह भी एक छोटा गांव है जो एरम्बूर से 6 कि. मी. है। मूल नायक श्री आदिनाथ स्वामी हैं। अभी एक नवीन सफेद पाषाण मूर्ति मंगाई है, प्रतिष्ठा होने पर यही मूल स्थान में विराजमान होगी। मंदिर की स्थिति साधारण है। 20 प्रतिमा जी धातु की, 2 पाषाण की हैं। धर्मदेवी जी भी हैं। 20 परिवार यहां निवास करते हैं। सभी धर्मात्मा हैं, अपनी पद्धति के अनुसार पूजा भक्ति करते हैं। कई दम्पत्तियों ने आजन्म असिधारा व्रत (ब्रह्मचर्य व्रत) धारण किया।

Scanned with OKEN Scanner

आरणी सर्कल (नार्थ आर्काट जिला)

पेरनमल्लूर (उत्तर आर्काट जिला) :—

यह वन्दवासी से पश्चिम 35 कि. मी. आरनी रोड पर है। यहाँ श्री आदीश्वर नाथ जिनालय है। मूल प्रतिमा जी कृष्ण पाषाण की है, 1 और पाषाण बिम्ब है। 20 धातु प्रतिमायें है। 1 सफेद पाषाण की है। यहां नवग्रह का पृथक् मन्दिर है। ब्रह्मदेव (क्षेत्रपाल) प्रतिमा है। अन्य भी 7 मूर्तियां शासन देवताओं की हैं। मन्दिर प्राचीन है। इस समय साधारण स्थिति है। यहां 37 घर जैन नैनारों के हैं। सभी साधारण स्थिति के कृषक हैं।

वालपंदल (उत्तर आर्काट जिला) :—

यह आरनी रोड़ पर है। यहां 1 मन्दिर है। मूलनायक आदिनाथ स्वामी हैं। 10 प्रतिमायें अन्य धातु की हैं। मन्दिर अत्यन्त शोचनीय दशा में है। यहां 20 घर जैनों के हैं। सभी किसान हैं। इस मन्दिर का जीर्णोद्धार होना बहुत जरूरी है। धनाढ्य धर्मात्माओं को द्रव्य देकर चार गुना फल प्राप्त कर सातिशय पुण्यार्जन करना चाहिये।

मेलपन्दल :—

इसी रोड़ पर 3 कि. मी. जाकर एक छोटा-सा साफ सुथरा मंदिर है। मूल प्रतिमा श्री आदिनाथ स्वामी की है। यह पाषाण की है। 10 मनोज्ञ प्रतिमायें धातु की हैं। 1 धर्मदेवी, 1 ब्रह्मयक्ष की मूर्ति पाषाण की हैं। धरणेन्द्र पद्मावती, ज्वालामालिनी धातु की हैं। 20 घर श्रावकों के हैं। जिनालय का सुधार परमावश्यक है।

कोइलांपूण्डी :—

मेलापन्दल से 1 कि.मी. है। यहां श्रावक नहीं है । प्राचीन अतिविशाल जिनालय है शिखर बंध है। चतुर्थकाल की मूर्तियां हैं। मूलनायक सुखासन श्री महावीर भगवान हैं। 1 खड्गासन अत्यन्त

Scanned with OKEN Scanner

मनोहारी श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र प्रभु की है। 2 प्रतिमायें और भी पार्श्वनाथ स्वामी की हैं। ब्रह्म देव और धर्म देवी के पृथक्-पृथक् मन्दिर हैं। सभी कलापूर्ण आकर्षक 2000 वर्ष से अधिक प्राचीन हैं। मन्दिर साफ सुथरा है। परन्तु शिखर बहुत जीर्ण गिराऊ धरा है। जिसका पुनः निर्माण होना आवश्यक है।

नगरम्-नेत्तपाक्कम अतिशय क्षेत्र :--

मेलापन्दल से 9 कि.मी. है। यहां 3-4 घर जैन नैनारों के हैं। यहाँ से एक किलो मी. जंगल में जाकर दिगम्बर जैन छोटा-सा मन्दिर बड़ा सुन्दर है। चारों ओर मलवा (खण्डहर) पड़ा है, जिससे प्रतीत होता है कि किसी समय यहां विशाल परकोटा युक्त बहुत बड़ा जिनालय होगा। इसका जीर्णोद्धार रमारानी द्वारा कराया गया है। इस समय मूलनायक श्री नेमिनाथ स्वामी की सुखासन पाषाण की अति सौम्य आकर्षक प्रतिमा है। यह अतिशय क्षेत्र है। यहां के चमत्कार भी हैं। इस क्षेत्र को 'नेत्तपाक्कम' कहा जाता है। 25 मूर्तियां यहां धातु की थीं पार्श्वनाथ स्वामी खड्गासन इतने विशाल और सौम्य अन्यत्र नहीं हैं। पंचपरमेष्ठी, नवदेवता, नन्दीश्वर, 2 पद्मावती, 1 धरणेन्द्र की मूर्तियां क्षेत्र से लाकर नगरम् गांव के प्रधान शिक्षक श्री मल्लिनाथन् नैनार के घर में एक कमरे में विराजमान हैं। सबका अभिषेक कराया और उनको प्रतिदिन अभिषेक पूजा करने की प्रेरणा भी दी। यहां छोटा-सा मन्दिर निर्माण कराने का आदेश भी स्वीकार किया है। श्रावक सम्पन्न और परमभक्त हैं। यह ऐतिहासिक प्रसिद्ध विशाल क्षेत्र है। इसकी खोज और उद्धार कराया जाय तो बहुत अच्छा प्रसिद्ध रमणीक क्षेत्र बन सकता है। आरणी मेन रोड़ पर ही है। आरणी से पूंडी जिनालय के लिए 5 कि. मी. कच्ची रोड़ है।

पूण्डी महान् अतिशय क्षेत्र :—

आरणी रोड से आधा कि.मी. सघन अमराई में अंगड़ाई लेता यह अनोखा ही क्षेत्र है। सैकड़ों आम्र वृक्षों से घिरा एक ही परकोटे में सुविशाल जिनालय है, कहा जाता है कि नन्दीवर्मन् राजा ने 7 प्रकारों से वेष्टित इस जिनालय का निर्माण श्री मुनिराज के उपदेश से कराया था। अभी

Scanned with OKEN Scanner

6 परकोटे ध्वस्त हो गये, मात्र 1 अवशेष है। प्रथम श्री आदीश्वर जिनालय जिसमें अतिभव्य 2500 वर्ष प्राचीन मूर्ति है जो बड़ी ही आकर्षक है, बाहर की ओर विशाल श्री चंद्रप्रभु बिम्ब है। इसी की बगल में ज्वालामालिनी महादेवी की प्रतिमा है। इस प्रकार इसमें 3 गर्भगृह हैं। प्रथम यही था। मुख्य द्वार में प्रविष्ट होते ही श्री पार्श्वनाथ मन्दिर है। यह प्रतिमा कृष्ण पाषाण की खड्गासन करीब 5 फुट की है। इसमें 15 बिम्ब धातु के 7 शासन देवी देवता के सामने हैं। बगल में बायीं ओर नव देवता, पञ्चपरमेष्ठी, चतुर्विंशंति बिम्ब पाषाण के हैं। पुनः द्वितीय प्रकोष्ठ के बाद तृतीय प्रकोष्ठ में मूलनायक है। 8'—9' फुट चोड़ी परिक्रमा है। मन्दिर के पीछे 5 वेदियाँ हैं। प्रत्येक कोठरी में क्रमशः 1 ब्रह्म देव, 2 ज्वालामालिनी, 3 पद्मावती, 4 धर्मदेवी और 2 सरस्वती हैं। एक चकवा सवारी पर देवी है। 3 शिखर हैं। मूल द्वार के ऊपर छत पर पाण्डुकशिला है। यहाँ आदिनाथ स्वामी ''श्री पूडी पोन्नियनादर'' के नाम से प्रख्यात हैं। पूण्डी गाँव के कारण ''पुन्नियनादर'' गाँव के नाथ कहलाते हैं। कहते हैं श्री आदिनाथ भगवान जमीन से निकले हैं। असावधानी से भगवान के चोट लग गई तो वह अन्धा हो गया, फिर स्वप्न में कहा, यहाँ भगवान हैं, निकालकर मन्दिर बनवाओगे तो तुम्हारे नेत्र खुल जायेंगे, वैसा ही हुआ अन्य सैकड़ों अतिशय और कथायें इस मन्दिर के साथ जुड़ी हैं। मन्दिर के सामने एक धर्मशाला है जो पूरी टूट फूट चुकी है। मन्दिर भी जीर्ण-शीर्ण है। जीर्णोद्धार कराकर क्षेत्र की व्यवस्था बहुत जरूरी है। यहाँ सेऊर से पुजारी आकर पूजा कर जाता है। आरकाट का नवाब यहाँ के खम्भे आदि निकलवा के ले गया । एरम्बूर और पूण्डी गाँव के बीच यह एक मन्दिर है। पुदकामूर और राटण मंगलम् इन दो गाँवों के ट्रस्टी हैं। अग्रापलयं गाँव भी इसी के साथ है। प्रत्येक 14 जनवरी को इन तीनों गाँवों के जैन बन्धु सपरिवार आकर यहाँ पंचामृत अभिषेक एवं पूजन करते हैं। वार्षिक मेला लगता है। श्री कुप्पू नैनार बड़ा धर्म वत्सल सेठ था, उसी ने धर्मशाला आम्रवन लगवाकर बनवायी थी। पञ्च यक्षी गोपुर, मानस्तम्भ और पाण्डुक शिला अप्पांगुड्डी ने बनवायी हैं। यदि इस क्षेत्र को सम्भाला जाय तो यह तामिल प्रांत का 'चम्पापुर' क्षेत्र बन सकता है।

सेऊर :

मेन रोड़ छोड़कर 3 कि. मी. पश्चिम में यह गाँव स्थित है। यहाँ वृषभनाथ जिनालय है। इसका जीर्णोद्धार हो रहा है। प्राचीन श्री वृषभदेव के स्थान पर मूल नायक विशाल प्रतिमा श्री निर्मल कुमार जी सेठी अध्यक्ष महासभा द्वारा विराजमान कराई गई है। मूल प्रतिमा सुखासन थी। 2 पद्मासन पाषाण की हैं। 11 मूर्तियाँ धातु की, 5 शासन देवी देवताओं की हैं। यहाँ 60–70 घर हैं। धार्मिक जागृति कम है। 3 साल से अनावृष्टि भी है । तो भी लोग सरल हैं। जिन भक्ति एवं साधु भक्ति अच्छी है। अभी जीर्णोद्धार की विशेष आवश्यकता है।

अनन्तपुरम् :

यह आरणी से 1 कि.मी. है। यहाँ बहुत ही छोटा सा मन्दिर है परन्तु परकोटा बड़ा है जो टूटा फूटा सा है। आँगन में घास फूस उगा है। 4 प्रतिमायें हैं। मूलनायक आदिनाथ स्वामी हैं। 20 घर श्रावकों के हैं। जीर्णोद्धार शीघ्र होना चाहिए।

आरणी (उत्तर अर्काट जिला) :

यह टिण्डी वनम् से 25 कि. मी. है। यहाँ विशाल सुन्दर एवं व्यवस्थित श्री आदिनाथ जिनालय है। दाहिनी ओर सभामण्डप है, जिसमें लगभग 500 आदमी बैठ सकते हैं–सामने उन्नत मानस्तम्भ है– चार प्रतिमायें इनमें नीचे और चारों ओर 4 प्रतिमा जी ऊपर हैं – ऊपर घंटियाँ लटक रहीं हैं। ध्वज स्तम्भ भी है। इसमें लगी छोटी 2 घंटियाँ हवा से झुनझुनाती रहती हैं। पहले प्राचीन आदि भगवान श्री कृष्ण पाषाण के हैं परन्तु अभी जयपुर से आगत नवीन सफेद पाषाण के है ये दोनों साइड बाई साइड विराजमान हैं। शिखर अति सुन्दर कलात्मक है। बाहर के भाग में दोनों ओर वेदियाँ हैं। जिनमें एक ओर 20 और दूसरी ओर 10 धातु की प्रतिमा जी हैं। 2 पाषाण की हैं, 6 शासन देवताओं की हैं इनमें 2 पाषाण की हैं। सायंकाल अष्ट मंगल द्रव्यार्चना होती है। प्रात: पञ्चामृताभिषेक सहनाई के साथ दोनों समय भक्ति होती हैं। टेप माइक भी व्यवस्थित हैं। यहाँ के लोगों का धर्म प्रेम कुछ जाग्रत हैं। सम्भवत: 40–50 श्रावकों के घर हैं।

Scanned with OKEN Scanner

तच्चूर (Thatchur 632316) अतिशय क्षेत्र :

यह प्रसिद्ध प्राचीन नगरी है। यह आरनी से दक्षिण में 10 कि.मी. है। आरणी से देविकापुरम् जाने वाली बसें यहाँ रुकती हैं। यहां करीब 1000 वर्ष से पूर्व का प्राचीन श्री आदिनाथ जिनालय है। बाहर भाग में आजू-बाजू और मध्य में वेदी हैं। एक ओर 9 प्रतिमा जी, आगे ब्रह्मदेव हैं। दूसरी ओर 11 जिनबिम्ब हैं। इनमें 3 मध्य में पाषाण की हैं। पुनः मध्य में 3 प्रतिमायें टेबुल पर ही विराजमान हैं। एवं आगे अभिषेक पीठ है, इसमें 4 प्रतिमायें—जिनमें 1 मूल नायक पाषाण की और 3 अन्य हैं। सर्व 30 जिन प्रतिमायें हैं। इनके अतिरिक्त 1 धर्मदेवी, पाषाणमय, 5 धातुमय शासन देवता, 1 श्रुत स्कन्ध एव 1 श्री बाहुबली स्वामी हैं। कहते हैं कि 1 मार्च को सप्ताह में प्रातः सूर्य की किरणों श्री वृषभदेव स्वामी के चरण स्पर्श करती है। धीरे-धीरे प्रभु के दर्शन करती हैं। इन दिनों 3 दिन यहां प्रतिवर्ष मेला लगता है। यहां 20 घर जैन बन्धुओं के हैं। जिनालय की दशा अति दयनीय और शोचनीय है। जगह पर्याप्त होते हुए भी 10-20 आदमियों के बैठने की भी जगह नहीं है। जीर्णोद्धार होना बहुत जरूरी है।

सदुपेरियपालियम् :—

तच्चूर से 2 कि.मी. है। यह छोटा सा गांव है। यहां 7-8 श्रावकों के घर हैं। किन्तु मन्दिर अति प्राचीन 2500 वर्ष पूर्व का विशाल है जो टूट फूट कर ढेर हो रहा है। शिखर भी गिरने की तैयारी में है। कोई देखभाल नहीं है। तच्चूर से पुजारी आकर एक भगवान का पालाभिषेक कर जाता है। मूल नायक आदि भट्टारक स्वामी हैं। 8-9 प्रतिमायें धातु की हैं। धर्मदेवी और ब्रह्मदेव पाषाण के हैं। कहा जाता है पहले जैन धनाढ्यों की यह नगरी थी। श्रावक सब इधर-उधर चले गये और जिनालय की यह दशा हो गई। मन्दिर की विशालता और कला को देखकर एवं भग्नावशेषों से यह सत्य प्रतीत होता है, यह अवश्य दो-ढाई हजार वर्ष प्राचीन होगा। इसके पुनर्निर्माण की महती आवश्यकता है। उस समय श्री निर्मल कुमार जी सेठी ने कुछ आश्वासन दिया है तो भी सभी धर्मात्माओं को इधर लक्ष्य देना चाहिये।

Scanned with OKEN Scanner

तिरूमलै Thirumalai महान रमणीक अतिशय क्षेत्र :—

यह पवित्र स्थान चोलवंशी राजाओं के समय का है। क्योंकि प्रथम मन्दिर का नाम चोलारानी के नाम से "कुन्दाबाई जिनालय" है। यह 2000 वर्ष से पूर्व का क्षेत्र है। यहां की पच्चीकारी गुफाओं की चित्रकारी एवं गुहा मन्दिर सब विशेष कला सौन्दर्य के नमूने हैं। पहाड़ के नीचे दो जिनालय हैं। प्रथम "वर्द्धमान जिनालय" इससे कुछ ऊपर चढ़ कर दूसरा विशाल जिनालय श्री नेमिनाथ जिनालय है। इन्हे 'शिखामणि नादर' से पुकारते हैं। इस मन्दिर की दाई ओर पहाड़ काट कर गुफा मन्दिर बनाया गया है। सर्वप्रथम द्वार में प्रवेश करते ही चन्द्र प्रभु जिनालय है। यहाँ 1008 चन्द्र प्रभु स्वामी पद्मासन 5 फीट है, अन्य एक शिला खण्ड पर 3-4 मूर्तियां हैं। कुछ ऊपर चढ़कर 8-10 सीढ़ियों के बाद विशाल नेमिनाथ जिनालय आता है। इसमें पद्मासन 3 फीट की प्रतिमा है, इस मन्दिर की प्रतिष्ठा पोन्नूर गांव के सेठ ने कराई, इसमें श्री आदिनाथ,श्री अनन्तनाथ, श्री पार्श्वनाथ, श्री नन्दींश्वरजी, श्री नवदेवता, श्री पंचपरमेष्ठी, सिद्ध चक्र, सर्वाण्ह यक्ष, कूष्माण्डिनी यक्षी, सरस्वती, श्रुत स्कन्ध, ब्रह्मदेव आदि 20 प्रतिमायें हैं, इसके बाहर से परिक्रमा कर दक्षिण की ओर गुफा मन्दिर है, 10 सीढ़ियां चढ़कर गुफा का छोटा सा द्वार है, फाटक लगे हैं, खोलकर जाकर दर्शन करते हैं। गुफा की दीवाल में बायीं से दायीं ओर क्रमशः कुष्माण्डिनी देवी, श्री बाहुबलि स्वामी, श्री पार्श्व प्रभु खड्गासन और श्री नेमिनाथ स्वामी की पद्मासन प्रतिमा जी उत्कीर्ण हैं। इस दीवाल पर पानी झरता रहता है किन्तु प्रतिमायें सभी ज्यों की त्यों सर्वांग सुन्दर सुरक्षित हैं। पुनः गुफा से उतर कर बांयीं ओर 4 गुड़ियों में प्राचीन पद्मासन 4 मूर्तियां हैं, जो भू-गर्भ से निकली कही जाती हैं, चिन्ह नहीं है। इसके बाद ऊपर गुफा में जाने का द्वार है। करीब 25-30 सीढ़ियां चढ़कर विशाल 3-4 खण्ड की गुफा है। इसमें पाचीन कलानुसार चित्रकारी बनी है। चित्र छिन्न-भिन्न हैं।

बाहर आकर बायीं ओर 20-25 कदम जाकर पुनः सीढ़ियां हैं, उन पर चढ़ने से बड़ी झील जैसा झरने का पानी है, यह इतनी लम्बी गुफा हैं जिसमें सैंकड़ों लोग नहा धो सकते हैं, कहते हैं यह पानी

Scanned with OKEN Scanner

कभी नहीं सूखता, सुस्वादु और शीतल भी है। सैकड़ों जन सो सकते हैं। पुनः मुख्य द्वार से बाहर मन्दिर के दाहिनी ओर एक छोटा सा मन्दिर है, इसमें नव देवता बिम्ब है, 1, 2 और भी पाषाण मूर्तियां हैं। यहीं से पहाड पर जाने का मार्ग शुरू होता है। करीब आधा फर्लांग चलकर सीढ़ियां प्रारम्भ होती हैं। 150 सीढ़ियां चढ़कर श्री नेमिनाथ स्वामी 16 फीट खड्गासन का जिनालय आता है। अभिषेक करने को दोनों ओर पहाड़ है। परन्तु सीढ़ियां नहीं हैं। रस्सा बांधकर चढ़ना पड़ता है, यहां सीढ़ियां होना आवश्यक है, जिससे प्रत्येक भाई बहन यात्री सुविधापूर्वक अभिषेक कर सके। यहां का आश्चर्य है कि प्रतिमा के सामने 2 चम्पा के और 1 नीम का वृक्ष सदा फले-फूले हरे भरे रहते हैं। मन्दिर की बगल में ही झरना है जो अभिषेक के काम आता है। कुछ ऊपर चढ़ने पर पुनः एक छोटा सा रमणीक पार्श्वनाथ जिनालय है। फिर कुछ ऊपर चढ़कर एक विशाल चट्टान पर 3 चरण पादुकाएं हैं, ये श्री वृषभाचार्य, श्री समन्तभद्राचार्य और वरदत्त गणधर महाराज की बताई जाती है। कहते हैं वृषभाचार्य जी की समाधि यहीं हुई। जो हो सभी ने तपश्चरण किया है। चरणों के ठीक ऊपर चम्पा के वृक्ष हैं जो नित्य पुष्पार्चन कर पुण्यार्जन करते हैं। यहां पाण्डवों ने विहार किया था। चातुर्मास भी यहाँ किया था, उस समय राजा सेदिश की राजकुमारी कुन्दवै अम्मियार ने यह नेमिश्वर प्रभु की प्रतिमा उनके दर्शनार्थ स्थापित कराई थी। यह अतिप्राचीन चतुर्थकालीन अतिशय क्षेत्र है। यहां का गुफाओं में जम्बूद्वीप, ढाईद्वीप, तीन लोक के नक्से भग्नावशेष रूप में हैं। वृक्ष तले ध्यानस्थ साधु, चर्या करते, अध्ययन करते स्पष्ट प्रतीत होते हैं, कहीं उपदेश दे रहे हैं, इससे प्रमाणित होता है कि आचार्यों के विशाल संघों ने यहां आत्म साधना की होगी।

यह क्षेत्र सरकार के आधीन है। अतः साफ सुथरा और अपने मूल रूप में विद्यमान है। प्रत्येक भव्य प्राणी को यहां के दर्शन करना चाहिए। जलवायु स्वास्थ्यप्रद है। मौसम समरूप रहता है। ध्यान अध्ययन, तप संयम की वृद्धि के अनुकूल है किन्तु यहां श्रावक कोई नहीं है मात्र 4 घर पण्डितों के हैं। वर्तमान में यहीं पर भट्टारक जी की गद्दी स्थापित हो गयी है। जिससे यहां की सांस्कृतिक जीवन रक्षित हो रहा है।

Scanned with OKEN Scanner

ओदलवाडी :—

यहां से 4 कि.मी. है। छोटा गांव है। परन्तु सब जैन हैं 60 घर श्रावकों के हैं। 1 जिनालय है। मूलनायक कृष्ण वर्ण पद्मासन श्री 1008 आदिनाथ भगवान हैं। 19 मूर्तियां धातु की हैं। 5 मूर्तियां शासन देव-देवियों की हैं। 1 ब्रह्मदेव मन्दिर है, जिसमें 3 मूर्तियां पाषाण की हैं। दूसरी ओर श्री पद्मावती देवी जी का मन्दिर है। इसी में श्री धर्मदेवी भी हैं। जिनालय के 3 दरवाजे हैं, बाहर वराण्डा है। श्रावकों में सभ्यता आचार-विचार बहुत बिगड़ा है। व्यसनी प्रतीत हुए। धर्मोपदेश आवश्यक है।

तच्चाम्बाडी :—

यह विद्वानों की नगरी है। 1 मन्दिर है। 20 घर हैं। यहां का मन्दिर सन्तोषप्रद है। अभी जीर्णोद्धार कराया है। मूलनायक श्री 1008 महावीर स्वामी पद्मासन हैं। एक प्रकोष्ठ खाली छोड़कर दूसरे द्वार में प्रवेश करने पर सम्मुख 5 जिनबिम्ब धातु के हैं। 3 पार्श्वनाथ की खड्गासन प्रतिमाएं हैं। इसके सामने नन्दीश्वर, मेरु, नवदेवता, पञ्च परमेष्ठी, 2 खड्गासन, 1 सरस्वती, 1 पद्मावती, 1 धरणेन्द्र, 1 ज्वालामालिनी, 1 धर्मदेवी है। बायीं ओर वेदी में 10 प्रतिमायें धातु की हैं, 3 पाषाण की हैं, दायीं ओर तीन पाषाण बिम्ब 1 धर्मदेवी 1 ब्रह्मयक्ष हैं।

जिनालय के सामने ध्वज स्तम्भ है। इसके बाद श्री मानस्तम्भ है। इसमें नीचे ऊपर 4-4 जिन प्रतिमायें हैं, छोटी-छोटी घण्टियां लगी हैं। 20 ताड़पत्र के शास्त्र हैं, प्रदक्षिणा में पीछे की ओर मुनि चरण पादुका ढ़ाई हजार वर्ष प्राचीन हैं जो पास ही एकपहाड़ी की गुफा से उठाकर लायी गई है, ध्वज स्तम्भ के बगल में सभामण्डप है। इसमें जम्बू द्वीप, ढाईद्वीप, समवशरण आदि चित्रित हैं। 2-4 विद्वान अभी भी हैं जो स्वाध्याय, तत्वचर्चा और धर्मोपदेश के प्रेमी हैं। इनके घरों में प्राचीन ग्रंथों का भण्डार भी है। हमारे संघ की व्यवस्था एवं कार्यक्रम देखकर इसे Mooving Library (मूविंग लाइब्रेरी) कहा। इस समय यह तरक्की पर है।

Scanned with OKEN Scanner

सेत्र्जी सर्कल (साऊथ अर्काट जिला)

तोण्डूर—

यह भी प्राचीन नगरों में से है। यहां 1 विशाल जिनालय है। इसमें 23 जिन प्रतिमा धातु की और 6 पाषाण की हैं, 1 धर्म देवी हैं, मूल नायक श्री महावीर स्वामी हैं, 3 मंडप छोटे किन्तु आकर्षक हैं। अभी-अभी जीर्णोद्धार हुआ है। यहां श्री पद्मावती देवी और धरणेन्द्र महाराज की मूर्ति कलात्मक विशेष आकर्षक हैं। ये दोनों ही धातु की हैं। 2 बाहुबलि, 1 मेरू, 1 गणधर, 1 पञ्चपरमेष्ठी, 1 नवदेवता, 1 श्रुत स्कन्ध पाषाण की आम्रकुष्माण्डिनी कला की प्रकर्षता की द्योतक हैं। यह जिनालय लगभग 1500 वर्ष से अधिक प्राचीन है। गाँव से आधा मील जंगल में जाकर एक रमणीक छोटी सी पहाड़ी है। इसमें अति शोभन एक गुफा है, इसकी भित्ति में एक भव्य, सुमनोज्ञ शान्तमुद्रा श्री पार्श्वनाथ भगवान की मूर्ति पद्मासन उत्कीर्ण है। यह अतिश्यवान चमत्कारी है। आज भी जैन जैनेतर अपनी मनोकामना सिद्धि के लिये यहां आते हैं और पूजा भक्ति करते हैं। वर्ष में एक बार मेला भी भरता है। इस गुफा मूर्ति के सामने श्रमण शयनागारों के चिन्ह बने हैं। कहते हैं यहां पांचों पाण्डवों ने तपश्चरण किया था और भी अनेकों आचार्यों ने संघ सहित यहां निवास किया है। गुफा के ऊपर विशाल चट्टान है, जो छत के समान है, उस पर सैंकड़ों मुनियों के सोने के स्थान बने हैं। यह भी यहां के लोगों से विदित हुआ कि इधर श्री नेमीनाथ तीर्थंकर का विहार हुआ था। जो हो यह एक उत्तम तपोभूमि थी जहां अनेकों भव्यात्माओं ने आत्म साधना कर निजानन्द प्राप्त किया। यह स्थान अत्यन्त शान्त, निरापद और सुखद है। गुफा का सुधार कराया जाय तो यह एक रम्य अतिशय क्षेत्र बन सकता है। इस समय यहां 20

Scanned with OKEN Scanner

घर श्रावकों के हैं। धर्मप्रेमी बन्धुओं का यहां निवास है। यह साधु भक्त और तत्व स्वरूप जानने के इच्छुक हैं। मंदिर की भी विशेष सुरक्षा होना आवश्यक है।

कल्लपुलियूर—(Kallapulliyur)

यह सिंजी से 16 कि.मी. है। यहां 70 घर दिगम्बरों के हैं और 1 जिनालय है। कहा जाता है यह नगरी आचार्य और साधुओं की जन्म स्थली रही है। आज भी आचार्य श्री 108 वर्द्धमान सागर जी जो श्री 108 आचार्य धर्मसागर जी के संघ में थे, वे यहीं के हैं। यहां का जिनालय लगभग 2000 वर्ष प्राचीन हैं। यह विशाल है, अभी जीर्णोद्धार हो रहा है। पुनः नवीन गंध कुटि बनाई गई है जिसकी शुद्धि भी हो गई है। यहां 46 धातु की मूर्तियाँ हैं और 7 पाषाण की। मूलनायक श्री 1008 पार्श्वनाथ स्वामी हैं। हमारे संघस्थ 105 क्षु. आदिमती जी का केशलोंच प्रभावना पूर्वक कराया। करीब 150 ताड़पत्र के ग्रंथ हैं। श्रावक जन मिलनसार एवं तत्व जिज्ञासु हैं। हमारे पास पोन्नूरमलै चातुर्मास में आकर तत्व चर्चा करते थे । मंदिर की दशा साधारण है, सुधार पर ही है तो भी आगम रक्षण और जिनालय रक्षण का समुचित प्रबन्ध आवश्यक है। पूजा—पाठ नित्य होता है, दर्शनार्थ लोग आते हैं। एक पाठशाला भी चालू कराई है। जाग्रति होने की संभावना है।

वलत्ति—(Valathy-604208)

यह प्राचीन जैन नगरी है। जो उत्तर और दक्षिण में पहाड़ियों से घिरी है। इस समय यहां 30 दिगम्बर परिवार हैं, इनमें प्रमुख श्री शिवा आदिनाथन उस समय मिले थे। सामने समुत्तुङ्ग मानस्तम्भ है, जिसमें 24 तीर्थंकरों की मूर्तियां उत्कीर्ण हैं मानों ये प्रसन्न वंदना भव्यों को उपदेश ही कर रही हैं। इसके नीचे अष्ट मंगल द्रव्य और गणधर एवं आचार्य परमेष्ठी की प्रतिमा भी अंकित है। मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान हैं, अन्य पाषाण की 6 प्रतिमायें हैं। बाहर के प्रकोष्ठ में 1

Scanned with OKEN Scanner

सफेद पाषाण की नवीन मूर्ति है। 4 शासन देवता की मूर्तियां हैं। 43 धातु की जिन प्रतिमायें हैं। 14 प्रतिमायें धातु की शासन देवी देवताओं की हैं। बाहरी मण्डप के आजू-बाजू दो प्रतिमायें हैं। 1 नन्दीश्वर, 1 पञ्चपरमेष्ठी, 1 श्रुत स्कंध, 2 यक्ष भी हैं। यह सब जिनालय के बायीं ओर कूए के पास दीवाल में हैं। यहां की सभी प्रतिमा जिनालय की बनावट कलात्मक और प्राचीन संस्कृति का नमूना स्वरुप है। परन्तु जीर्ण शीर्ण है। अधिक जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। 1 अलमारी शास्त्रों से भरी है। 1 सभा मण्डप है। साप्ताहिक शास्त्र सभा होती है। स्त्री और पुरुषों में पठन पाठन की विशेष रुचि है परन्तु साधन नहीं है। यहां संगीत प्रेमी हैं, जो जिन गुण गायन कर पुण्यार्जन करते हैं। गांव से करीब 1 मील पर जंगल में पहाड़ी में 1 गुफा है। इसमें श्री पार्श्वनाथ प्रभु खडगासन दीवाल में ही उत्कीर्ण कर स्थापित हैं। कहा जाता है 1000 वर्ष पूर्व यहां 8000 साधु निवास करते थे। इसी गुफा में ध्यान ज्ञान तपोरक्त रहते थे, इसी से इस गुफा का नाम ज्ञान गुफा है। साल में एक बार यहां के जैन बंधु यहां पूजा पाठ करते हैं। जहां 8000 साधु एक साथ विचरण करते हों वहां कितने श्रावक होंगे, यह विचारणीय है। गुफा और मंदिर दोनों ही सुधार चाहते हैं। यहां के श्रावक समर्थ हैं तो भी उतने नहीं कि इनका शीघ्र उद्धार कर सकें। यह लगभग 2500 वर्ष पूर्व की संस्कृति का प्रतीक है। हमारे साथ यहां की भजन मण्डली आपने साजों के साथ गई थी और धर्म प्रभावना की।

मलयनूर—

यहां का जिन मंदिर प्राचीन भी है और पूर्ण जीर्ण भी। 15 श्रावकों के घर हैं, जिनमें 4-5 सम्पन्न हैं परन्तु धार्मिक भावना नहीं है। हां उपदेश से कुछ जाग्रत हुए हैं और जीर्णोद्धार करने का आश्वासन भी दिया है। तो भी सोचनीय है। धातु की समस्त 54 भव्य मूर्तियां हैं। 24 तीर्थंकरों की अलग-अलग 24 मूर्तियां हैं। 5 शासन देवता हैं।

Scanned with OKEN Scanner

यहां प्रायः प्रत्येक मंदिर में मेरु, गणधर, पञ्चपरमेष्ठी और नव देवता की मूर्तियां हैं। क्षेत्रपाल और कूष्माण्डिनी (धर्म देवी) की पाषाण की निर्मित पृथक-पृथक चंवरियों में विराजमान हैं। मूलनायक श्री 1008 आदिनाथ सुखासन है। 6 आगम ग्रन्थ हैं।

तायनूर—

यहां 1 जिनालय और 30 घर जैनों के हैं यह मलयनूर से 2 किलो मीटर है। मूलनायक आदिनाथ भगवान हैं। यह बिम्ब 2500 वर्ष प्राचीन पाषाण का है। 1 नन्दीश्वर की प्रतिमा है, नव देवता पञ्चपरमेष्ठी, चौबीसी, तीन शासन देवता, 1 सफेद पद्मावती देवी है। इनके अलावा 40 प्रतिमायें धातु की हैं। जिनका प्रक्षाल आदि न होने से काली पड़ गई हैं। मंदिर में मिट्टी, कूड़े और चूहे की लेड़ियों के ढेर लगे थे। संघस्थ ब्रह्मचारिणी आदि ने यथा शक्ति सफाई कर प्रक्षाल अभिषेक पूजन आदि किये। मन्दिर सब ओर से टूटा पड़ा है। बाउन्ड्री भी फूट गई है। शिखर भी गिरने की तैयारी में है। श्रावक श्रद्धालु और भक्तिवान हैं परन्तु सब गरीबी हालत में हैं। श्रीमन्त धर्मप्रेमी बन्धुओं को ध्यान देना चाहिए। कुछ अब सुधार हुआ है।

तोरपाडी—

यहां श्री 1008 पुष्पदन्त भगवान का लगभग 1500 वर्ष प्राचीन जिनालय है। यह भी अत्यन्त जीर्ण शीर्ण दशा में है। कहा जाता है कि यहां पहले न जिन मन्दिर था और न कोई जैनी ही था। एक समय एक तुरवी नामक मुनिराज पधारे और यहां ध्यान को बैठ गये। उन्होंने नियम किया कि यहां जिन मन्दिर स्थापित होगा तभी हम आहार करेंगे, अन्यथा अन्न जल का त्याग। यह प्रतिज्ञा सेंजी वगैरह के सेठों को विदित हुई तो दौड़ कर आये और यह मन्दिर स्थापित कराया। यह 5 मण्डपों का जिनालय है। अन्तिम कक्ष में अद्वितीय

Scanned with OKEN Scanner

मूल पुष्पदन्त स्वामी अत्यन्त आकर्षक और दिव्य रूप से दैदिप्यमान हैं, अतिशय कारक भी हैं। किन्तु चारों ओर से चंवरी गिरने को तैयार है, फर्श भी धूल से भरी है। हालत बहुत खराब है। 15 अन्य धातु की मूर्तियां हैं। एक पाषाण की चतुर्मुख है, 1 कूष्माण्डिनी, 1 ब्रह्मदेव, भी है। जीर्णोद्धार की प्रेरणा देने पर यहां के श्रावकों ने आश्वासन दिया था परन्तु आज तक कोई सुधार नहीं हुआ। यह सिंजी से लगभग 8 कि. मी. है।

तिरुनादन कोंड्रम (सेञ्जी नगर के पास) Tirunathen Kunru अतिशय क्षेत्र—

यह जंगल में सिंजी Sigee से करीब 3 कि. मी. पर छोटी सी सुरम्य पहाड़ी है। यहां 1 विशाल गुफा है, जिसमें 70-80 साधु निवास कर सकते हैं। गुफा के बगल में एक सुखासन विशाल मूर्ति है जिसे ग्रामीण लोगों ने खण्डित कर दिया है, यह किस तीर्थंकर की मूर्ति है, चिन्ह न होने से नहीं कह सकते हैं। गुफा द्वार को पार कर जाने के बाद एक अतिशय विशाल उन्नत चट्टान है जिस पर प्रथम श्री पार्श्वनाथ यक्ष-यक्षी सहित, बाहुबली स्वामी हैं। अनन्तर सामने जाने पर अति मनोरम, वैज्ञानिक ढंग से कलात्मक 24 तीर्थंकरों की मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। प्रत्येक का आकार गंधकुटि जैसा है, समान लाइन में हैं। नीचे रोड से दर्शन होता है। सामने बैठकर पूजा पाठ करने को जमीन में थोड़ा स्थान है पर साफ सुथरा नहीं है। पहाड़ी पर जाने के लये सीढ़ियां हैं। चट्टान की परिक्रमा करने का भी मार्ग है। पीछे प्रदक्षिण मार्ग है। पीछे प्रदक्षिणा मार्ग में गुफा है जिसमें बैठकर आराम से ध्यान स्वाध्याय कर सकते हैं। यहां का वातावरण शान्त और आनन्दप्रद है। प्रातःकाल सूर्योदय की अरुण किरण चट्टान पर स्थित जिन बिम्बों पर पड़ती है, तो अद्वितीय शोभा हो जाती है। लगता है मानो भास्कर महाराज केशर का अभिषेक कर रहे हैं। सभी प्रतिमायें सजीव और शांतमुद्रा

Scanned with OKEN Scanner

में हैं। यहां प्रति वर्ष सिंजी आदि के जैन बन्धु मेला करते हैं। पाड़ बांधकर पञ्चामृत अभिषेक पूजन आदि, आरती भजन वगैरह करते हैं। इसके आगे पुन: लौटकर ठीक गुफा के सामने जाने पर निषिद्धि का स्थान है जो चारों ओर से लोहे की छड़ से घिरा है। इसमें तमिल भाषा में लिखित लिपि दो जगह है। कहते हैं दो आचार्यों का यह समाधि स्थल है इसके सामने एक सफेद पत्थर पर सरकार की ओर से लिखित प्रशस्ति है यह पहाड़ी गवर्नमेंट के अण्डर में है। प्रशस्ति निम्न प्रकार है।

Tirunathan Kunru:पहाड़ का नाम—

This hill called "Tirunathan Kunru" was a place of penance for the Jain nonks, from early times. According to one inscription Datable to Ist 2 cond (4th—5th) centuries A. D. found here, "one" Chandranandi Aririyar (Acharya) fasted unto Death in 57 days. Another inscription Datable to the 10th century A. D. records that one Ilaya Bhatarak also fasted for 30 days and died. So this hill like manyother hills of Tamil Nadu like Tirrumalia, Vallimalai ETC. Seems to have been the place of choosen for the jain Monks to do their Sallekhana Penance. The Row of sculptures on the face of the over handing rock represents the line of 24 Tirthankaraj.

इससे स्पष्ट होता है कि आचार्य श्री 108 चन्द्रनन्दी स्वामी ने 57 दिन का उपवास कर यहां समाधि सिद्ध की और ऐला भट्टारकाचार्य ने 30 दिन उपवास कर समाधि सिद्ध की। यह उत्तम तपोभूमि है। आज भी वही शांति यहां विस्तृत है।

सिंजी—

उपर्युक्त पहाड़ी से 3 कि.मी. दक्षिण में सिंजी शहर बसा है। यहां 20 घर दिगम्बर नैनारों के हैं। पर्वत का कार्य इन्हीं की देखभाल में

Scanned with OKEN Scanner

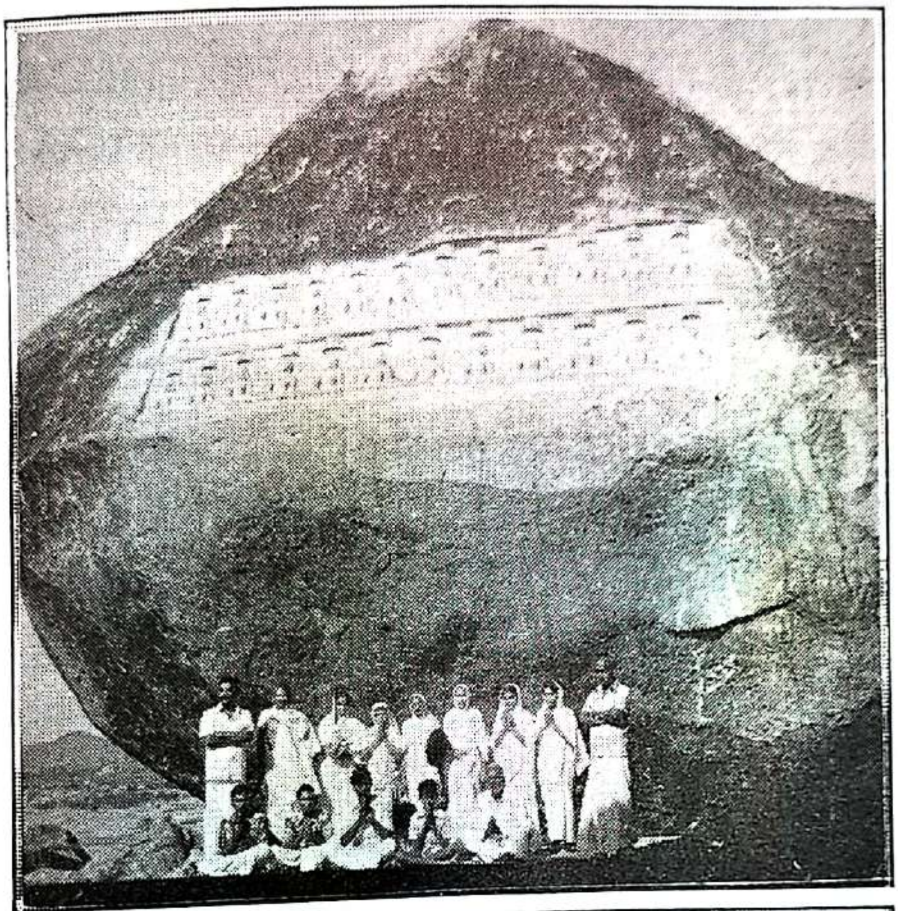

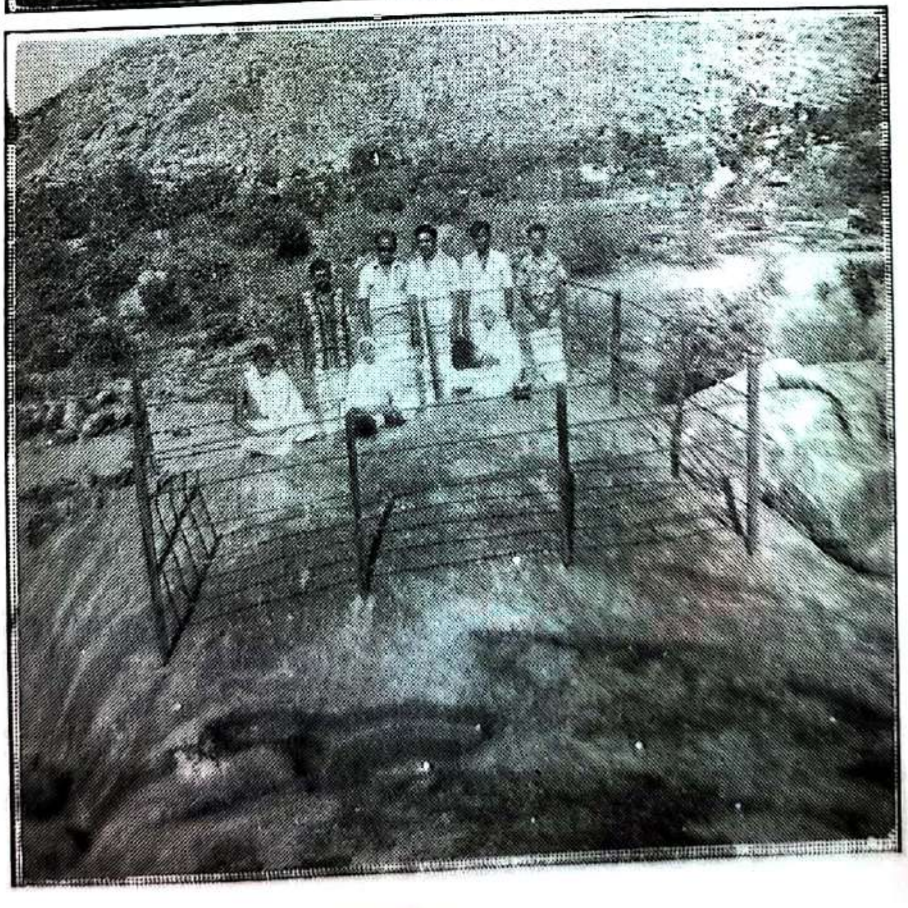

Scanned with OKEN Scanner

है। यहां भी एक जिनालय है जो पूरा ही ढेर हो रहा हैं। जीर्णोद्धार कार्य चल रहा था। मूलनायक आदिनाथ स्वामी के अतिरिक्त 25-30 जिन बिम्ब हैं, शासन देवी-देवता हैं, कुछ यंत्र भी हैं। सभी अस्त व्यस्त हैं। मंदिर पूरा ही ध्वस्त प्राय: है। बनाने का आश्वासन दिया है। लोग साधारण स्थिति में हैं।

पेरुम्पुगई—अतिशय—क्षेत्र—(Perumpugai-604202)

यहां विशाल जिनालय है। मूलनायक श्री मल्लिनाथ स्वामी हैं। श्रावकों के 30 घर हैं। मूल प्रतिमा काले पाषाण की है। पद्मासन है। यह प्रतिमा करीब 200 वर्ष प्राचीन है किन्तु बाहर की ओर श्री आदिनाथ स्वामी की प्रतिमा जी जो 2000 वर्ष पूर्व की बताई जाती है, अतिशययुक्त मनोज्ञ भव्य, अतिशयवान है। शासन देवी भी पाषाण की हैं। यक्ष-यक्षी हैं। इनके अलावा 29 प्रतिमायें धातु की हैं, जिनमें 23 जिन बिम्ब और शेष शासन देवी देवताओं की हैं। यहां अक्षय तृतीया महोत्सव देखा जो बहुत ही आकर्षक ढंग से मनाते हैं। प्रथम, बाजे से प्रत्येक श्रावक के घर जाकर भगवान आहार को निकल रहे हैं यह सूचना देते हैं। तदनन्तर 108 कलशों से अभिषेक पञ्चामृत से करते है पुन: रथोत्सव। रथ को स्वयं जैन बन्धु ही खींचते हैं। सायंकाल 108 दीपों से आरती करते हैं। गांव से $1^1/_2$ कि.मी. दूर पहाड़ी पर 1 विशाल गुफा है, जिसमें 18 साधुओं के सोने की सीट बनी है। इसमें अभी-अभी 108 निर्मल सागर जी, 108 शांति सागर जी और 108 वर्द्धमान सागर जी के चरण स्थापित करा दिये हैं। कुछ प्राचीन लेख भी यहां उत्कीर्ण हैं। यहां का मार्ग व्यवस्थित नहीं है। ऊपर तो शांत नीरव वातावरण है। मंदिर शोचनीय दशा में है। कुआं बगीचा सब है परन्तु भग्नावशेषरूप में हैं। 4-5 यन्त्र तमिल में हैं। यह Gingee से 6 कि.मी. है टिंडीवनम् रोड पर किन्तु बस रोड पर जहां छोड़ती है वहां से गांव 2 कि.मी. अन्दर है। बैलगाड़ी से या पैदल जाना पड़ता है। रोड है।

Scanned with OKEN Scanner

वीरणामूर— (Veeranamour-604203)

यह Gingee से उत्तर-पूर्व की ओर 20 कि.मी. है। टिंडीवनम् से 24 कि.मी. है। यहां से सीधी बस जाती है। वन्दवासी से 25 कि.मी. है। यहां से भी बस जाती है।

यहां श्री वृषभनाथ तीर्थङ्कर का जिनालय है। यहां पृथक जैन स्ट्रीट ही है, जिसमें 41 परिवार दिगम्बर जैन श्रावकों (नैनारों) के घर हैं। यहां का मन्दिर भी प्राचीन हजारों वर्षों का है। 500 वर्ष पूर्व जीर्णोद्धार हुआ था। इसमें 67 प्रतिमायें धातु की हैं। 5 पाषाण की । इनमें 4 धातु शासन देवता, 1 सरस्वती, 1 श्रुतस्कंध है, शेष तीर्थंकर प्रभु की है। सभी बिम्ब कला पूर्ण, सुन्दर और आकर्षक हैं। मन्दिर के बाहर परिक्रमा करते हुए पीछे की ओर एक विशाल, पद्मासन पाषाण की श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा है। कहते हैं यह मेघवर्षण का बिम्ब है। जब अनावृष्टि होती है तो यहां के लोग श्रद्धा भक्ति और विधिवत् इस प्रतिमा का पञ्चामृत अभिषेक पूजन भजन करते हैं और उस दिन से नियम से जलवृष्टि होती है। यहां का धर्मकर्त्ता ऋषभदास है! हमारे आदेशानुसार इस बिम्ब को शीघ्र अलग वेदी बनाकर स्थापित करने का वचन दिया है। इसके मन्दिर की बायीं ओर परिक्रमा में 3 कोठरियां हैं जिनमें क्रम से पद्मावती देवी, कुष्माण्डिनी और ज्वालामालिनी देवी विराजमान है। 1 छोटा सा छत्रम् (धर्मशाला) है जो कूड़ा कचरे से भरा है। मन्दिर 2000 (दो हजार) वर्ष पुराना है। अभी जीर्णोद्धार किया जा रहा है। श्रावक पूर्ण श्रद्धालु एवं परमभक्त हैं। यहां पाठशाला प्रारम्भ कराई है। अब जीर्णोद्धार होकर प्रतिष्ठा हो चुकी है।

Scanned with OKEN Scanner

टिण्डीवनं सर्कल (साउथ आर्काट जिला)

टिण्डीवनम् :—

यह बड़ा शहर है। एक बोर्डिंग है। इसमें ही श्री 1008 चन्द्र प्रभु भगवान की विशाल पद्मासन प्रतिमा अति मनोज्ञ है। यह 2000 वर्ष प्राचीन बताते हैं। इसकी ऊंचाई करीब 5 फीट है। यह प्रतिमा 60 वर्ष पूर्व पास के खेत में जमीन से निकली थीं। इसके अतिरिक्त 3 पार्श्वनाथ, 2 पञ्चपरमेष्ठी, 1 छोटी मूर्ति बिना चिन्ह की धातुमय भी हैं। 4 मूर्तियां पञ्च धातु की शासन देव देवियों की हैं। 1 पद्मासन देवी सफेद पाषाण की हैं। पहले बोर्डिंग में विद्यार्थी रहते थे और विद्यापीठ के रूप में अध्ययन करते थे। किन्तु इस समय कोई नहीं है, सिर्फ भगवान और पुजारी है। यहां 1 प्रतिमा पञ्चधातु की खड्गासन लगभग $1^1/_2$ फुट की जमीन से प्राप्त हुई थीं, 3-4 वर्ष पहले, जिसे मद्रास गवर्नमेन्ट ले गई। एक बार उत्सव के लिए दी थी, किन्तु मन्दिर आदि की समुचित व्यवस्था न होने से पुनः ले गई। यह अत्यन्त सुन्दर दर्शनीय प्रतिमा है। यदि चेष्टा करें तो पुनः प्राप्त हो सकती है। अभी नवीन जिनालय भी तैयार हो चुका है। सम्भवतः इस वर्ष ही प्रतिष्ठा हो जायेगी।

वीडूर (Veedure)—

यह भी प्राचीन नगरियों में एक है। यहां 51 घर दिगम्बर जैनों (नैनारों) के हैं। श्री 1008 आदिनाथ जिनालय है। यह लगभग 1500 वर्ष प्राचीन होगा। यह गांव दार्शनिकों का गांव कहा जाता है। तमिल के दर्शन शास्त्र विषयक ग्रन्थों का निर्माण यहीं हुआ था। Jain Philosphy Books यहीं लिखी गई, ऐसा कहा जाता है। इस समय भी ऋषभ जिनालय में लगभग 150 ग्रन्थ ताड़पत्र पर लिखे हैं जिनकी लिपि देखते ही बनती है। ये ग्रन्थ मणि प्रवाल, संस्कृत और प्राकृत

Scanned with OKEN Scanner

मिश्र में लिखे हैं। इस समय यहां के वाद्यार (पण्डित) भी उन ग्रन्थों को पढ़ने में समर्थ नहीं है। जिनालय में करीब 100 जिन बिम्ब हैं। ये जीवन्त के समान हैं। परन्तु सभी मूर्तियों की पूजा प्रक्षालन होती नहीं है। 1 धातु की गौतम गणधर की मूर्ति है। मूल नायक पाषाण निर्मित मनोज्ञ है। पूजा प्रक्षाल नहीं होने पर भी नवनिर्मित जैसी झलक है। यह गाँव टिण्डीवनम् से 24 कि. मी. दक्षिण में है। यहां अक्षय त्रतिया, पोंडाल और दशहरा पर सरस्वती पूजा आदि उत्सव करते हैं। प्रात: वाद्यार ही पूजा अभिषेक करता है और सायंकाल अष्टमंगल दीपार्चना होती है। श्रावक श्राविका मात्र दर्शक हैं बस।

विडूर के जिनालय में विराजमान 100 जिनबिम्बों का नाम—

1 वृषभादि अनन्त तीर्थङ्कर, 2 वृषभ स्वामी खड्गासन, 3 चन्द्रप्रभु पद्मासन, 4 वर्द्धमानस्वामी खड्गासन, 5 पार्श्वनाथ भगवान खड्गासन, 6 वृषभ स्वामी भगवान खड्गासन, 4 वृषभ स्वामी खड्गासन, 2 बाहुबली स्वामी, 1 पुष्पदन्त, 1 चतुर्मुख बस्ती मन्दिर 24 तीर्थङ्कर, 2 मेरु-1 बड़ा 1 छोटा, 1 सम्भवनाथ, 1 वृषभनाथ (अरुबलमौलीनाथम्), 2 महावीर, 1 वृषभस्वामी, 2 पार्श्वनाथ, 1 रत्नत्रय, 2 पुष्पदन्त, 1 शान्तिनाथ, 2 नन्दीश्वर, 3 नवदेवता, 2 त्रिकाल तीर्थङ्कर, 24 चतुर्विशंति बिम्ब, 2 चतुर्विशति बिम्ब, 1 पार्श्वनाथ चांदी के, 1 नवदेवता चांदी के, 25 बिम्ब चिन्ह नहीं, 2 शान्तिनाथ, 1 चन्द्रप्रभु।

पाषाण बिम्ब :— 1 नव देवता, 2 सुपार्श्वनाथ, 4 पार्श्वनाथ, 1 वर्द्धमान, 2 पार्श्वनाथ।

3 ब्रह्मदेव, 1 ज्वालामालिनी, 1 सरस्वती, 1 कूष्माण्डिनी, 7 धातु के शासन।

पुन :— 1 श्रुत स्कन्ध, 1 गणधर यन्त्र, 1 सिद्धचक्र यन्त्र

पैरनी (Pairany) :—

यह विडूर से 8 कि. मी. है। यहां लगभग 1500 वर्ष प्राचीन जिन भवन है। मूल नायक श्री 1008 पार्श्वनाथ स्वामी की भव्य

Scanned with OKEN Scanner

आकर्षक प्रतिमा है। यह अत्यन्त कलात्मक है। परन्तु अत्यन्त जीर्ण शीर्ण है। इसका जीर्णोद्धार होना अत्यावश्यक है। श्री कुष्माण्डिनी देवी और पद्मावती, धरणेन्द्र की अलग-अलग गुडी चवरी बनी हैं। सरस्वती देवी की धातु की प्रतिमा विशेष आकर्षक है। यहां कुल 20 जिन प्रतिमायें हैं, जो एक से एक भव्य हैं। 1 चौबीसी प्रतिमा पाषाण की है, कहा जाता है कि यह जमीन से निकली है, इसपर पहले 100 मन्दिर थे श्रावकों के घर कितने होंगे यह अनुमान लगाया जा सकता है। इस समय मात्र 25 घर दिगम्बर जैन नैनारों के हैं। बताया है कि अभी हाल में कुछ वर्ष पहले इस क्षेत्र में मन्दिर निकला था, जिसमें श्री 1008 खड्गासन पार्श्वनाथ, 1 पद्मासन पार्श्वनाथ, 1 पद्मासन महावीर स्वामी की, मूर्तियां मिलीं, जिन्हें सरकार ने अपने अण्डर में कर लिया। एक चौबीसी जिसे ये लोग ले आये मन्दिर में विराजमान है। इसे भी इस सन्देह से कि प्रतिष्ठित है कि नहीं जमीन में ही रखरक्खा था। अभी हमारे कहने पर वेदी में विराजमान कर दिया है। सफाई कुछ नहीं है।

पैराऊर (Paraore) :—

यह प्राचीन गाँव है। अति विशाल सम्भवत: 2000 वर्ष प्राचीन जिनालय है गोपुर प्रथम द्वार 5 मंज़िल का है। तामिलनाडू में प्राय: इसी प्रकार के देवालय द्वार हैं। 5 ही शिखर एवं कलश हैं। प्रथम ही मन्दिर में प्रवेश करते ही विशाल मानस्तम्भ 24 जिन बिम्बों से युक्त हैं। बायीं ओर श्री 1008 आदिनाथ जिनालय (गुडी) है। यह सुखासन, पाषाणमय सुन्दर है। मानस्तम्भ के आगे जाने पर विशाल मण्डप है पुन: प्रकोष्ठ है, जिसमें अभिषेक बिम्ब पद्मासन श्री महावीर स्वामी सफेद पाषाण की नवनिर्मित है। इसके बायीं और 39 धातु बिम्ब और 1 विशाल मनोज्ञ पाषाण बिम्ब श्री आदिनाथ स्वामी का है। दाहिनी ओर 33 जिन प्रतिमाएं हैं। 10 बिम्ब शासन देव देवियों के हैं। आजू बाजू में ब्रह्मदेव और श्री धर्म देवी हैं। फिर अन्दर जाकर मूलनायक जिन के दर्शन होते हैं। यहाँ एक अनोखा दृश्य है कि एक ही पीठ

Scanned with OKEN Scanner

में श्री बाहुबलि और भरत की खड्गासन मूर्तियां एवं मध्य में चक्र रत्न है। बिम्बों की ऊंचाई 7 इंच होगी, अद्वितीय बिम्ब है। 1 गणधर, 1 नन्दीश्वर, 1 त्रिकाल चौबीसी, 3 मेरु, 1 श्रुत स्कन्ध है। एक अति प्राचीन चतुर्मुखी पाषाण प्रतिमा बहुत ही छोटी एवं सौम्य हैं। ब्रह्मदेव और धर्म देवी की प्रतिमाएं भी पाषाण की हैं। परिक्रमा में मन्दिर के पीछे ब्रह्मदेव की छोटी सी गुडी है, जिसके आगे अरगन लगी है। भीतर से तो मन्दिर कुछ अच्छा है, परन्तु बाहर से सर्वत्र टूटा फूटा पड़ा है। मुख्य द्वार के बायीं और विशाल मंडल जो संभवत: स्वाध्याय शाला होगी, जीर्ण दशा में पड़ी है। यहां 30 दिगम्बर जैन परिवार हैं। ध्यान रहे तमिल में सर्वत्र सब दिगम्बर ही हैं। पीछे से होने वाला श्वेताम्बर कोई नहीं। श्री पद्मावती देवी जी का इसके सामने स्वतन्त्र पृथक मन्दिर है। यहां के लोगों की स्थिति प्राय: अच्छी है, परन्तु धर्म भावना अति हीन है। जिनालय का उद्धार होना चाहिये।

उप्पूवैल्लूर Uppuvellore (दक्षिणआर्काट जिला) :—

यह 40 जैन परिवारों का गांव है। यहां पहले का एक जिनालय है। यहां के जैन बंधु धर्मात्मा, सम्पन्न एवं अपनी परम्पराओं के कट्टर अनुयायी हैं। 5-6 वर्ष पूर्व जिनालय का जीर्णोद्धार किया है। यह विशाल, विस्तृत और अपने ही शान का है। हां बाह्य परिक्रमा का हिस्सा अवश्य जीर्ण शीर्ण हो रहा है। कहते हैं श्री प्रसिद्ध जिन सेनाचार्य ने यहां धर्मोपदेश दिया था और कुछ लोगों के कथनानुसार उनकी समाधि भी यहीं हुई थी। इस समय सामाजिक विरोध अधिक है।

मूल नायक श्री 1008 आदिनाथ स्वामी हैं। 5-6 फीट की सुखासन पाषाण बिम्ब है। अभिषेक बिम्ब छोटा होने पर भी विशेष रम्य है। इसके दाहिनी ओर 24 प्रतिमायें एक माप की चौबीस तीर्थंकरों की धातु की विराजमान हैं, ये खड्गासन है। 16 अन्य धातु की हैं। ये भी खड्गासन हैं। बायीं ओर 28 जिन बिम्ब हैं। बाहुबली स्वामी सप्त धातु के हैं। 1 सिद्ध, 9 नवदेवता, 9 पाषाण बाहुबली स्वामी नवनिर्मित हैं। 6 शासन देव देवियां धातु के हैं। 3 पाषाण के हैं। मुख्य द्वार में

प्रवेश करते ही दाहिनी ओर क्षेत्रपाल जी का मंदिर है। गर्भ गुडी के सामने विशाल मानस्थम्भ है। गोपुर सुन्दर है। चारों ओर जिन बिम्ब है। मन्दिर द्वार पर श्री पार्श्व प्रभु की पद्मासन मनोहर प्रतिमा है। यहां अष्ट मंगल पूजा दीपार्चना प्रतिदिन होती है।

आलग्राम (Alagramum 604302) :—

यह पैरनी से 90 कि.मी. है। तिण्डीवनम् से 20 कि. मी. दक्षिण पूर्व में है। यहाँ श्री वृषभनाथ जिनालय है। यह वृहद् बाउण्डरी में है। उत्तर द्वार से पूर्व द्वार की ओर आने पर जिन बिम्ब का दर्शन मिलता है। उत्तर द्वार के ठीक सामने दीवाल में श्री वीर निर्वाण के 2500 वें महोत्सव पर निर्मित धर्म चक्र स्तूप है जो छोटा होकर भी आकर्षक है जिनालय एक कोट के समान मजबूत है। पूर्व द्वार के सामने तांबे के चादर मढ़े मजबूत स्थम्भ हैं, जिसमें धातु की पताका और घण्टियां लगी हैं। मन्दिर के बाईं ओर 3 कोठरियां हैं— 1 नैवैद्य बनाने की **(यहां प्रत्येक मन्दिर में प्रतिदिन नैवैद्य पूजा होती है, जो मन्दिर में ही पुजारी बनाता है)** दूसरी धर्म देव की और 3 धर्म देवी की है। मूलनायक आदि श्री आदिनाथ स्वामी पल्यकासन काले पाषाण की है। ठीक इसी के सामने एक छोटी मूर्ति है जिसका प्रतिदिन पञ्चामृत अभिषेक या क्षीराभिषेक दूध का अभिषेक होता है। मूलनायक भगवान का मात्र जलाभिषेक किया जाता है। शेष भगवान का न अभिषेक न प्रक्षाल ही करते हैं। यह प्रथा इस क्षेत्र में सर्वत्र है। समस्त जिन प्रतिमायें 84 हैं। इनमें 2 पञ्च परमेष्ठी, 2 नव देवता, 3 श्रुत स्कन्ध, 1 तीन चौबीसी 2 चौबीसी हैं, इसके अलावा पृथक् पृथक् 1-1 भगवान की 24 मूर्तियां हैं। एक पंक्ति में समान रूप से विराजित ऐसी लगती हैं, मानों सिद्धालय में सिद्धात्मायें विराजमान हैं। एक काले पाषाण की गणधर भगवान की भव्य प्रतिमा जप मुद्रा में पीछी कमण्डलु सहित हैं। वीर नि. 2500 का धर्म स्तूप यहां का सर्वोत्तम है। 1 मेरु भी धातु का है। मन्दिर के पीछे परिक्रमा में विशाल करीब 30 फीट ऊंची पाण्डुक शिला बनी है, जिसमें विशेष उत्सवों में श्री भगवान का

Scanned with OKEN Scanner

महाभिषेक होता है। विशाल रथ, पालकी एवं रथोत्सव यात्रा के अन्य उपकरण भी हैं। अभिषेक और सायंकाल आरती के समय शहनाई बजाते हैं। सभी श्रावक भक्त हैं। उपदेश सुनने के इच्छुक भी हैं, परन्तु पूजाभिषेक नहीं करते हैं। यहां नैनारों के 40 घर हैं। सुधर्म सागर मुनि के यहां 2 चातुर्मास भी हुए हैं।

यहां ब्रह्मोत्सव जुलाई में, अक्षय त्रितिया, पोंगल एवं नवरात्रि महोत्सव प्रमुख रूप से मनाते हैं। टिण्डीवनम् से बस मिलती है।

सेंडीपाक्कम :—

यह आलिग्राम से 4 किलोमीटर है। छोटा सा गांव है। सभी कृषक हैं। यहां 25 घर जैन दिगम्बरों के हैं। 1 मन्दिर है जिसका जीर्णोद्धार हो रहा है, अभी पर्याप्त कमी है। मूलनायक सफेद पाषाण की नवीन प्रतिमा विराजमान की है। शेष 17 जिन बिम्ब प्राचीन और सुन्दर हैं। ये सभी धातु की मूर्तियां हैं। सभी कृषक हैं और समय-समय पर ब्रह्मोत्सव,पोंगल आदि उत्सव मनाते हैं। पूर्णिमा, चतुर्दशी आदि व्रत भी करते हैं।

पेरुमण्डूर (Perumundur) अतिशय क्षेत्र :—

यह अति प्राचीन और धार्मिक नगरों में एक है। यहां विद्वानों का वास रहा था। पठन पाठन, अध्ययन अध्यापन का केन्द्र रहा होगा, क्योंकि यहां ताडपत्र पत्र लिखित हजारों ग्रंथ संग्रहीत हैं। यहां दो जिनालय हैं— 1 श्री आदीश्वर कोइल (मन्दिर) है और 2 चन्द्रप्रभु कोइल—जिनालय। मूलनायक सफेद पाषाण की लगभग 2 फीट की पद्मासन अत्याकर्षक बिम्ब है। धातु की हजारों मूर्तियां हैं, कुछ वेदी में और कुछ आलमारी में भरी हैं, कोई समुचित व्यवस्था नहीं है। कहा जाता है कि "मैंलापुर के मंदिर से हजारों मूर्तियाँ यहां लाई गई हैं।" "स्वप्न में विदित हुआ कि यह गांव जलमग्न हो जायेगा।" बस सब बिम्ब लाये गये और गाँव बह गया। यहाँ एक मौरेना गुरुकुल में अध्ययन कर आये धर्म चक्रवर्ती शास्त्री ने बतलाया कि यह जिनालय 2000 वर्ष से भी अधिक प्राचीन है। कुष्माण्डिनी माता की मूर्ति

कलात्मक दर्शनीय है। अन्य सैकड़ों शासन देवी देवता हैं। श्री साहू शान्ति प्रसाद जी द्वारा प्रदत्त धनराशि से पार्श्वनाथ मन्दिर का जीर्णोद्धार हुआ है किन्तु यह पर्याप्त नहीं है। दोनों ही मंदिरों के शिखर विशिष्ट कला पूर्ण और अत्यन्त उन्नत हैं। तमिल के 5 महाकाव्यों में 3 महाकाव्यों का यहीं सृजन हुआ था। एक विशाल मान स्थम्भ और एक ध्वज स्थम्भ भी है। यहाँ आचार्य निर्मल सागर जी आये थे। वे गांव से नाति दूर मैदान में ध्यान करते थे। उस स्थान पर उनके चरण स्थापित करा दिये हैं। इससे ग्रामीण श्रावकों की अटूट मुनि भक्ति का परिचय प्राप्त हुआ। किन्तु इस वर्ष महा दुःखद घटना हो गई है। यहाँ नवरात्रि में दशहरा के दिन सरस्वती पूजा करते हैं, उस समय शास्त्रों को खोलकर देखते हैं। इस समय क्या हुआ, सभी आलमारियों में यथा योग्य ताले बंद थे, खोलने पर आलमारियाँ रिक्त पड़ी मिली। समाज में हाहाकार मच गया। सर्वत्र शोक सा छा गया। छानबीन करने पर पता चला कि धर्म चक्रवर्ती शास्त्री जैन ने ही सब ग्रंथ निकाल कर 1 लक्ष रुपये में बेच दिये। यह कृत्य न केवल शास्त्री को कलंक है। अपितु समस्त दिगम्बर जैन समाज के लिए अशोभन है। यहां लगभग 60 दिगम्बर जैन परिवार हैं। छोटे मन्दिर की दशा अधिक दयनीय है। यहाँ की देखभाल करना अधिक आवश्यक है, अन्यथा आगम ग्रन्थों के समान मूर्तियों के साथ भी दुर्घटना होना सम्भव है। छोटा मन्दिर 11वीं शताब्दी का कहा जाता है, शिलालेख भी है। दूसरा बड़ा मन्दिर करीब 200-300 वर्ष प्राचीन कहा जाता है। इसी के चारों ओर जैनियों का निवास है। श्री पुराण भी यहीं लिखा गया था। अब इनका पर्याप्त सुधार हो गया है। जिनालयों की व्यवस्था अच्छी चल रही है।

यह टिण्डीवनम् से करीब 20 किलोमीटर है। यहाँ से बस मिलती है जो कुछ दूर पर छोड़ देती है।

विलुक्कम :—

यहां 1 विशाल जिनालय है। परन्तु कण्डीशन अच्छी नहीं है। एक मानस्थम्भ है। मूलनायक श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान हैं। 1 चाँदी

की $1\frac{1}{2}$ फीट की पार्श्वप्रभु की प्रतिमा जी हैं। 1 नवदेवता भी रजत निर्मित हैं। एक पञ्चपरमेष्ठी की प्रतिमा चांदी की है शेष लगभग 100 से ऊपर धातु की प्रतिमायें हैं। यहां सर्वत्र अधिकांश मूर्तियां समवशरण सदृश प्रभा मंडलयुक्त हैं, जो भारत के अन्य भागों में नही पायी जाती हैं। जिनालय के सामने ध्वजदण्ड धातु का है और ध्वजा भी धातु की है। गोपुर में चारों ओर उकेरी हुई प्रतिमायें हैं। यहां लगभग 15-20 दिगम्बर जैन नैनार परिवार हैं। प्रतिदिन पूजा और आरती वाद्यार ही करता है।

मेलचित्तामूर (Melsithamoor) अतिशय क्षेत्र :—

तमिलनाडू में उभय धर्म के प्रमुख संचालक या संरक्षक भट्टारक पट्टाचार्य माने जाते हैं। धार्मिक संस्कार, परम्पराओं का प्रवर्तन इनके हाथ में रहता है। ये समाज के धर्माचार्य गृहस्थाचार्य कहलाते हैं। ये मठाधीश होते हैं। प्राचीन काल में यह जैन मठ काँजीवरम् में था। परन्तु इस समय यहां मेलचित्तामूर में यह मठ स्थापित है। यद्यपि यह एक विशाल वृहद् और विस्तृत रूप में राजकीय ढंग का है किन्तु अव्यवस्थित है। यत्र तत्र से टूटा फूटा जीर्ण शीर्ण हो गया है। इसके संचालक श्री लक्ष्मी सेनजी पट्टाचार्य स्वामी जी हैं। वृद्ध, नवीन और अनुभवहीन है। अत: धार्मिक क्रिया काण्डों में कुछ शिथिलता हो रही है। जो हो यहाँ 2 मन्दिर हैं, इनमें एक प्रथम जिनालय विशाल और कलात्मक ढंग से बना है। मुख्य गोपुर द्वार 7 मंजिल का है। जिनमें धूप ताप से त्रसित कषि समूह एवं पक्षी गण विश्राम पाते हैं। मन्दिर के सामने बहुत बड़ा लम्बा चौड़ा मैदान है जिसमें पाण्डाल लगा कर धर्म सभा, धर्मोत्सव आदि होते हैं। यहां महावीर जयन्ती के अवसर पर 10 दिन तक ब्रह्म महोत्सव होता है। इसमें हजारों नर-नारी आते हैं। सबका भोजन प्रबन्ध मठ की ओर से ही होता है। दस दिन पर्यन्त प्रतिदिन रात्रि को श्री जिन रथोत्सव निकलता है, जो अपने ढंग का होता है। प्रथम श्री प्रभु की पालकी सजाते हैं, उसमें श्री जी को विराजमान कर प्रतिदिन नवीन-नवीन वाहनों पर आरूढ़ कर रथ विहार कराते हैं। आगे पीछे ब्रह्मदेव, देवी की पालकी जाती है। प्रतिदिन

Scanned with OKEN Scanner

पञ्चामृत पूजाभिषेक सायंकाल अष्ट मंगल द्रव्यार्चना होती है। अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होते हैं। सभी कार्य स्वामी जी की देख रेख और आज्ञानुसार होते हैं।

बड़ा मन्दिर— यह जिनालय ठीक मठ के सामने ही उन्नत शिखर से शोभित है। प्रथम द्वार में प्रवेश करते ही दाहिनी ओर विशाल सभा मण्डप है। इसकी कला देखते ही बनती है। स्तम्भों पर श्री सम्मेद शिखर, तीन चौबीसी, दिगम्बर मुनिराज, आर्यिकायें, यक्ष-यक्षी आदि पाषाण में उकेर कर बनाई गई हैं। बाहर की ओर जिनमाता बालक सहित, सोलह स्वप्न, चन्द्र गुप्त के 16 स्वप्न, देव देवियां आदि मूर्ति रूप में अंकित हैं। मण्डप के अन्दर की ओर प्रत्येक खम्भे में चतुर्विंशति तीर्थङ्कर चिन्ह सहित अंकित हैं। नवग्रह, 28 नक्षत्र आदि भी चित्रित हैं। ये सभी पाषाणों में उत्कीर्ण हैं, सौम्य हैं, आज बनायें हों, ऐसे लगते हैं। इसी मण्डप में धर्म सभायें होती हैं, ठीक इसी के सामने विशाल मानस्तम्भ है, उसके आगे धातु की ध्वजा सहित ध्वज दण्ड है। प्रमुख द्वार के बायीं ओर नव निर्मित श्री बाहुबली स्वामी की 5 फीट खड्गासन कृष्ण पाषाण की मनोज्ञ प्रतिमा है, जिसका भव्य भवन श्रीमान् **सेठ ताराचन्द्र जी बगड़ा सेलम निवासी ने बनवाकर सातिशय पुण्यार्जन किया है।** इसी की बगल में 2500 वें निर्वाण दिवस की स्मृति में धर्मचक्र और दूसरी ओर मंगल कलश स्थापना हमारे (श्री 105 प्रथम गणिनी आर्यिका विजयामती माताजी) संघ सानिध्य में शिलान्यास करवाकर बनवाये हैं।

पुनः दूसरा मण्डप आता है। इसके दाहिनीं ओर श्री नेमिनाथ स्वामी का जिनालय है। यह प्रतिमा काले पाषाण से निर्मित खड्गासन $3^1/_2$ फीट मानो भव्य प्राणियों को सदुपदेश दे रही हैं। यह अतिशय कारक है। भट्टारक जी द्वारा पता चला कि मद्रास में समुद्र किनारे पर मैलापुर नामक एक स्थान है। वहाँ नेमिनाथ भगवान का जिन मन्दिर था समुद्र के प्रकोप से वह मन्दिर पानी में डूबने वाला था तब वहां के श्रावकों ने इस मूर्ति को यहां लाकर सुरक्षित किया है।

Scanned with OKEN Scanner

इसके साथ यक्ष-यक्षी धातु की मूर्ति भी थीं किन्तु यक्ष तो श्रवण बेलगोल पहुंच गये और श्री प्रभु यहीं रह गये। आज भी इनका महान अतिशय है। प्रतिमा के दर्शन मात्र से परिणाम शुद्धि शान्ति और आनन्दानुभव होता है। इसी जिनालय में 25 प्रतिमायें अन्य धातु की एवं एक पाषाण की प्रतिमा है। इसकी परिक्रमा में घुसते ही बायीं ओर क्रमशः 5 मन्दिरों, छोटी गुमटियां श्री क्षेत्रपाल बाबा की, 2 गणधर स्वामी की, 3 सरस्वती माता जी की एवं 5 श्री ज्वालामालिनी शासन देवी जी की हैं। पिछले भाग से घूमकर आने पर पुनः बायीं और एक जिन भवन है, जिसमें अति प्राचीन 2500 वर्ष पूर्व की पाषाणमय 7 प्रतिमायें हैं, जिन्हें जमीन से निकली बताते हैं। इसके बाहर नवग्रहों की मूर्तियां और बीसों चरण पादुकायें हैं। इसके दाहिनी ओर ब्रह्मदेव का मन्दिर है। परिक्रमा के कोटे से दरवाजा खोलने पर पुनः एक परकोटा है। जहाँ विशाल पाण्डुक शिला है, जिसके चारों ओर बैठकर हजारों लोग जिनाभिषेक देख सकते हैं। पुनः परिक्रमा पूरी कर तीसरे द्वार में प्रवेश होता है। यहां दाहिनीं ओर कूप है और चार दीवारी के उस ओर पुष्प वाटिका है। 3—4 सीढ़ियाँ चढ़कर मण्डप है (यहां प्रत्येक वेदी के सामने मण्डप रहता है)। दाहिनीं ओर श्री कुष्माण्डिनी देवी का मन्दिर है। सामने तीसरे दरवाजे में प्रवेश करते ही सहस्त्रकूट चैत्यालय दाहिनी ओर है। यह पूरा अष्ट धातु का है, जो पूरे भारत में एक ही है। 24 प्रतिमायें अलग-अलग 24 भगवान की हैं। 1 तीन चौबीसी, 1 नवदेवता, 1 पञ्च परमेष्ठी, 1 मेरु भी धातु का ही है। पुनः चौथे दरवाजे में प्रविष्ट होने पर मूलनायक श्री पार्श्वप्रभु फणाटोप युत काले पाषाण निर्मित प्रभु के दर्शन होते है। यह सुविशाल बिम्ब पद्मासन $3^{1}/_{2}$ फीट है। प्रतिमा के पृष्ठ पर श्रुत स्कन्ध वृक्ष है। इनके सामने 8-10 मूर्तियां धातु की एवं एक छोटी पार्श्वनाथ प्रभु की है। ऊपर छत पर जाने के लिए सीढ़ियां हैं। गोपुर के ऊपर शिखर की पोल में गुफा है, जिसमें कई जिन प्रतिमायें रंगीन बनाकर विराजमान है। सम्भवतः ये जैनेतर लोगों के सन्तोष के लिए बनवाई गई होगी।

इस मन्दिर के सामने मठ है, जिसमें प्रवेश करने पर बायीं ओर एक कोठे में काठ की आलमारी में जिन बिम्ब विराजमान हैं। इनमें चांदी, स्फटिक मणि, पच्चा, कच्चापन्ना आदि की हजारों वर्ष प्राचीन मूर्तियां हैं। पार्श्व प्रभु पीठ सहित रजत के हैं। ऐसी आकृति कहीं देखने में नहीं आई। पुनः ऊपर तीसरी मंजिल पर एक चैत्यालय है। इसमें धातु के छोटे मॉडल में श्री सम्मेद शिखर जी की रचना है। 1 स्फटिक बिम्ब और दो चांदी के धरणेन्द्र पद्मावती तथा अन्य 12 मूर्तियां हैं। इनका पूजा प्रक्षाल न होने से काली हो रही हैं, जाले लगे हैं। भट्टारकजी तो बेचारे वृद्ध हैं और पण्डितों का राज है। जो भगवान के भक्त न होकर विशेषतः पेट के भक्त हैं। मठ का विस्तार काफी है, कोई व्यवस्था नहीं है।

दूसरा छोटा मन्दिर श्री मल्लिनाथ स्वामी का है। इसका तो हाल बेहाल है। साफ सफाई का कोई प्रबन्ध नहीं है। पूजा अभिषेक का भी ठिकाना नहीं है। चारों ओर धूल छायी है। फर्श भी टूटा-फूटा पड़ा है। इसमें दीवाल में उकेरी 5 मूर्तियां हैं, ऊपर साधु परमेष्ठी की प्रतिमा है। 1 सफेद नित्य पूजा बिम्ब है। यही प्राचीन अधिक है। सभवतः 200 वर्ष पूर्व का है। दूसरा लगभग 100 वर्ष प्राचीन होगा। मठ में सैंकड़ों ताड़पत्र ग्रन्थ हैं जो सिंद्धान्त शास्त्र, तन्त्र, मन्त्र आदि के हैं। इनके अलावा सैंकड़ों हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नड भाषा के ग्रंथों का भी संग्रह है। परन्तु इनके रखने का कोई प्रबन्ध नहीं है। सभी कूड़े के ढेर के समान जमीन पर जमा हैं। देखते ही हार्दिक पीड़ा होती है अनेकों ग्रन्थ तो हाथ का स्पर्श होते ही चूर-चूर हो जाते हैं।

यह टिंडीवनम् से 20 कि. मी. है। बस जाती है। साधारणतः यात्रियों को मठ में ठहरने की व्यवस्था है। अभी-अभी एक सम्यग्ज्ञान पाठशाला भी चालू हुई है। यहाँ श्रावकों के लगभग 60 घर हैं। सभी धर्मप्रेमी हैं।

Scanned with OKEN Scanner

मेलचित्तामूर मठ के जिनबिम्बों का नामोल्लेख—

चांदी के बिम्ब—

पार्श्वनाथ स्वामी—3, चतुर्विंशति बिम्ब—1, पञ्चपरमेष्ठी—1, नेमिनाथ—2, आदिनाथ—2, नवदेवता—1, नन्दीश्वर—1, मेरु—1, श्रुत स्कंध—1, मुनिपाद—1

स्फटिक मणि बिम्ब—

चिन्ह विदित नहीं ऐसे 6 स्फटिक बिम्ब हैं

हरितमणि (पच्चैमणि) 1 बिम्ब है

इस प्रकार चांदी और मणियों को मिलाकर 21 प्रतिमायें हैं।

पुनः-	सिद्ध चक्रयन्त्र	1	पाषाण पार्श्वनाथ 2 हैं
	ज्वालामालिनी यन्त्र	1	
	दश लक्षण यन्त्र	1	
	चांदी के यन्त्र	3	

अगलूर—(Agaloor)

यह दक्षिण आरकोट जिले में है। यहां 40 घर दिगम्बर जैनों के हैं। 1 प्राचीन जिनालय है, अभी 75 वर्ष पूर्व जीर्णोद्धार हुआ है तो भी हालत संतोषप्रद नहीं है। मन्दिर के सामने एक मानस्थम्भ है जिसमें 4 कटनी में 16 जिन बिम्ब चारों ओर हैं। पुनः सबसे ऊपर चंवरी में 4 बिम्ब है, इस प्रकार सब 20 बिम्ब हैं। पुनः एक बराण्डा है, जिसमें आदि पुराण के अनुसार आदीश्वर प्रभु के 10 भवों की भवावली एवं भरत बाहुबलि जी का संक्षिप्त परिचय के चित्र दीवालों पर हैं। पुनः द्वार में प्रवेश कर गर्भ गृह आता है। यहां 76 मूर्तियां धातु की एक से एक उत्तम हैं। 4 प्रतिमायें पाषाण की हैं। मूलनायक श्री आदि नाथ हैं। पीतल के मेरु, गणधर, सरस्वती, पञ्चपरमेष्ठी, नव देवता, शासन देवी, देवता आदि अनेक हैं। ताड़पत्र के शास्त्र भी हैं। जिनका प्रकाशन आवश्यक है। परिक्रमा साइड में 5—6 कमरे टूटे फूटे पड़े हैं, 1 हॉल भी है संभवतः यह स्वाध्याय शाला होगी 1 यन्त्र चांदी का है और 20—25 ताम्बे के हैं। ये कौन-कौन से हैं, मालूम नहीं क्योंकि हमें यह भाषा नहीं आती। मन्दिर का पुनर्निर्माण होना चाहिए।

Scanned with OKEN Scanner

अत्तिपाकम्—

यहां 2 मन्दिर हैं। 1 अनन्तनाथ कोयिल (मन्दिर) और दूसरा श्री महावीर जिनालय । बड़े मंदिर—अनन्तनाथ जिनालय में 25 मूर्तियां धातु की हैं और 5 पाषाण की। 1 चांदी की सौम्य पीठ सहित निराली प्रतिमा है। 4—5 शासन देव देवियों की मूर्तियां हैं। यह प्राचीन और विशाल जिनालय है। व्यवस्था का अभाव होने से सायंकाल अष्टमंगल दीपार्चना या सामान्य दीपार्चना भी नियमित रूप से नहीं होती है। दूसरा मन्दिर महावीर स्वामी का नवीन बना है। इसमें केवल एक ही प्रतिमा है। लगता है आपसी वैमनस्य से इसे बना लिया है। 3—4 ताड़पत्र ग्रन्थ हैं जो पूरी तरह गल चुके हैं।

नेमेली—प्राचीन जिनालय—

अत्तिपाकम् से 1 कि.मी. है। यहां अभी नवीन मंदिर बन रहा है जगह प्राचीन है। 19 प्रतिमायें हैं। मूल जिनबिम्ब नेमिनाथ स्वामी का है। 3 शासन देवी-देवताओं की मूर्तियां हैं। सभी धातु की हैं। लगभग 2000 वर्ष पुराना कहा जाता है। जगह काफी लम्बी चौड़ी पड़ी है। लाखों रु. लगाने पर बेजोड़ जिनालय बन सकता है। यहां 30 परिवार (Families) हैं।

वेल्लिमेडुपेट्टै — (Vellimedupettai-604207)

यहां जिनालय विशाल, शोभनीय और प्रशस्त है, इसके सामने 1 मानस्तम्भ है, 1 श्री पद्मावती देवी जी का मन्दिर है। सब 30 जिन प्रतिमायें हैं। 5 शासन देवी देवताओं के बिम्ब हैं। मूल भगवान अनन्तनाथ स्वामी हैं। पद्मावती देवी सफेद पाषाण की अति मनोरम हैं। यक्ष-यक्षी धातु के हैं। 1 धर्म देवी काले पाषाण की है। जिनालय की दशा साधारण है। 30 परिवार (Faimilies) दिगम्बरों के हैं, जो धर्मप्रेमी, श्रद्धालु जिनवाणी श्रवणोत्सुक हैं। यहां पाठशाला प्रारम्भ कराई है। यह टिन्डीवनम् से उत्तर में 10 कि.मी. है। टिण्डीवनम् वन्दवासी रोड पर स्थित है।

Scanned with OKEN Scanner

पांडिचेरि (यूनियन प्रदेश)

पांडिचेरी—(Pandichairy)

यहां मारवाड़ी दिगम्बर जैन के 60 घर हैं। 2 मन्दिर इन्हीं के द्वारा स्थापित हैं। 1 छोटे चैत्यालय में 3 प्रतिमायें श्री पार्श्वनाथ स्वामी, श्री आदि प्रभु (खड्गासन) श्री महावीर स्वामी हैं। सभी धातु बिम्ब हैं। दूसरे मंदिर में 4 प्रतिमाएं हैं। 1. महावीर स्वामी, 2. शांतिनाथ, 3. सिद्ध, 4. पार्श्वनाथ भगवान हैं, और अभी महावीर जयन्ति के दिन मेलचित्तामूर से श्री नेमीनाथ स्वामी बिम्ब पद्मासन सफेद पाषाण का लाकर विराजमान किया है। ये दोनों किराये के मकान में रखे। नवीन पञ्चायती जिनालय बन रहा है। वर्ष 1984-85 में पूर्ण होकर प्रतिष्ठा होने की संभावना थी। नवीन मन्दिर हमारे चातुर्मासकाल में ही निर्मित हो गया और पंचकल्याणक प्रतिष्ठा भी अत्यन्त वैभव व प्रभावना के साथ हो गई। इसके अलावा प्राचीन मन्दिर भी है और चैत्यालय भी निजि हो गया है। सभी खुशहाल हैं।

Scanned with OKEN Scanner

कडलूर सर्कल (दक्षिण आर्काट जिला)

ओटी—कडलूर—(Cudllore)

यह नगरी बहुत प्राचीन है। यह स्थान जैन स्ट्रीट (Jain street) नाम से प्रसिद्ध है। यहां 300 श्रावकों के परिवार थे। इस समय केवल तीन घर हैं। एक जिनालय श्री 1008 आदिनाथ जिनालय है। यह प्रतिमा 1500 वर्ष प्राचीन है। अत्यन्त चमत्कारी अतिशयवान खड्गासन बड़ी ही मनोज्ञ है। शांत और सौम्य छवि है। जिनालय की प्रतिष्ठा भाद्र सुदी सप्तमी सन् 1891 वें में हुई थी। कहते हैं कडलूर एन. टी. में इस समय विशाल वैष्णव मन्दिर है—यह जैन का था और इसी में से इन भगवान को किसी प्रकार छुपाकर लाये थे। यहां बहुत अत्याचार हुआ, हजारों जैन साधु साध्वियों को कत्ल कर दिया गया था। जो भी हो प्रतिमा विशेष आकर्षक और अतिशयपूर्ण हैं। इसमें मुख्य मन्दिर के बायीं ओर एक और वेदी है, जिसमें 11 जिन प्रतिमायें पीठ सिंहासन सहित खड्गासन हैं। इसके भी बायीं ओर क्रमशः 4 वेदियाँ हैं—पहली वेदी में पद्मावती अम्मन्, धरणेन्द्र, यक्ष यक्षीयर ब्रह्मदेव, धातु के हैं। दूसरी वेदी में पाषाण के ब्रह्मदेव, क्षेत्रपाल हैं, तीसरी वेदी में धर्म देवी यक्षी और चौथी वेदी में तीन यक्ष-यक्षी हैं। प्रधान आदिनाथ जिनालय में सबसे भीतर जो मूलनायक आदिनाथ भगवान हैं, उनके आगे 11 प्रतिमायें धातु की, लकड़ी के मन्दिर द्वार समान बनाये आलों में विराजमान हैं। एक सरस्वती देवी, एक ज्वालामालिनी, 1 धरणेन्द्र, 1 पद्मावती, 1 श्याम यक्ष, 1 सफेद पाषाण की मूर्ति भी हैं। इनके अलावा एक आलमारी में चांदी की 3 प्रतिमायें हैं, पार्श्व प्रभु स्वामी की। जिनमें 1 खड्गासन करीब 7 इन्च की अष्ट प्रातिहार्य—पीठ सहित अत्यन्त ही निराली, दर्शनीय, सौम्य एवं आकर्षक है। दूसरी पद्मासन

Scanned with OKEN Scanner

पीठ सहित है। तीसरी $1^1/_2$ इंच की है जो खड्गासन गरुडासन में विराजमान है। पहले 3 मूर्तियां स्फटिक मणि, एवं मूंगा की थीं, जिन्हें श्री निर्मलसागर जी ले गये बताया। यह जिनालय छोटा है, शिखरबन्द है। हालत बहुत शोचनीय है। हमारा चातुर्मास होने से कुछ सुधार हुआ है। इसका मालिक श्रीपाल नैनार है जो जीर्णोद्धार नहीं होने देता है। इसका जवांई देव कुमार नैनार है जो विशेष धर्मात्मा उदार और भक्त है, इसने जीर्णोद्धार कराना प्रारम्भ किया है। शीघ्र ही सुधार होने की

Scanned with OKEN Scanner

सम्भावना बनी थी। वर्तमान में जीर्णोद्धार हो शुद्धि भी हो गयी है।

पनरौटी—(Panrouti) दक्षिण आर्काट जिला—

यह प्राचीन नगर है। यहां जैन और जिनालय अवश्य रहे होंगे। इस समय दिगम्बर मारवाड़ियों के 6 घर हैं। सभी धर्मात्मा और भक्त हैं। हमारे उपदेश से मंगसिर वदी 3 बुधवार ता. 7.12.83 को श्री 1008 पार्श्वनाथ चैत्यालय की स्थापना की है। जगह मोल मिलने पर शीघ्र भविष्य में जिनालय बनाने का आश्वासन संघ को मिला था। अब जमीन खरीदकर शिलान्यास होकर मन्दिर तैयार होने जा रहा है। यहां 1 घर दिगम्बर नैनार का भी है।

सेलम—(Selam) (सेलम जिला)—

यह व्यापारिक विशाल प्राचीन नगर है। यहां एक चैत्यालय श्री हीरालाल जी पाटनी के घर में है। अभी ता. 16.1.84 को हमारी उपस्थिति और निर्देशन में जिनालय प्रतिष्ठा हुई है। मूलनायक श्री 1008 महावीर स्वामी हैं तथा 7 प्रतिमायें और धातु की हैं। इसके अलावा और भी जगह ली हुई है जिसमें निकट भविष्य में एक विशाल जिनालय बनवाने का आश्वासन संघ को मिला था। यहां 8 घर दिगम्बर जैन मारवाड़ी खण्डेलवालों के और 1 अग्रवाल जैन का है। सभी धर्मात्मा एवं सम्पन्न हैं। अब दिगम्बरों की संख्या अधिक हो गयी है। जिनालय की प्रतिष्ठा के बाद जन धन सभी की वृद्धि हुयी। पूजा-पाठ को जगह कम हो जाती है। अतः नवीन विशाल जिनालय बनवाने की योजना चल रही है जो शीध्र ही कार्यान्वित होने वाली है।

Scanned with OKEN Scanner

मदुरै सर्कल (मदुरै जिला)

मदुरई—

22.2.84 को मदुरई में हमारे संघ ने प्रवेश किया। यहां वर्तमान में कोई भी दिगम्बर जैन मन्दिर नहीं है। पर ऐसा कहते हैं कि 1700 वर्ष पूर्व 8-10 हजार घर दिगम्बर जैन श्रावकों के थे। यह 'मदुरई' तमिलनाडू की प्रधान राजधानी और दिगम्बर राजाओं की नगरी भी थी। यहां की मीनाक्षी (वर्तमान नाम) मन्दिर पुरातन काल में श्री धर्मदेवी कुष्माण्डिनी मातेश्वरी के नाम से प्रसिद्ध था तथा श्री नेमीनाथ स्वामी की विशाल मूर्ति एवं अन्य तीर्थंकरों की भी प्रतिमायें थीं। इसके अन्दर सुरंग है जो राजमहल तक गई है। इस समय केन्द्रीय सरकार ने इसे बन्द करा दिया है। कहते हैं कि इसके अन्दर विशाल 2 प्रतिमाओं के साथ-साथ अरबों के जवाहरात वगैरह भी हैं। इसमें अनेकों जिन बिम्ब छिपा दिये गये हैं। इस मन्दिर में एक द्वार का शिखर पूरा सुवर्ण का ही है, जिसे तांबे पर सोने का पालिश कहते हैं। एक विशाल सोने का रथ है, जो प्रति वर्ष एक दिन निकाला जाता है। कहते हैं कि शंकराचार्य के काल में यहां 8000 निर्ग्रन्थ श्रमणों को घानी में पेल दिया था, जिनके चित्र मन्दिर की दीवालों पर चित्रित थे, किन्तु इस समय इस बीभत्स दृश्य को समाप्त कर दिया गया है। पहले प्रतिवर्ष एक मुनि पुतला बनाकर घानी में डालते थे, यह प्रथा हिन्दू महासमिति के लोगों ने बन्द करादी है, तथा सरकार द्वारा भी रोक लगा दी गई है। किन्तु जिस स्थान में मुनिराजों का संहार किया था, वह आज भी है जिसकी जगह पर एक वृक्ष या ठूंठ सूखा खड़ा है, और कहा जाता है कि यह 1700 वर्ष पुराना है तथा इसके नीचे मुनियों का वध किया गया था, इस मन्दिर में 1008 गोल छत्राकार कमल छतों में

बने हैं। 1008 स्तम्भ हैं, जो जैनत्व के चिन्ह हैं। कहा जाता है कि मीनाक्षी देवी भी जैन है। यहां के पंडे पुजारी बुजुर्ग लोग भी स्वयं कहते हैं कि हम सब दिगम्बर जैन थे और यह मन्दिर भी हमारा था, किन्तु अब परिवर्तित—कन्वर्ट हो गये हैं। एक सबसे बड़ी विशेषता है कि इस नगर के चारों ओर पहाड़ हैं। इस समय 21 पहाड़ (मलै) हैं, जिन पर सर्वत्र जिन बिम्ब उत्कीर्ण हैं और साथ ही श्रमणों के शयनागार रूप में विशाल गुफायें हैं। चारों और ये दिगम्बरत्व के चिह्न खण्डहर हुए पड़े हैं। कुछ पहाड़ों को पुरातत्व विभाग (आर्चिकल डिपार्टमेंट) में लेकर सुरक्षित करा दिया है। वस्तुतः यहाँ के राजा दिगम्बर जैन थे और उन्होंने दिगम्बर जैन जिनालयों, गुफाओं बसतिकाओं का निर्माण कराकर श्रमणों के संरक्षण की व्यवस्था की थी।

यहां के कुछ पर्वतों का वर्णन

नागमलै—

यह मदुरई से पश्चिम में 10 कि.मी. है। यह पर्वत अत्यन्त रमणीक प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण, पवित्र आकर्षक है। इसकी छवि निराली है। पूरा पर्वत एक शिला के समान गोलाकार है। सामने से सीढ़ियां हैं। सीढ़ियों के प्रारम्भ के पहले सुन्दर स्वच्छ सरोवर है। सामने ही पुण्डरीक (सफेद) नील कमल खिलते हैं। इसके पास चढ़ाई के प्रारम्भ में एक छोटा मन्दिर है। जिसमें एक छोटी सी दिगम्बर जैन प्रतिमा है। एक क्षेत्रपाल जी की भी है, एक कुष्माण्डिनी, एक पद्मावती देवी की प्रतिमा भी है। इन सभी को यहां के निवासी विविध नामों से पूजते हैं। पर्वत के आस-पास छोटे-छोटे गाँव हैं। सीढ़ियां चढ़ने के बाद सीधी चढ़ाई है, जो लगभग 1500 कदम होगी। इस ऊंचाई पर पहुंचते ही सामने श्री जिन बिम्बों का पापनाशक दर्शन होता है। चन्द्राकार

Scanned with OKEN Scanner

पर्वतीय शिला खण्ड में आठ प्रतिमायें, अत्यन्त भव्य और मनोहर उत्कीर्ण हैं। बायीं ओर सर्वप्रथम श्री गोम्टेश्वर प्रभु खडगासन हैं। इनके लतादि चिन्ह घिस चुके हैं, परन्तु दोनों ओर वामी से मुख निकाले सर्पों के आकार स्पष्ट हैं। पुनः फण सहित खड्गासन 4 प्रतिमायें है। सभी सुसौम्य हैं किन्तु एक प्रतिमा विशेष आकर्षक है। इसके सिर पर डबल फणमण्डप है। मध्य में श्री वीर प्रभु पद्मासन हं। दो पद्मासन मूर्तियां और हैं, जिनमें एक का मुख पूर्ण खण्डित कर दिया गया है। इनके ठीक नीचे सुशीतल निर्मल जलधारा प्रवाहित हो रही है। यह जल उतनी ही लम्बाई में है, जितनी में प्रतिमा है। चौड़ाई करीब 3—4 हाथ है। इससे प्रतिमाओं का स्पर्श नहीं हो सकता । इस पर्वत का आकार-प्रकार उत्तर के मन्दार गिरि के सदृश है। कुछ ऊपर जाने पर मन्दिर का भग्नावशेष है। कहते हैं नीचे नवीन बने मन्दिर में देवी-देवता और जिनेन्द्र प्रतिमा इसी स्थान से ले जाकर रक्खी हैं।

इससे कुछ और आगे छोटा सा मानस्थम्भ का शेषांश है और जिनालय का चिन्ह मात्र है, इसकी प्रतिमाओं का क्या हुआ कहा नहीं जा सकता। पर्वत के पीछे की ओर करीब 1 फर्लांग चढ़ने पर एक विशाल चट्टान के नीचे छोटी सी गुफा है। इसमें तीन पद्मासन नाति

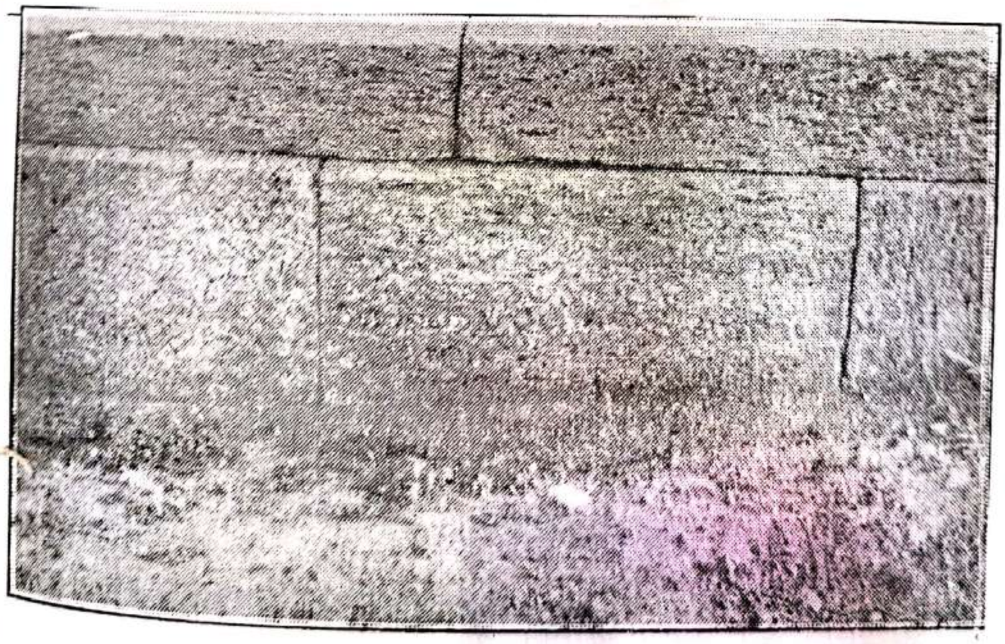

विशाल किंतु मनोज्ञ जिन प्रतिमायें श्री आदिनाथ जी, श्री महावीर स्वामी, श्री नेमिनाथ जी की सम्भवतः है। दोनों ओर कुष्माडिनी शासन देवी और यक्ष हैं। प्रतिमायें अष्ट प्रातिहार्य सहित हैं, ये ऐसी प्रतिभासित होती हैं मानों साक्षात् समवशरण की गन्ध कुटी है। प्रभु भी हंसमुख मानो बोल रहे हैं। पर्वत की चोटी पर खड़े होकर देखने से चारों ओर बड़ा ही सुन्दर भव्य दृश्य दिखाई पड़ता है। अनेकों अजैन भी देश-विदेश से आते हैं। पीछे की ओर चढ़ने को कुछ कच्ची सड़क है और सीढ़ियां हैं। कहते हैं यहाँ नाग अधिक निवास करते थे, इसलिये नाम "नागमलै" हो गया है।

मेत्तु पट्टीमलैः—

यह यहां से करीब 3 कि. मी. है। शार्ट से 1 कि. मी. है। यह नागमलै से मिला है। पहाड़ के ऊपर से दूसरी ओर उतर कर जाया जा सकता है। जिस प्रकार राजगृही के प्रथम पर्वत से दूसरे पर जाते हैं। यहाँ कोई भी जिन प्रतिमा नहीं है किन्तु 15—20 शयनागार हैं। एक लम्बी गुफा है, जिसमें मुनियों के शयन करने की सीटें बनी हुई हैं। ये स्थान नीचे से क्रमशः ऊंचे होते गये हैं, जिससे प्रतीत होता है ऊंची—नीची श्रेणी वाले साधुओं के क्रमानुसार शास्त्रोक्त पद्धति से बनाई गई हैं।

करलीपट्टीमलय :—

यह नागमलय से 5 कि. मी. पश्चिम में है। यहाँ दो प्रतिमायें चट्टान में उत्कीर्ण हैं और एक पद्मसान अलग से पाषाण में महावीरस्वामी की हैं। इसके अलावा 30-40 साधुओं के सोने, विश्राम करने को चट्टान शय्या हैं। कुछ ऊंचा सिंहासन जैसा एक स्थान है, जिसे वीरनन्दी स्वामी का पवित्र स्थान कहा जाता है। सम्भवतः यहां विराजकर पठन-पाठन करते कराते होंगे। इस विशाल गुफा में एक छोटी गुफा है, जिसमें सुन्दर चट्टान का फलक सोने के लिए बना हुआ है, सम्भवतः आचार्य श्री के शयन को बनाया होगा।

Scanned with OKEN Scanner

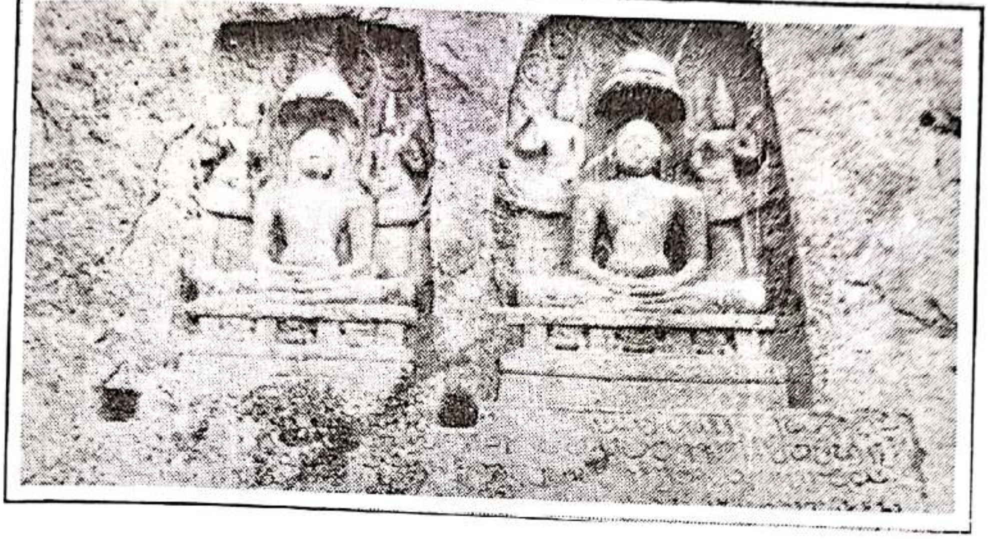

तिरुपरन् कांड्रम मलय :—

यह पर्वत नागमलय से पूर्व दक्षिण कोण में, करीब 5 कि. मी. पर्यन्त है। यह मदुरई से 7 कि. मी. दूर है। इसकी ऊंचाई करीब 1॥ कि. मी. है। लगभग 200 सीढ़ियां हैं। लगभग 100 पैंडियां चढ़कर एक छत्री जैसी दिखती है कहते हैं यहाँ मानतुंग जैसे कोई आचार्य थे, जिनका कुछ चमत्कार भी यहां हुआ था। चोटी पर पहुंचने के पहले दाहिनीं और दरगाह है, जिसे सिकन्दर महान् का कब्रस्थान के नाम से पूजा जाता है। उसके बाईं तरफ नीचे पीछे की ओर 70-80 शैयायें हैं तथा शिला लेख हैं। काशी शिवन का मन्दिर है, कहते हैं यह जैन मन्दिर था, जिसे महादेव का बना लिया गया है। इसके पीछे जाकर लगभग 2500 फीट लम्बी चट्टान में 2 उत्कीर्ण जिन प्रतिमायें हैं, 1 श्री पार्श्वनाथ स्वामी की तथा दूसरी श्री सुपार्श्व स्वामी या गोम्मटेश बाहुबली की प्रतीत होती हैं। इसकी बगल में एक छोटा मन्दिर है, उसके अन्दर से पीछे जाने पर पुनः चट्टान में प्रतिमायें हैं जो जिन प्रतिमाओं के स्थान पर अन्य-अन्य बना दी गई हैं, कुछ भग्नावशेष स्पष्ट दिखाई देते हैं। इस पूरी चट्टान की तलहटी में पानी भरा है। कहते हैं यहाँ स्वच्छ निर्मल सुस्वादु जल सतत् भरा रहता है। पर्वत पर यत्र तत्र सर्वत्र सैंकड़ों अण्डाकार नारियल कुण्ड जैसे भरे हैं। चारों

Scanned with OKEN Scanner

ओर हरा भरा है। यत्र तत्र तिकोन, चौकोन शिलाओं के आसन हैं। बीच में एक छत्री छोटा मन्दिर का जीर्ण भाग है सम्भवतः शासन देवी का हो । पर्वत अतिरम्य है। इस पर पीछे की ओर सैंकड़ों गुफायें हैं, जिनमें कई सौ सोने (शयन) की सीटें हैं। इस समय जाने का रास्ता भी नहीं है।

कडगुमलै—

संघ विहार करते हुए फाल्गुन शुक्ला 5 बुधवार ता. 7-3-84 को नगर प्रवेश किया। गाँव का नाम और पहाड़ का नाम एक ही है। जैन परिवार कोई नहीं है। सब शैव्य हैं, जो पूर्ण शाकाहारी हैं, इनके आचार-विचारों से प्रतीत होता है जितने मरण से बचे वे जन लोग शिव भक्त हो गये। यह पर्वत नाति दीर्घ और नाति उच्च है। किन्तु बनावट बड़ी ही सुरम्य है, प्राकृतिक छटा निराली है। पर्वत की उपत्यका में एक विशाल मन्दिर है। जो पर्वत की गुहा को काट कर बनाया गया है। यह पाण्डव राजा के समय का कहा जाता है जो जैन था

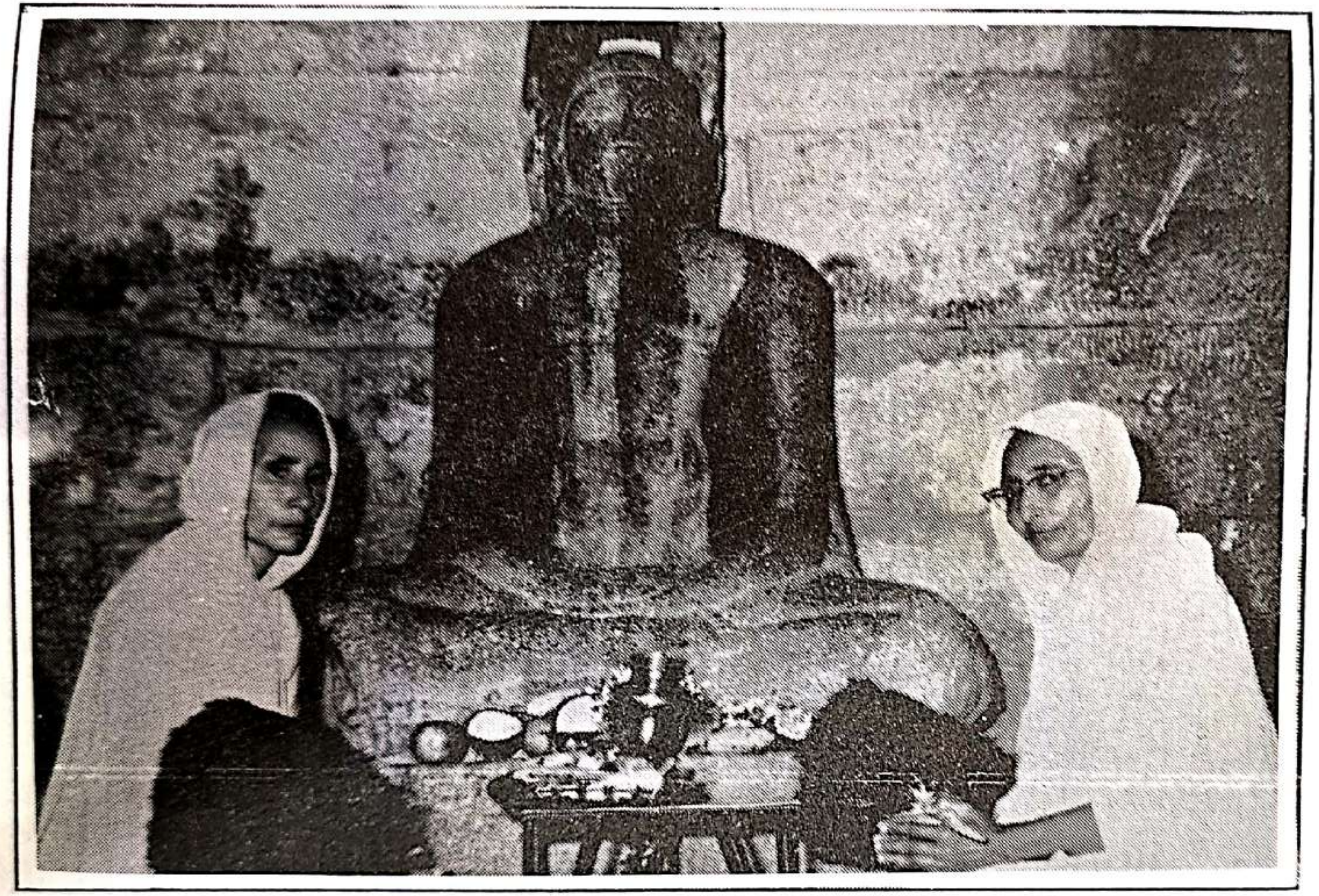

कडगुमलै स्थित प्राचीन मन्दिर में पूज्य 105 ग. आर्यिका रत्न श्री विजयामती माताजी एवं
105 आर्यिका ब्रह्मती माताजी

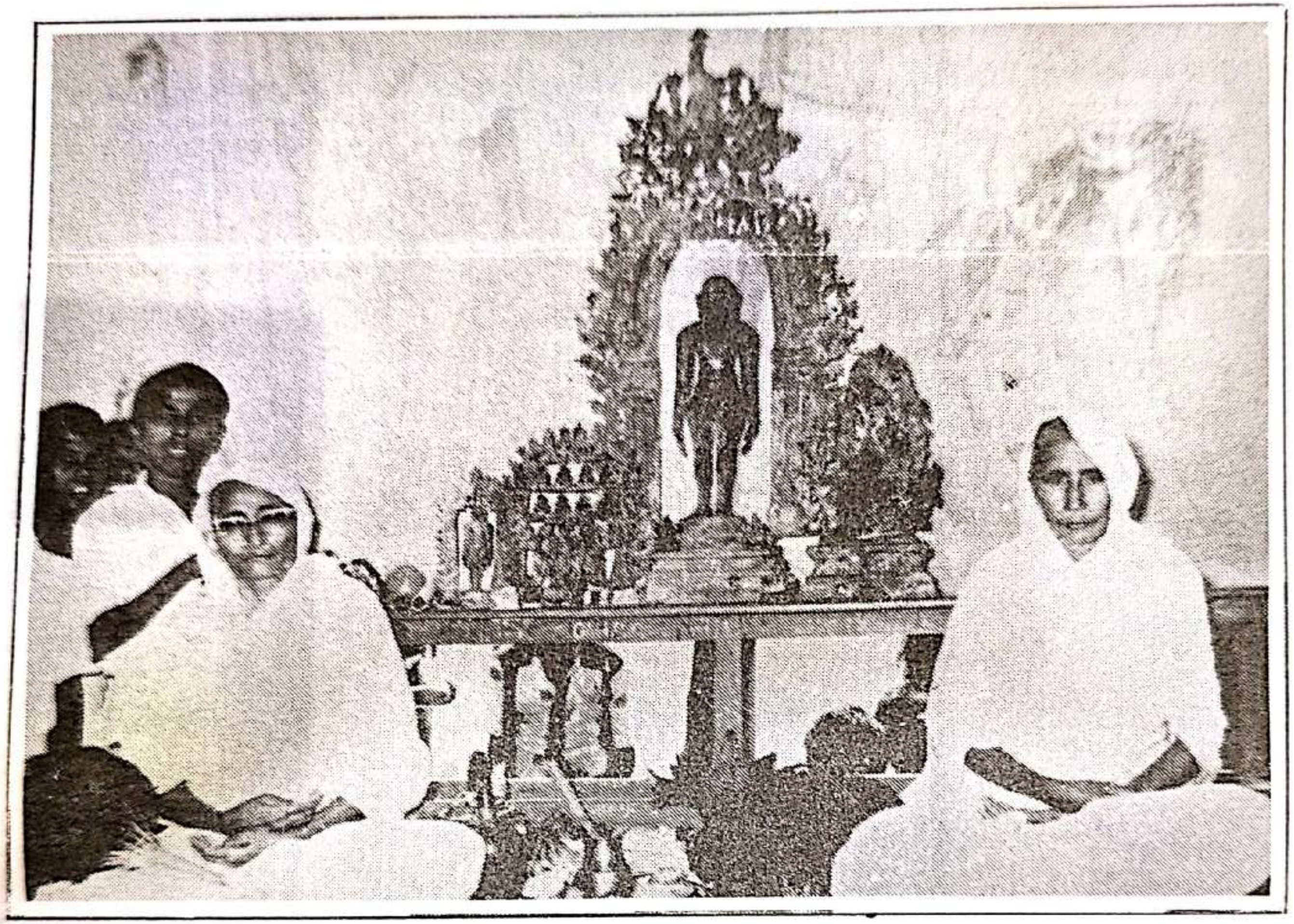

कड़गुमलै में स्थित श्री दिगम्बर जैन मन्दिर में
पूज्य 105 ग. आ. विजयामती माताजी एवं पूज्य 105 आ. ब्रह्ममती माताजी

और बाद में शैव हो गया था। इस समय मन्दिर शैव्य है। यहां अष्टाह्निका में 8 दिन रथोत्सव, ये लोग करते हैं जो परम्परा का द्योतक है। पर्वत के चारों ओर तलहटी में 15–20 कुण्ड हैं जिनमें स्वच्छ जल भरा रहता है। लगभग एक फर्लांग की चढ़ाई के बाद श्री जिन बिम्बों का दर्शन होता है। पूर्वाभिमुख एक अतिदोर्घ विशाल दीवार सरीखी चट्टान है जिसमें लाईन से श्री जिन बिम्ब विराजमान हैं। दायें और बायें चलो। प्रथम 9 प्रतिमाएं पद्मासन हैं जिनमें 2 गन्ध कुटी समान हैं और शेष छत्र त्रय सहित हैं। इनमें 3 बिम्ब तो पानी पड़ते पड़ते पूर्ण घिस गये हैं। 6 बिम्ब पूर्ण सौम्य हैं। इसके बाद यक्षी की खड़ी मूर्ति है जिसके बगल में 2 बच्चे खड़े हैं बायीं ओर दायां हाथ एक बच्चे के सिर पर रक्खा है। इसकी दाहिनी ओर एक यक्ष नृत्य करता हुआ है। यह अम्बिका देवी और यक्ष मालूम होते हैं। इसके बाद ऊपर से 3 लाइनों में 3 चौबीसी हैं, इन्हें पवल मालै कहते हैं, किन्तु प्रथम पंक्ति में 25 मूर्तियां हैं। दूसरी पंक्ति में 18 प्रतिमायें । इन दोनों पंक्तियों में ऊपरी पंक्तियों से कुछ बड़ी सवायी प्रतिमायें एक समान हैं। अत्यन्त भव्य और पापाहारी हैं। इन तीनों पंक्तियों की समाप्ति पर एक विशाल पद्मासन जिन बिम्ब गन्ध कुटी में अष्ट प्रातिहार्यों से युक्त है। यक्ष यक्षी अशोक वृक्ष आदि बड़े ही कलात्मक हैं। इस प्रतिमा के नीचे पुन: 2 प्रतिमायें पद्मासन, बगल में 3 पद्मासन प्रतिमायें हैं और एक हाथ जोड़े किसी भक्त की जो सम्भवत: मूर्तियों का निर्माता हो नमस्कार कर रहा है। पुन: 5 प्रतिमायें ऊपर एक तरफ हैं। पद्मासन और इनके ठीक नीचे एक पद्मासन स्थित बड़ी सुन्दर यक्षी है, जिसका एक पैर नीचे लटका है, एक हाथ घुटने पर फल लिए हुए है, दूसरा हाथ ऊपर उठा है। कोई खड्ग है हाथ में, यह पद्मावती है। श्री पार्श्वनाथ स्वामी की एक फण सहित है। इसके बगल में एक यक्षी नृत्य की पोज में है। पुन: इसकी साइड में पद्मासन चार प्रतिमायं एक लाइन में है। इसके बाद ही कुछ भीतर घुसी हुई 12 प्रतिमायें हैं एक लाइन में 4 के बाद श्री बाहुबली स्वामी पुन: 3 के बाद 1 पार्श्वनाथ स्वामी खड्गासन है पुन: 3 पद्मासन हैं। इस प्रकार सब 98 प्रतिमायें हैं। पुन: इसी चट्टान पर

Scanned with OKEN Scanner

करीब 10 हाथ आगे बढ़कर 2 पक्तियां हैं। प्रथम पंक्ति में 6 और दूसरी पंक्ति में 8 मूर्तियां पद्मासन हैं 1 प्रतिमा पुनः गन्ध कुटी सहित है 1 प्रतिमा जी श्री बाहुबली स्वामी खड्गासन इनकी बगल में एक पर एक 3 पद्मासन 1 खड्गासन पार्श्वनाथ भगवान ऊपर कमठोंपसर्ग निवारण करते हुए धरणेन्द्र पद्मावती, नीचे क्षमा याचना करता हुआ कमठ है। पुनः 3 प्रतिमायें पद्मासन हैं, एक प्रतिमा खड्गासन पार्श्व प्रभु की हैं। इसके बाद एक विशाल सुन्दर गुफा है जिसमें एक चट्टान पर श्री पार्श्वनाथ बिम्ब खड्गासन है। गुफा में सील्ड बन्द ताला लगा है, गुफा में भी गुफा है ऐसा प्रतीत होता है। इन्हीं प्रतिमाओं के ठीक सामने एक छोटा सा वैष्णव मन्दिर है। गुफा से 10-12 हाथ आगे पुनः पद्मासन 8 मूर्तियां हैं, इनमें 4 तो पूर्ण दिखाई देती हैं तथा शेष का चेहरा मात्र इनके आगे मुरगन कोइल बनाकर रक्खा है सम्भवतः इसके अन्दर और भी मूर्तियां चिन दी गई हैं। इस मन्दिर के अन्दर भी इसी चट्टान पर खड्गासन बिम्ब है जो एक दरार से लाइट द्वारा दिखता है। एक पद्मासन अलग से नीचे है जो सम्भवतः मन्दिर बनाते समय इसी चट्टान से निकाला होगा। पुनः इस मन्दिर के आगे बढ़ने पर इसी चट्टान में 3 पंक्तियों में 19 जिन प्रतिमायें हैं ये सभी पद्मासन हैं। इनके सामने एक छोटी सुन्दर श्री पद्मावती देवी की मूर्ति बड़ी ही कलात्मक ढंग से बनी हुई है। इसी प्रकार एक ही चट्टान में सर्व 98 + 12 + 36 + 19 = 153 जिन प्रतिमायें 4 यक्षी मूर्तियां हैं। यहां से करीब 100 फुट ऊपर चढ़ने पर पुनः 1 श्री महावीर स्वामी की भव्य अष्ट प्रातिहार्य सहित सुन्दर प्रतिमायें, 1 गुफा में है। इस प्रकार 155 जिन बिम्ब साक्षात जिनेश्वरों के दर्शन का आनन्द प्रदान करते हैं। यहां पर अमृताचार्य और गुण सागर आचार्य का संघ ठहरा था। पर्वत पर यत्र तत्र सर्वत्र सैंकड़ों छोटे—छोटे कुण्ड, तालाब, झरने बने हुए हैं। इस विशाल चट्टान के ठीक सामने विशाल वट वृक्ष है जिसकी शीतल छाया हर समय बनी रहती है। इसी के सामने 3 मन्दिर अजैनों के हैं। यहां बलि चढ़ाते थे। अब सरकार से बन्द है किन्तु चोरी चुपके करते हैं इस बात का प्रमाण मिला है। दिनांक 18-4-84 को हम विहार

Scanned with OKEN Scanner

करने वाले थे उसी समय पून्नूर मलै से 7 व्यक्ति दर्शनार्थ आये। हमारे आने के बाद ये दर्शन को गये तो देखा कि एक कुटुम्बी परिवार दो मुर्गे ले जा रहा था। पूछने पर उसने सत्य कहा कि पोंगल पर बलि चढ़ाने जा रहे हैं। इन लोगों द्वारा सूचना मिलने पर सेलमं से पधारे सेठ चम्पा लाल जी एवं अमृत राय जी को पुलिस थाने में भेजा, तत्काल सिपाही लेकर गये ओर बलि को रोका। सब चले गये पुजारी ने आगे नहीं करने का वचन दिया तो भी इधर विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

कडगुमलै में दर्शन

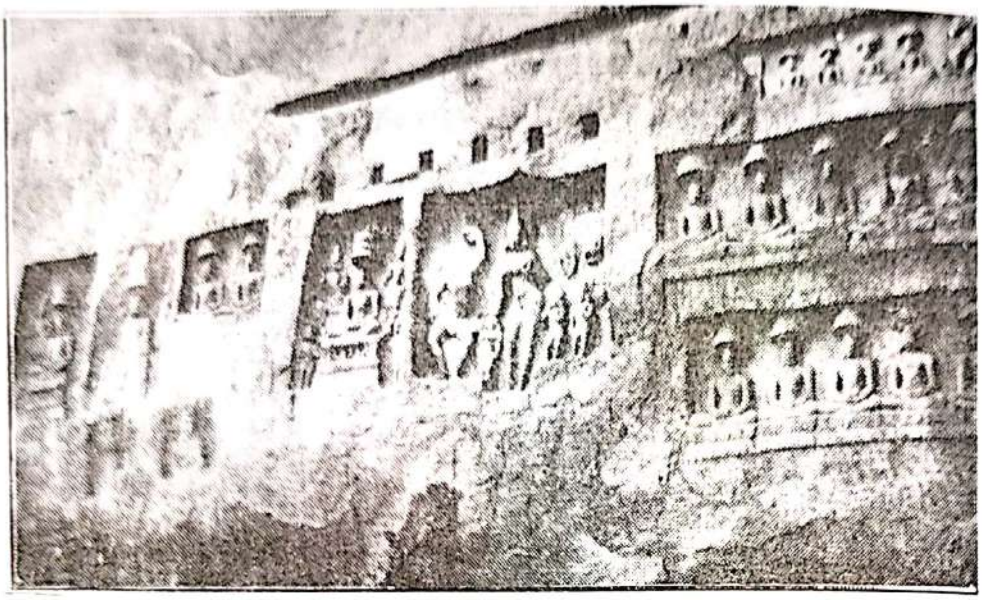

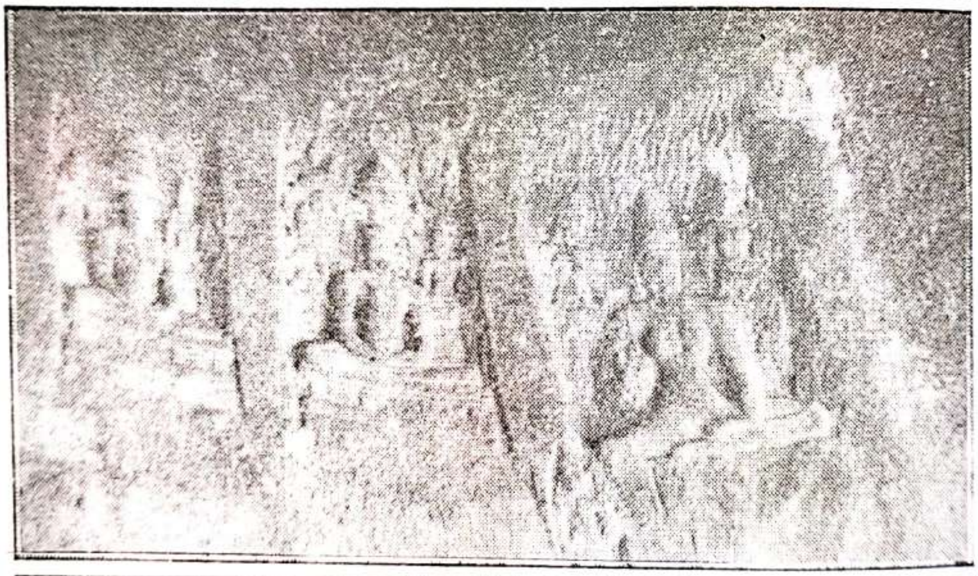

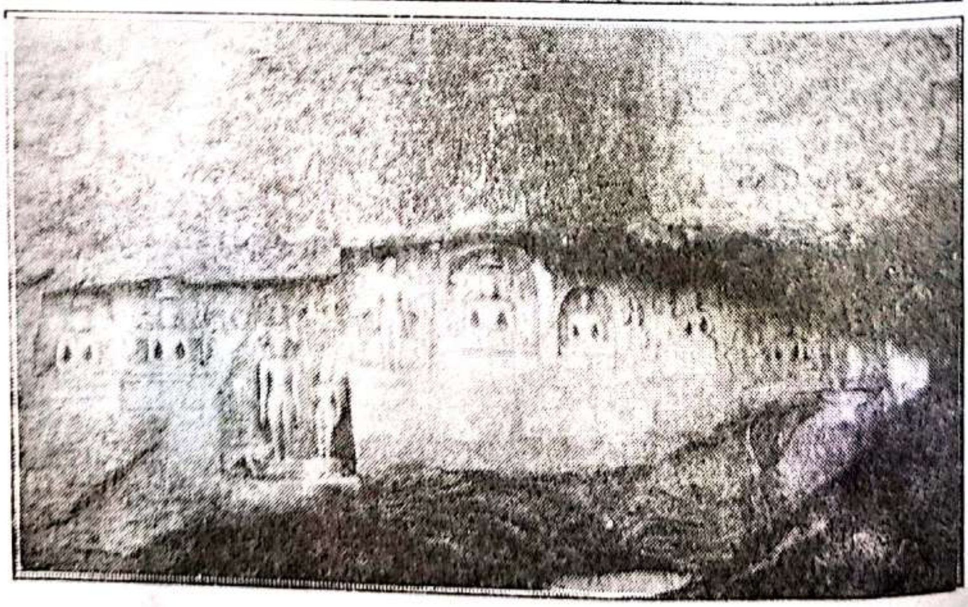

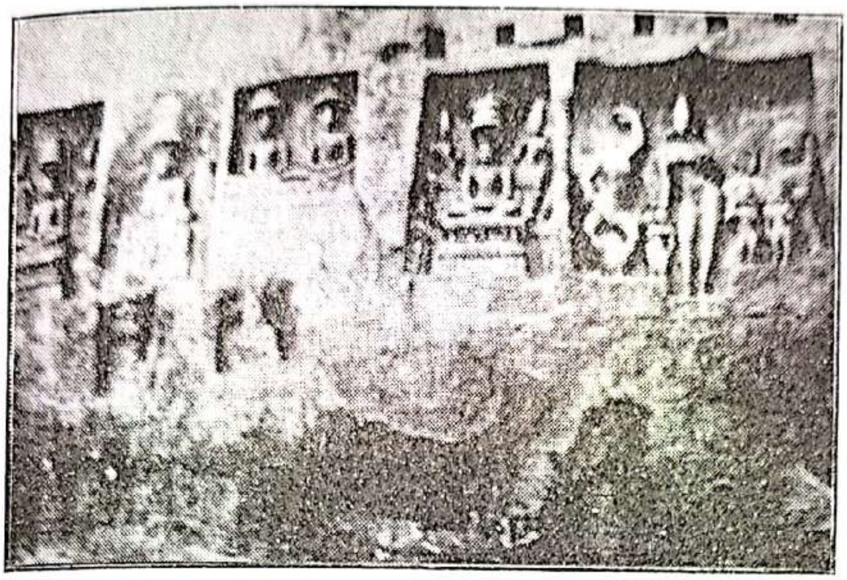

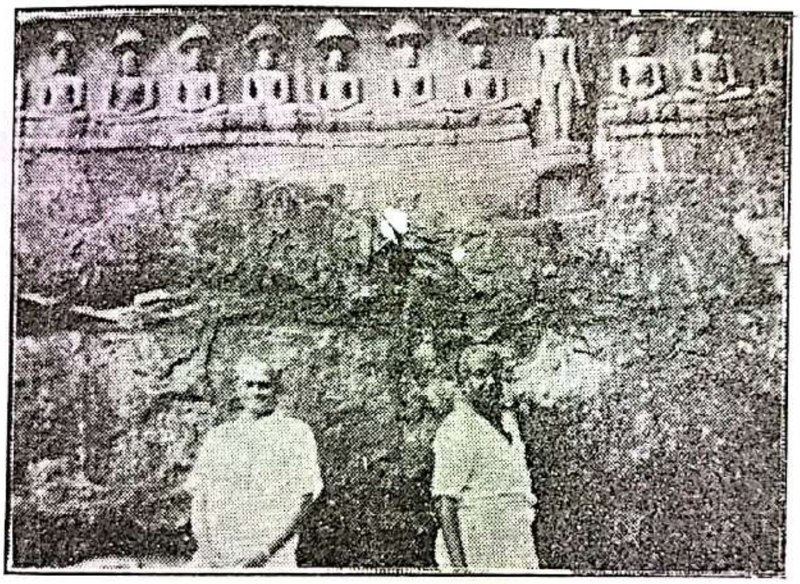

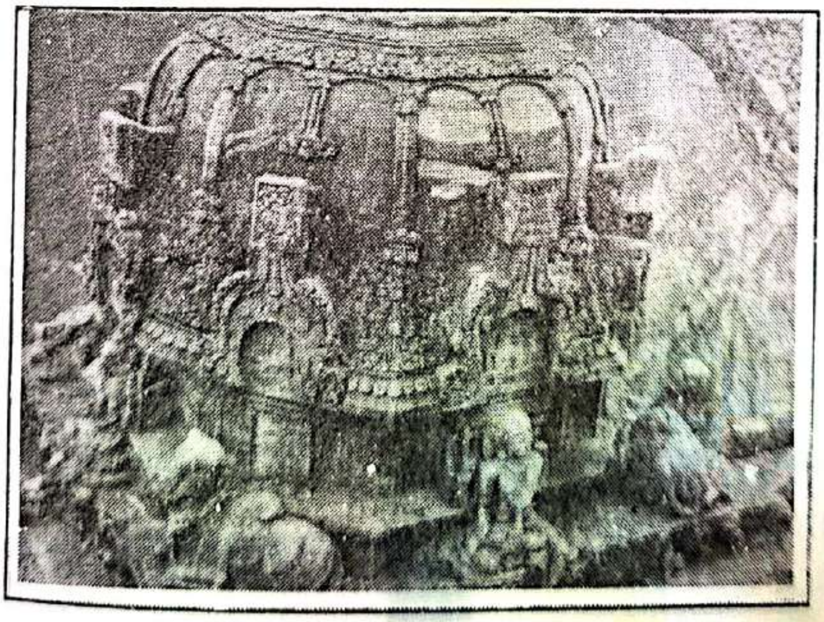

Scanned with OKEN Scanner

यानैमलै—

यह पर्वत अति विशाल करीब 3 कि.मी. लम्बा है और 200 फीट करीब चौड़ा है। पर्वत की रचना हाथी के समान है, ठीक जैसे बैठा गज हो। इसी से इसका नाम यानैमलै है प्रारम्भ में करीब 50 सीढ़ियां चढ़कर एक मोटी शिला आती है इसके नीचे सुन्दर गुफा है और सामने चट्टान पर एक ओर एक पद्मासन छत्र-त्रय सहित एवं यक्ष-यक्षी युत जिन प्रतिमा है। यद्यपि नासाकादि अवयव घिस रहे हैं तो भी मनोज्ञ दिखाई पड़ती है। इसी शिला के दूसरी ओर जाने पर एक लाइन में 8 प्रतिमायें हैं। प्रथम 2 पद्मासन (चिन्ह नहीं) पुन: खड्गासन, जिनमें एक पार्श्व प्रभु हैं कमठ उपसर्ग कर रहा है, परास्त हो चरण में पड़ा है, धरणेन्द्र फण लगाये हैं, महादेवी पद्मावती बायीं ओर खड़ी है। पुन: 2 प्रतिमायें पद्मासन हैं, जिनके ऊपर चित्रकारी दिखती है जो 20 वर्ष पहले स्पष्ट थी, अभी चिन्ह रूप से भी स्पष्ट नहीं है। पुन: एक देवी कमलासनी एक पांव लटकाये कलात्मक दृष्टि से बड़ी सुन्दर है। बगल में सिंह है, दूसरी ओर बच्चे हैं, इससे धर्मदेवी कुष्माण्डिनी हो सकती है। पहाड़ के ऊपर एक चौकोर कुण्ड जैसा स्थान है, जिसमें 5 शिलासन हैं, जिन्हें 5 पाण्डवों के पीठ कहते हैं। पुन: ऊपर चढ़ने पर वैसा ही कुण्ड है जिसे "तपोकुलम" तपो कुण्ड कहते हैं। इसमें निर्मल नीर सतत भरा रहता है। पुन: ऊपर 2 सुरंग हैं जो अतिलम्बी है इनका द्वार झाड़-झखटों से रुका पड़ा है। कहते हैं पहाड़ पर सिंह, व्याघ्र, भेड़िया आदि रहते हैं। भेड़िया हमने देखा था भागता जा रहा था। संभवत: कुलभ में जल पीने आया होगा। भगवान की साइड में कुछ ऊपर चढ़ने पर गुफा है, जिसमें साधुओं के सोने की सीटें हैं। इस गांव को नरसिंह शक्ति कहते हैं।

Scanned with OKEN Scanner

अलगर मलै—

इस पर्वत की छटा निराली है। यह लगभग 3—4 कि.मी. लम्बा है। ऊपर तक रोड़ है जीप, कार आदि जा सकती हैं। सघन छाया, गहन वृक्षावली मध्य से बहता हुआ नाला श्री सम्मेदाचल के गंधर्व नाले का स्मरण दिलाता है। यह कच्चा रास्ता है बगल से रोड का वैसा ही रास्ता है जैसा कि शिखर जी के डाक बंगले पर जाने की रोड़ है। यह महा विशाल है। इसे शिखरों की कला अत्यन्त आश्चर्यकारी, सूक्षम है। यहां से पहाड़ के ऊपर मुरगल कोइल है। 2 कि.मी. रोड़ से जाकर पुनः पांच पाण्डवों की गुफा और शैया प्रस्तर एवं तमिल शिला लेख है। यहां पर हजारों लोग पिकनिक मनाने एवं धर्म के नाम पर हत्या करने आते हैं। मंदिर में संभवतः ये हिंसा नहीं करते सघन वृक्षों के तले यह पाप कर्म होता ही है। धर्म के नाम पर जीव वध इस देश में अधिक है। यहां से 7 कि.मी. मैलूर रोड़ पर चलकर जंगल से कच्चे मार्ग पर 2 कि.मी. चलने पर इसी पर्वत के अन्तिम छोर पर हमारे पांच पाण्डवों की तपोभूमि है इसे यहां "पञ्चवटी" या पंचापाण्डवर तप शिला कहकर पुकारते हैं। पहाड़ पर चलने के लिए बड़ी ऊंची शिला काट कर बनाई हुई शिला है। करीब 100 सीढ़ियां चढ़ने पर एक विशाल गुफा आती है जिसमें सैंकड़ों साधु विश्राम कर सकते हैं। इसके बाद नीचे उतरने की लोहे की नसैनी फिक्स है जिस पर से उतर कर पुनः 20-25 सीढ़ियां चढ़कर दूसरी गुफा है तदनन्तर कुछ चढ़ने पर तीसरी अति विशाल गुफा है जिसके द्वार पर एक छोटी करीब 9 इन्च की पद्मासन जिन प्रतिमा है। नीचे स्वच्छ निर्मल जल भरा है। यहां 15—20 शैया पट्ट है। 2 गुफायें सुरंग सरीखी हैं जिनमें 2—3 साधु सो सकते हैं तथा अध्ययन कर सकते हैं। सोने के कारण सिर रखने का स्थान हो ऐसा प्रतीत होता है । यहां की शांति एवं सौंदर्य अत्यन्त ही अनुपम है। चारों ओर शांत, नीरव एवं सुखद वातावरण है, निरापद और निर्भय है। सांयकाल होने

Scanned with OKEN Scanner

सं हम ठहर न सके न कुछ विशेषान्वेषण कर सके। इस मुख्य गुहा के द्वार पर किसी मन चले सन्यासी ने त्रिशूल बना कर ओं शिवाय नमः लिख दिया है। दिया जलाने का छोटा सा आला भी बना दिया है, वहां काला हो रहा है इससे दिया जलाने का अनुमान लगाया जा सकता है। दिगम्बर जैन धर्मज्ञों को इसकी सूचना सरकार को देकर सावधान करना चाहिये। हम यहां 28.3.84 को सांयकाल 5 बजे बाद पहुंचे । यहां से 'उप्पोड़ी पट्टी' गांव 1 कि.मी. है। इधर से रास्ता भी सरल है। यहां से रोड़ 1 कि.मी. है रास्ता सब कच्चा है।

अरटी पट्टी—

"अरटी मलै" गांव अरटी पट्टी से करीब 1 फर्लांग है। यह नाति विशाल है। उपत्यका में सरोवर है उससे ऊपर 2—4 झोंपड़ियां हैं। 10—15 कदम चढ़कर एक अति विशाल उन्नत चट्टान पर जिन बिम्ब है। जिसके नीचे 4 पंक्तियों में लेख है । यह ग्रंथ लिपि है या अन्य लिपि समझ में नहीं आता। बिम्ब अत्यन्त सौम्य है, प्रभु कमलासन पर अन्तरिक्ष विराजमान हैं, छत्र त्रय है। अगल—बगल में छोटे—छोटे अष्ट प्रतिहार्य हैं। प्रतिमा के मुख कमल से वीतरागता टपकती है। इसके नीचे 3 गुफायें सुन्दर स्वच्छ और निरापद हैं। संभवतः ये एक ही होगी

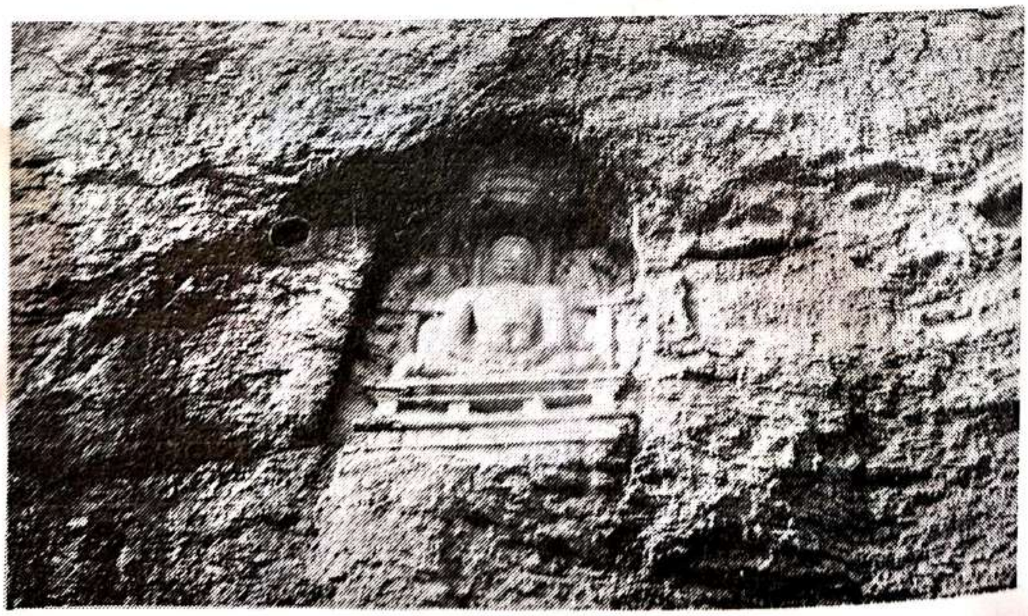

Scanned with OKEN Scanner

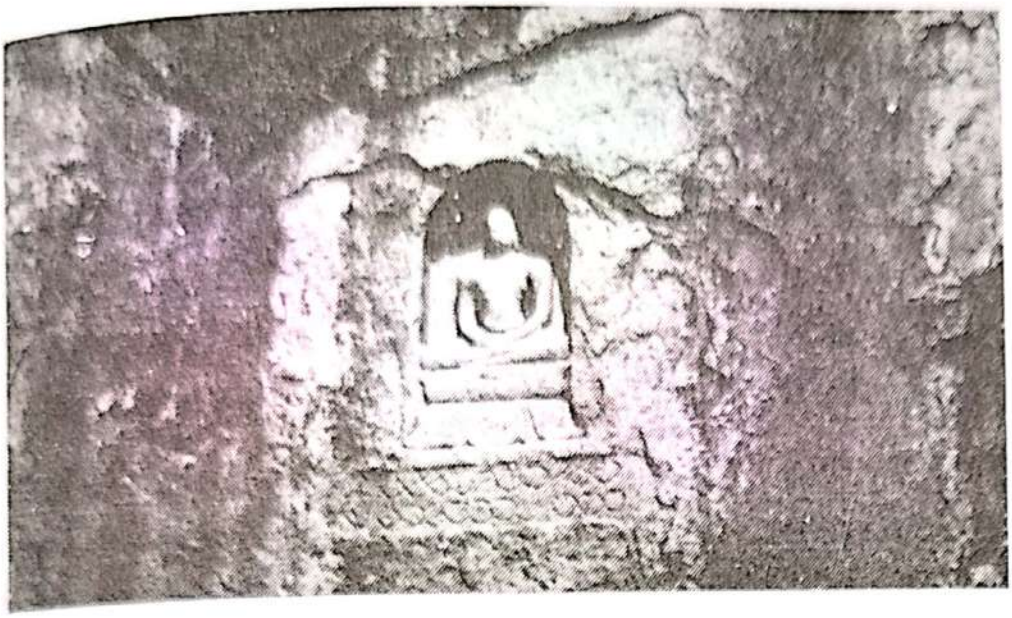

क्योंकि मध्य में दीवाल मिट्टी से बनाई हुई है जो संभवतः ग्रामीणों ने अपने उपयोगानुसार बना ली है। इसके ऊपर मुरगन शिवन कोबिल है जिन्हें पार कर जाने पर पांच पाण्डवों की शिला पर सोने की शैयायें हैं, ऐसा कहते हैं। ग्रामीण जन अत्यन्त श्रद्धालु, भक्त एवं सज्जन हैं। विद्यालय है। हम तिन्नाडे अप्पन कल्लार मास्टर के घर में रात्रि में रहे। दिनांक 29.3.84 को यहां जिन दर्शन किये। इस मार्ग में अनेकों लोगों ने मांसादि का त्याग किया। व्रत लिया। अलगर कोविल से 10 कि.मी. चलकर मेलूर से 5 कि.मी. पहले दक्षिण की ओर रोड़ से अरटी पट्टी गांव आना पड़ता है। रोड़ से यह $2^1/_2$ कि. मी. है। रोड़ पर पत्थर पर डायरेक्शन है। पुनः मेलूर के लिए $2^1/_2$ कि.मी. आना पड़ता है।

किलवलवू—

यह एक अति सुरम्य और पवित्र नाति विशाल पर्वत है। यह मैलूर और तिरुपत्तूर रोड पर मेलूर से 9 कि.मी. पर है। मुख्य रोड़ छोड़ कर $^1/_2$ कि.मी. उत्तर की ओर स्थित है। करीब 1 फ. चढ़ाई होगी वह भी फैली हुई है। कुछ—कुछ दूर पर 3 जगह सुन्दर सरल सीढ़ियां उकेरी हैं। सर्व प्रथम चढ़ाई प्रारम्भ होते ही पश्चिम की ओर 10—12

Scanned with OKEN Scanner

कदम जाकर गोलाकार 5 गुफायें हैं। इनमें 50, 60, 80 तक एक—एक में शयन सीट बनी हैं। अधिक ऊंची नहीं हैं, हां पद्मासन से ध्यान लगा सकते हैं चौड़ी पर्याप्त हैं। हवा, धूप एवं पानी से रक्षा हो इस प्रकार से बनी हैं। पूर्व की ओर सीढ़ियां चढ़कर पुनः एक अति विशाल लम्बी चौड़ी गुहा है। इसके उत्तर द्वार पर 3 पद्मासन अति मनोज्ञ, ध्यानस्थ, वैराग्योत्पादक बिम्ब हैं। इसी गुहा से पूर्व द्वार पर 6 जिन बिम्ब प्रथम खड्गासन जिसका मात्र ढांचा शेष है, पुनः 3 पद्मासन 1 खड्गासन और 1 पद्मासन है। ये सभी बिम्ब कुछ—कुछ घिसे हैं। अभी सरकार की ओर से वर्षा से रक्षा के लिये टीन के सेड़ लगाये। यहां इसे ''पञ्चपाण्डवर गुहा'' ''पाण्डवर मलै'' कहकर पुकारते हैं। पाण्डवपडिकर पूछने पर प्रत्येक बच्चा भी बता देगा। इससे यह प्रतीत होता है कि ये श्री नेमिनाथ तीर्थंकर के समय या उससे भी पूर्व के हों। इसके अतिरिक्त गुफा के आजू बाजू बड़ी—बड़ी शिलायें पड़ी हैं। एक शिला पर एक यक्षी और जिन बिम्ब का आकार शेष दिखाई देता है। जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि और भी बिम्ब हों और कालान्तरित हो गये होंगे। ऊपर की गुफा में 1 शिला लेख भी है। पढने में नहीं आया। इस गुहा में सैंकड़ों शय्याएं हैं इनका पाषाण सेलम खड़िया की तरह चिकना है। सोने में पुराल या चढ़ाई व फलक की आवश्यकता नहीं। पर्वतराज के चारों ओर 5—6 सरोवर 3 कमलसर हैं। पानी स्वच्छ भरा है। ऊपर पर्वत विस्तृत है जहां संघ समूह स्वाध्याय, ध्यान, पठन—पाठन आनन्द से कर सकते हैं। चढ़ाई के प्रारम्भ में एक सिंहासन नुमा विशाल चट्टान है जिस पर 4—5 साधु बैठकर ध्यान कर सकते हैं, ऊपर कई आसन हैं। प्रातःकाल सूर्य रश्मियों से गुहाओं का सौंदर्य अद्वितीय हो जाता है। लाल पाषाण और फिर उस पर सूर्य की अरुण किरण की चमक, लगता है चारों ओर अरुल कमल ही विकीर्ण किये हों। यद्यपि यह सरकार के अधिकार में है, परन्तु समुचित व्यवस्था नहीं है। हम लोगों को यहाँ आने जाने का प्रयत्न करना चाहिये और पर्वत की तलहटी पर्यन्त रोड बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

Scanned with OKEN Scanner

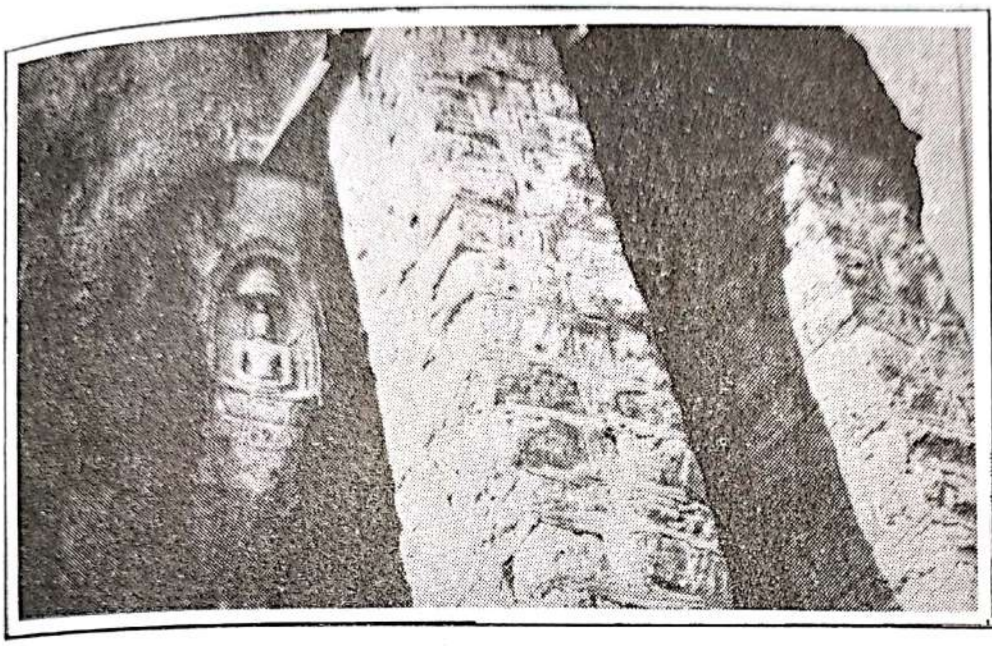

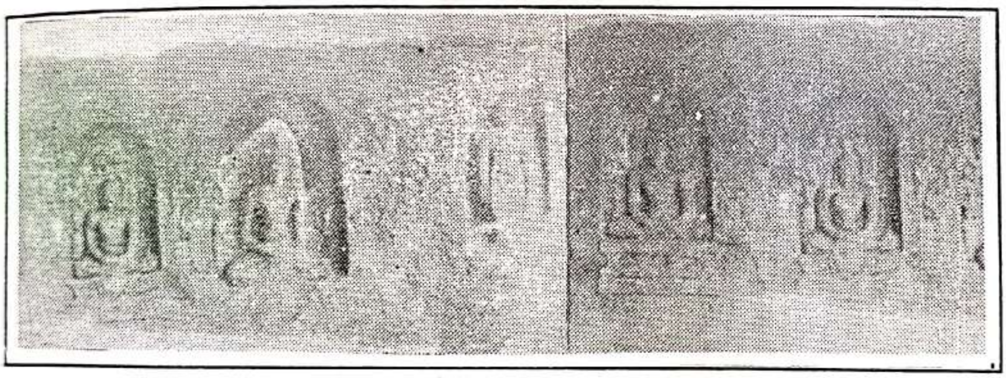

पुदुकोटै—(पुदुकोटै जिला)

इस गांव में म्युजियम में जिन प्रतिमायें हैं। 1 पार्श्व प्रभु की खड्गासन सर्वांग सुन्दर पाषाण बिम्ब करीब $3^1/_2$ फी. है, 1 पद्मासन आदीश्वर सामान्य प्राषाण की। इसके अलावा 5—6 भिन्न बिम्ब हैं। सप्तधातु की एक प्रतिमा खड्गासन आदीश्वर प्रभु की अति उत्तम है, 1 चतुर्विंशति प्रतिमा 1 पार्श्वनाथ तथा 1 बिना चिन्ह की है। शासन देवी-देवता भी हैं। इसके अतिरिक्त शिलालेख, लेख चित्र एवं फोटो भी हैं। ये सभी विभिन्न स्थानों में से प्राप्त बिम्ब हैं धातु बिम्ब विशेष आकर्षक एवं प्राचीन हैं। पाषाण बिम्ब भी 2500 वर्ष पूर्व का होना चाहिये।

सिद्धनवासल मलै—

चित्तन वासन मलै कहते हैं। यह पुदुकोटै से किलस्कुरची (पट्टी) रोड से 18 कि.मी. है। कच्चे रोड़ से 9 कि.मी. है। यह पहाड़ अत्यन्त रमणीक है। इसमें पर्वत काट कर मन्दिर निर्मित किया है। पल्लव नरेश ने यहाँ श्रमणों दिगम्बर जैन साधुओं के रहने के लिये विशाल गुफायें और गुफाओं में सुखद अध्यन अध्यापन के योग्य विश्राम सीट "पड़िक पट्टी" बनवाई है। यों तो छोटी—मोटी कई गुफायें हैं किन्तु एक विशाल लम्बी मोटी गुफा हैं जिसके आधे से कम भाग में करीब 20 सीटें हैं जो चिकनी, चौड़ी और धनुषासन से सोने योग्य लम्बी हैं। शास्त्रोक्त पद्धति से बनाई गई हैं। इनमें मध्य में एक शैयासन सबसे कुछ बड़ा है। संभवतः आचार्य श्री या गणाग्र साधु के निमित्त बनाया होगा। ये सीटें साफ सुथरी चिकनी स्पष्ट हैं सिरहाने का भाग ऊंचा है। किनारे पर कुछ लिखा भी है किन्तु यह लिपि पढ़ने में नहीं आती। ऊपर बनी शैया को तमिल में पली पंड़ी कहते हैं, नीचे बनी हैं उन्हें पल्ली श्रमण पल्ली पंडी कहते हैं। 1700 वर्ष पूर्व पल्लव नरेश महेन्द्र राजा ने यहां पर्वत की चट्टान काटकर मन्दिर बनवाया था। इस समय भीतरी भाग में 3 जिन प्रतिमायें सुखासन पर्वत की दीवाल में ही उत्कीर्ण हैं और 2 बिम्ब बाह्य भाग के आमने सामने श्री महावीर और पार्श्वनाथ स्वामी हैं किन्तु इनका फण पञ्चफण ही है। जिनसे संभवतः ये सुपार्श्वनाथ भी हो सकते हैं। भीतरी 3 जिनबिम्बों पर कोई चिन्ह नहीं हैं इन्हें तीर्थंकर कह कर ही परिचय देते हैं। श्रमण पहाड़ को पलीपड़ी कहते हैं। यहां पर दिगम्बर जैन साधुओं को जैन कहकर ही पुकारते हैं। श्रमण संघ निवास मलै कहते हैं। श्री जिनालय के तीन भाग हैं। प्रथम भाग में दीवाल में चोकोर शिलालेख है जिससे इसका रचनाकाल पल्लव वंश का समय ज्ञात किया है। बीच-बीच में अक्षर पूर्ण शीर्ण हो गये हैं। कुछ यत्र—तत्र दिखाई देते हैं। तमिल में इसे कलवरट

Scanned with OKEN Scanner

(शिलालेख) कहते हैं। जिनालय के दूसरे और तीसरे भाग में क्रमशः 2 और 3 प्रतिमायें हैं तथा दीवाल, स्थम्भ छत—सर्वत्र अद्वितीय चित्रकारी है। रंगों के भग्नावशेष मात्र. आश्चर्य कारक हैं। मुख्य द्वार के स्थम्भ पर राजा महेन्द्र और उनकी महारानी का मनोहर चित्र गौर से देखने पर स्पष्ट दिखाई देता है। छत पर सरोवर, उसमें कमल उनके बीच एक व्यक्ति कमल लिये कौपीनधारी जैसा प्रतीत होता है। संभवतः कोई ब्रह्मचारी हो सकता है। सरोवर में हंस, सारस एवं तोता के भग्नावशेष हैं। मछली भी बनी है जिससे धीवर भी हो सकता है। इसके आजू—बाजू अन्य प्रकार के चित्र भी कुछ—कुछ दिखाई देते हैं। भीतरी भाग के चित्र तो प्रायः समाप्त हो चुके हैं, छत पर कुछ दिखाई देते हैं। मध्य में समवशरण की रचना है। इसके भी मध्य की गंध कुटी का पद्म भंग हो चुका है। भगवान के पीछे भी चित्र होंगे। भग्न चित्र हो गयी (कुरंची आई पोचे) कहते हैं। ये कलर (रंग) समस्त यहां पर्वत के ऊपर अथवा आस—पास में होने वाले वृक्षों से प्राप्त पत्तियों को पीस कर ही बनाये गये हैं। ये रंग किन—किन वनस्पतियों से निर्मित हैं। आज तक भी इसका पता नहीं लगा सके हैं। रिसर्च, हार (पराजय) स्वीकार कर बैठे हैं। हजारों वर्ष पहले से बना होने पर भी जैसा का तैसा प्रतीत होता है। छत पर बने समवशरण की गंध कुटी का कमल अलग हो गया है जो अलग पड़ा है। एक पाषाण पीस जिसमें जिन प्रतिमा का सुखासन स्पष्ट है, पड़ा है। इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि अन्य भी जिन भगवान होना चाहिये। जो हो मन्दिर का द्वार आदि कलात्मक है। खम्भे आदि सभी पहाड़ काट कर बनाये गये हैं। ऊपर गुफाओं के सिवाय सुरंगे और चौरस शिलापट्ट भी हैं जहां हजारों साधु, संत श्रावक—श्राविकायें बैठकर धर्मोपदेशादि श्रवण कर सकते हैं।

चित्र बनाने के लिए स्वतः रंग तैयार करते थे। रंग घोटने के

Scanned with OKEN Scanner

कुण्ड—खल जिसे तमिल में कुली कहते हैं बने हैं। पेन्टर फूल पत्तियों को घोलकर ही घोटते और तरह—तरह के रंग तैयार करते थे।

जिनालय की बगल में कुण्ड है। इसका निर्मल जल स्नान पूजा के लिए उपयोग किया जाता है। गुफाओं के पास जाने के द्वार पर नीचे ही सरोवर है, जिसमें कमल खिले हैं। मन्दिर और कुण्डों के मार्ग में 1 कि.मी. का अन्तर है। मन्दिर पर्वत के मध्य में नीचे की गुफा में बनाया है, इसे बने 1700 वर्ष हो गये, बिम्ब कब उकेरे गये यह विदित नहीं होता।

दूसरे भाग की छत पर सरोवर पेण्टेड है, उसमें कमल मीन समूह क्रीड़ा करते हुए, सारस पक्षी युगल, हंस पक्षी मृणाल मुख में लिए, भैंसा क्रीड़ा करता हुआ, दो गज खड़े हुए आज भी स्पष्ट दिखाई देते हैं और भी 2—3 व्यक्ति जल में क्रीड़ारत्त दिखाई पड़ते हैं। ये चित्र 2 हजार वर्ष पूर्व की कला को दर्शाते हैं, जो धार्मिक संस्कृति से जुड़ी थी यह स्पष्ट हो जाता है । चित्र समाप्त हो गये परन्तु रंग फीका नहीं हुआ । यह विशेषता है।

कुत्तिमलै—

अम्माचित्तिरम गाँव (किलैनूर रोड पर) से 1 कि.मी. पश्चिम की ओर है। इसके सामने विशाल जल परित सरोवर है। पर्वत पर पूर्वाभिमुख विशाल गुफा है। गुफा के मुख द्वार के ऊपर 2 पंद्मासन जिनबिम्ब हैं। गुफा में चट्टान पर 4—5 लाइन में शिलालेख (कल्लवट्टर) हैं। जिन प्रतिमायें छत्र त्रय यक्ष—यक्षी और अष्ट प्रातिहार्य बहुत सूक्ष्म रूप में दिखाई पड़ते हैं। वर्षा के कारण जो प्रतिमाजी यत्र—तत्र कृष्णवर्ण हो गई हैं तो भी सौम्यता अपूर्व है। प्रातः सरोवर का जल, सूर्य बिम्ब की प्रतिच्छाया और जिनबिम्ब की अनुपम छटा देखते ही बनती है। गुफा काफी गहरी दूर तक है। इससे धूप, पानी आदि का उपद्रव नहीं होता। अन्दर सैंकड़ों साधु निवास, विश्राम, ध्यान, अध्यन कर सकते हैं। और भी छोटी मोटी कदरायें हैं। इसी

Scanned with OKEN Scanner

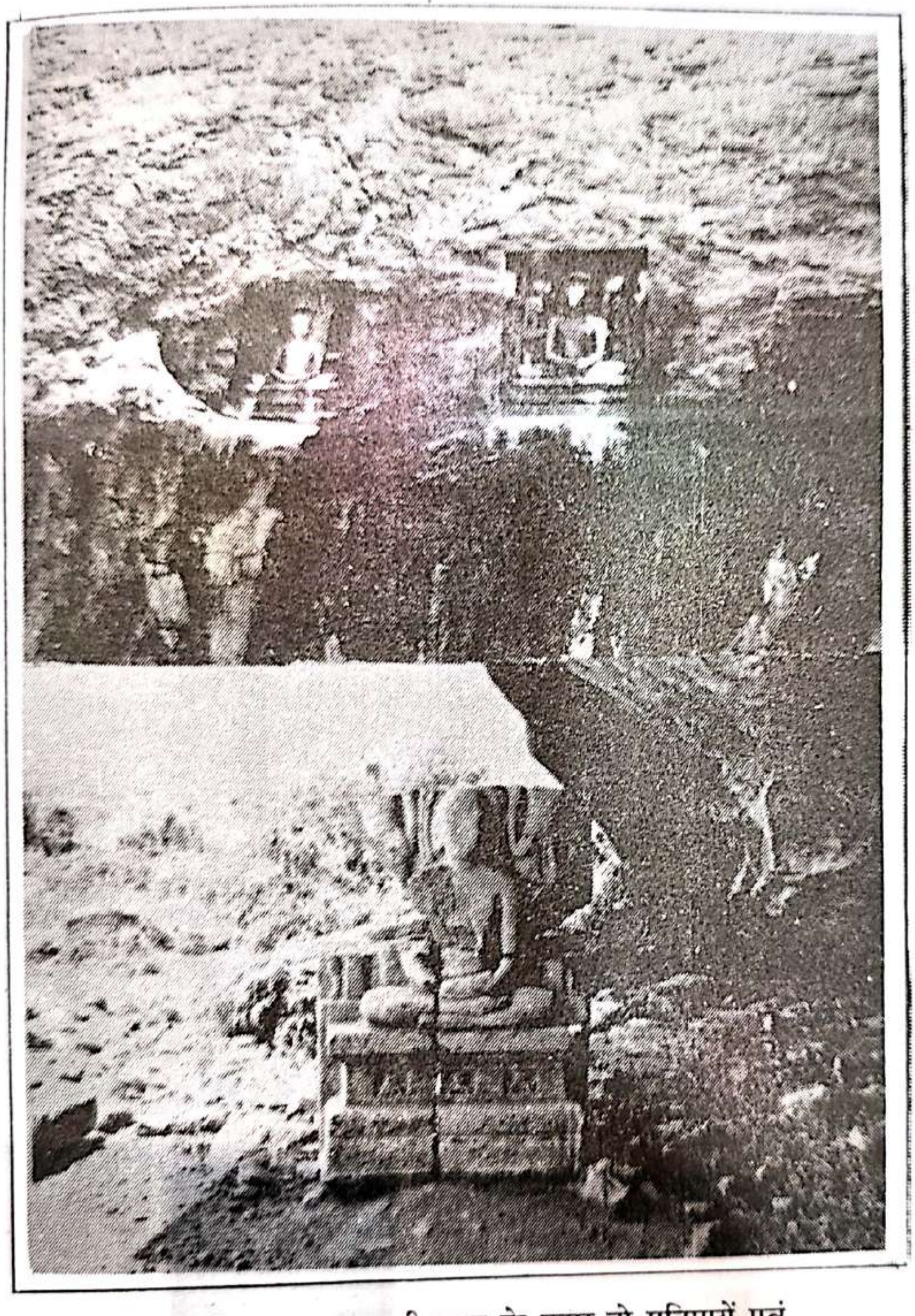

अम्मा चित्तरम पहाड़ की गुफा के ऊपर दो प्रतिमायें एवं नीचे गुफा में खण्डित मूर्ति

पहाड़ के सामने लगभग 1 कि.मी. जाकर (रोड क्रास कर) दूसरे दो पर्वत हैं। कहते हैं 20 वर्ष पूर्व इन पर भी जिनबिम्ब, गुफा, शिलालेख, शयनासन बने थे। अभी भी हैं किन्तु घांस झाड़ होने से मार्ग रुद्ध

Scanned with OKEN Scanner

हो गया है। एक पर मुरगन कोविल और दूसरे पर मादर कोविल हो गया है जो पहले जैन साधु निवास गुफायें ही रही होंगी। प्रत्येक पर्वत के चारों ओर झरने, सरोवर आदि बने हैं।

तंजाउर— (तंजाउर जिला)

यह जिला है। यहां श्री 1008 आदिनाथ जिनालय करीब 2500 वर्ष प्राचीन है। 300 वर्ष पूर्व इसका जीर्णोद्धार हुआ था, इस समय पर्याप्त जीर्णोद्धार आवश्यक है। यह जिनालय विशाल है। प्रवेश द्वार हाथी द्वार है। इसमें प्रवेश करते ही ध्वज दण्ड मोटे बाँस पर स्थित है। जिनालय का प्रवेश द्वार 4 सीढ़ियां चढ़कर आता है। प्रवेश द्वार

पर मध्य में जिन प्रतिमा दाहिनी और सरस्वती, बायीं ओर गणधर प्रतिमा विराजमान है जो देव, शास्त्र गुरु का प्रतीक है। अन्दर प्रवेश करते ही मध्य में अभिषेक पीठ रुप वेदी पर खड्गासन पीठ सहित धातु की करीब $2^1/_2$ फीट प्रतिमा आदिनाथ स्वामी की है, इसके दाहिनी ओर अनन्तनाथ खड्गासन, बायीं ओर चतुर्विंशति एवं नव देवता तथा

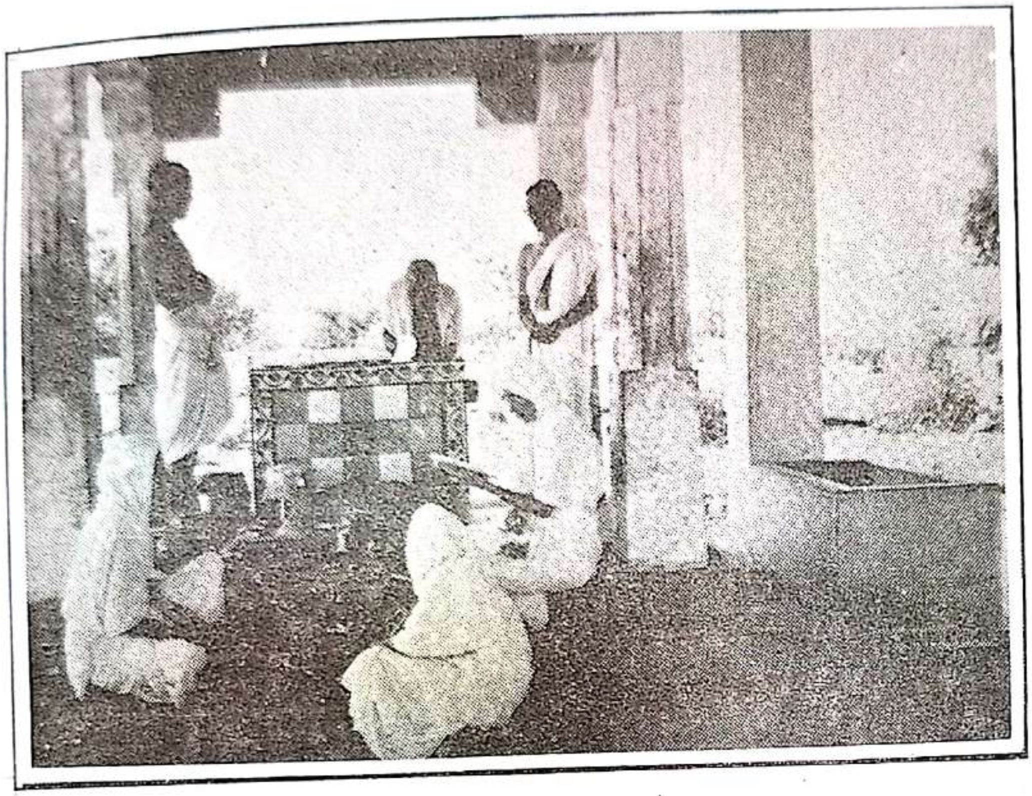

गणधर प्रतिमा पद्मासन विराजमान हैं। मूलनायक पल्यंकासन कृष्ण पाषाण की प्रतिमा पीठ सहित, छत्रत्रय, अशोक वृक्ष एवं प्रभा मण्डल युत अत्यन्त अतिशय वान तेजस्वी है। यह गर्भगृह चौथे प्रकोष्ठ में है। प्रथम प्रकोष्ठ में बायीं ओर 10 प्रतिमायें बैंच पर विराजमान हैं आले में सरस्वती देवी, विशाल श्रुत स्कंध विराजित हैं दूसरी ओर धातु की ज्वालामालिनी देवी हैं। प्रातः पालाभिषेक, नित्य पूजन और सांयकाल अष्ट मंगलद्रव्या दीपाचना होती है। कुछ लोगों में ही अच्छी भक्ति है, अधिकांश लोग मन्दिर आते ही नहीं है। 10 में 1 मेरु, 1 नन्दीश्वर, 3 पार्श्वनाथ, 2 आदिनाथ, 3 चन्द्रप्रभु हैं। 3 खड्गासन 7 पद्मासन हैं। 4—5 यंत्र हैं। सभी प्रतिमायें मनोज्ञ हैं। प्रदक्षिण में प्रथम श्री सरस्वती देवी का मन्दिर है। यह पाषाण बिम्ब है। इस पर सुनहला पेन्ट किया गया है, जिससे धातु जैसी प्रतीत होती है, प्रतिमा आकर्षक तेजवान है। इसके बगल में वाटिका है। पीछे की ओर वर्षा बिम्ब सुखासन आदिप्रभु की अति प्राचीन सुन्दर विराजमान हैं। इनके ठीक सामने कुआं, पीछे नवग्रह मन्दिर, बगल में वाटिका है। पुनः पीछे भी द्वार है, इसके

Scanned with OKEN Scanner

तंजाउर में विराजमान चक्रेश्वरी देवी

बाद नल है, स्नान का स्थान है, पुनः विशाल स्वाध्याय मण्डप है इसके आगे चौक छप्पर से पटा है, पुनः वराण्डा शुरु होते ही ब्रह्मदेव का मन्दिर, महादेवी ज्वालामालिनी का मन्दिर एवं धर्मदेवी कुष्माण्डिनी का मन्दिर है। ज्वालामालिनी की अष्ट भुजायें हैं। दाहिनी ओर प्रथम भुजा में वरद, दूसरी में धर्मचक्र, 3री में कोदंड और चतुर्थ में चक्र

Scanned with OKEN Scanner

है, बायीं ओर पहली भुजा में मातुलिंग फल, 2री में धनुष, 3री में मीन और 4थी में चक्र है। इसी प्रकार सिर पर प्रभामण्डल में ज्वाला है। यह मूर्ति कलात्मक दृष्टि से भारतवर्ष में पहली होनी चाहिये इसी शानी की धर्म देवी और ब्रह्मदेव भी हैं। यद्यपि मन्दिर की दशा साधारण है, धीरे-धीरे जीर्णोद्धार भी चालू है परन्तु मात्र इतना ही संतोषप्रद नहीं है। यहां श्रावक समृद्ध हैं परन्तु धर्म प्रीति विकासोन्मुख नहीं। धर्मोपदेश आवश्यक है। सर्व 17 जिन बिम्ब हैं। ब्रह्मदेव धातु के खड्गासन हैं। सब 7 शासन देवी देवता हैं। कहते हैं 5 वर्ष पूर्व 16 बिम्ब चोरी हो गये बाहर में एक शिला पट्ट पर ''कलवर्ट'' शिलालेख है जिस पर भगवान गणधर और जिनवाणी की मूर्ति उकेरी हुई है। जिनालय में 3 कमरे हैं।

तंजाउर कोटै :—

यहाँ 15 जैन परिवार और 1 चैत्यालय है एक महावीर प्रभु खड्गासन सिंहासन अष्ट प्रातिहार्य सहित चांदी के, 1 आदिप्रभु सुवर्णमय खड्गासन से कमल पर विराजमान। प्रभा मण्डल सहित 8 प्रतिमायें धातुमय 1 रत्नत्रय, 2 बाहुबली, 1 अनन्तनाथ, 3 पार्श्वनाथ, 1 नन्दीश्वर, 1 आदीश्वर पद्मासन, 1 चतुर्विशंति पाषाण, पद्मावती, धरणेन्द्र, ज्वाला मालिनी, ब्रह्मदेव, 1 नवदेवता सभी धातु के हैं। 1 ज्वालामालिनी पर नवरत्न जडित है जिसका छायाभिषेक करते हैं। यह व्यक्तिगत चैत्यालय है। अष्ट मंगल द्रव्य आरती भी होती है। तंजाऊर करन्दै से यह 3 कि. मी. पड़ता है। करन्दै में कोविल मन्दिर के पास ही बोर्डिंग है, यह श्रीमती रोजाबाई का अपना है, इसमें ऊपर चैत्यालय था। अब कुछ माह पूर्व भाई-भाई के झगड़े के कारण भगवान को उठाकर ले गये और मनार गुडी मन्दिर में विराजमान कर दिये हैं। श्रीमती रोजाबाई का पति मरने से ऐसा हो गया।

Scanned with OKEN Scanner

मनारगुड़ी :—

यह तंजाऊर से 40 कि.मी. और मन्दिर से 42 कि. मी. के करीब है। यहां एक विशाल मन्दिर है, 1 चैत्यालय ओर 25–30 श्रावकों के घर हैं। 3—4 श्वेताम्बरी भी हैं, जिनमें एक मन्दिर जी में आता जाता है। मन्दिर विशाल सुदृढ़ किला समान अति विस्तृत है। इसका परकोटा करीब 12–14 फुट ऊंचा है। परिक्रमा भी 15 फीट करीब चौड़ी है। मुख्य द्वार पर्वाभिमुख है। प्रभु के बायीं ओर परिक्रमा में छोटा सा बगीचा है। एक कुंआ और उसकी बाउण्डरी की हुई है। बायीं ओर 3 मण्डप गुडी है। प्रथम में क्षेत्रपाल, दूसरी में अष्ट भुजी ज्वालामालिनी, तीसरी ब्रह्मदेव की 3 मूर्तियां हैं। ये सभी काले पाषाण की हैं। मण्डप संगमरमर का फर्श सहित है, सुन्दर है, पुनः जिनालय का मण्डप अति विशाल है। प्रथम इसमें भगवान की बायीं ओर धर्म देवी का छोटा मन्दिर है। महादेवी कलात्मक काले पाषाण की हैं। इसके आगे इसी की बगल में चतुर्भुजी प्रभावशाली पद्मावती माता काले पाषाण निर्मित हैं, पुनः इसी में धरणेन्द्र—पद्मावती धातु की हैं। 1 प्रतिमा पद्मासन धातु की श्री पार्श्वप्रभु स्वामी की हैं। तदनन्तर श्रुतस्कन्ध मन्दिर है, यह स्कन्ध भी काले पाषाण की है इसके बगल में एक आले में दो मूर्तियां खड्गासन पाषाण की विराजमान हैं। इसके बाद जिनालय में प्रवेश करते ही सामने वेदी में 4 बिम्ब हैं— 1 श्री मल्लिनाथ, 1 वृषभनाथ, 1 कुन्थुनाथ स्वामी, पञ्चपरमेष्ठी चांदी के हैं। इसके दाहिनीं ओर कोठे में 10 मूर्तियां हैं— 1 रत्नत्रय, 1 मेरु, 1 नन्दीश्वर, 1 वर्द्धमान, 1 गणधर, 1 त्रिकाल तीर्थङ्कर यह करीब 3 फीट की होगी। 1 सुपार्श्वनाथ, 1 वृषभनाथ, 1 शांतिनाथ, 1 अरहनाथ, 1 धरणेन्द्र, 1 पद्मावती, सरस्वती, ज्वालामालिनी सर्वाण यक्ष और रोहिणी यक्षिणि, 2 ब्रह्मदेव, 1 सरस्वती छोटी। इस प्रकार 8 शासन देवता, कुल 18 बिम्ब हैं, ये सभी अष्ट धातु के सौम्य कलात्मक स्वच्छ और आकर्षक हैं। ये तँजाऊर चैत्यालय से लाकर 6 मास पूर्व विराजमान किये हैं। इनमें 3 चौबीसी ओर 6

Scanned with OKEN Scanner

शासन देवता यहीं के हैं। मध्य से दूसरे कमरे में 1 नेमिनाथ, 2 सिद्ध, 1 गणधर, 1 बाहुबली, 2 वर्धमान भगवान, 1 पार्श्वनाथ पद्मासन, 1 सुपार्श्वनाथ, 1 वृषभ स्वामी, 1 शान्तिनाथ, 1 कुन्थुनाथ, 1 मेरु छोटा, 1 नन्दीश्वर द्वीप बड़ा, 1 श्रुत स्कन्ध धातुमय, 24 तीर्थङ्कर बिम्ब 1। एक शांतिनाथ, एक सिद्ध परमेष्ठी यंत्र चांदी का, 1 गणधर यंत्र ताम्बे का 1 ब्रह्मयक्षन। इस प्रकार 18 बिम्ब और 2 यंत्र हैं। पुनः इसके भीतर तीसरे खन में मूलनायक स्वामी श्री मल्लिनाथ (पाषाणमय) पद्मासन से विराजमान हैं, 1 पञ्च परमेष्ठी हैं। एक आले में पञ्च परमेष्ठी की 5 छोटी मूर्तियां हैं। 1 मूर्ति चन्द्रप्रभु तीर्थङ्कर की भी है। बायीं ओर कोठे में, 1 वृषभनाथस्वामी सुखासन हैं। मध्य वेदी में 1 सिद्ध परमेष्ठी यन्त्रम्, 1 षोडष भावना यन्त्र ताम्बे का है। मन्दिर जीकी दशा साधारण है। खम्भे एवं गोपुर अधिक जीर्ण शीर्ण हो गये हैं। इस समय शीघ्र जीर्णोद्धार आवश्यक है। यहां लोगों की भक्ति है पर धन का अभाव है। प्रतिदिन अष्टविध मंगल द्रव्य दीपार्चना होती है। मन्दिर जी की जमीन है पर वर्षा पर फसल निर्भर है। पुजारी और ट्रस्टियों का ही गोलमाल है। कुछ लोगों की भावना अधिक निर्मल है एवं श्री जिनेन्द्र प्रभु के आयतन की वृद्धि करने की तीव्र आकांक्षा है।

कहते हैं यहां लव-कुश ने आकर पूजा की थी। अतः मुनिसुव्रतनाथ के समय का यह मन्दिर है। इन मन्दिरों पर श्वेताम्बरों की दृष्टि टिकी है। पद्मावती वेदी के सामने 1 श्वेताम्बरी ने चाल बाजी से अपने नाम का बोर्ड लगवा दिया था। उसने उस वेदी के जीर्णोद्धार में लगभग 1 हज़ार रुपये दिये होंगे। इसके लिए पत्थरों में अपना नाम खुदवा दिया, यह भविष्य के लिए बहुत खतरनाक है, ऐसा लोगों को समझाकर संघ ने उस श्वेताम्बरी के नाम का बोर्ड निकलवा दिया, अब सब लोगों को भी सावधान हो जाना चाहिये। स्थिति सुधार पर है, सन्तोषजनक है।

Scanned with OKEN Scanner

मनारगुड़ी का चैत्यालय :—

यह श्री जिनालय के दाहिनीं ओर अत्यन्त निकट है। इसमें भी 1 मूलनायक चांदी के खड्गासन मल्लिनाथ स्वामी हैं। 1 चौबीसी रजत की है। 1 पर्श्वनाथ मुक्कुडी सहित, 1 पार्श्वनाथ पद्मासन, 1 सुपार्श्वनाथ, 1 वृषभ स्वामी खड्गासन, 1 आदि प्रभु पद्मासन, 1 श्री लक्ष्मी, 1 ज्वालामालिनी, 1 पद्मावती, 1 ब्रह्मयक्ष, 1 सरस्वती इस प्रकार 12 प्रतिमायें हैं। मठ पूरा टूटा फूटा हो चुका है। भगवान मात्र एक काठ के सिंहासन पर विराजमान हैं। पूजा प्रतिदिन होती है, किन्तु समय कोई निश्चित नहीं है। यहां के श्रावक भद्र, भक्त एवं विनयशील हैं।

दीपंगुडी :—

"अरसवनकाडु" गांव का नाम है। 'दीपनाथ स्वामी' यह भगवान का नाम हैं। इनके नाम से गांव का यह नाम पड़ा है। यहां 31 जिन बिम्ब धातु के हैं। 5 पाषाण की प्रतिमायें हैं। 7 धातु के शासनदेवी देवता हैं। गुडी श्रुत स्कन्ध की है। 1 धर्म देवी की, तीसरी में 1 श्री पद्मासन आदीश्वर प्रभु की अति प्राचीन मूर्ति है। मूलनायक आदीश्वर प्रभु भी कृष्ण पाषाण के हैं मन्दिर के 3 प्रकोष्ठ हैं। प्रथम में 1 आदीश्वर पद्मासन, 2 मेरु, 1 नन्दीश्वर सब धातु के हैं। 2 प्रतिमा पार्श्वप्रभु की, 1 पाषाण की और 1 धातु की हैं। दूसरे कोठे में 38 प्रतिमायें लकड़ी की बेन्च एवं काठ की पेटी पर विराजमान हैं। इनमें 4 बाहुबली, 8 आदिनाथ, 5 पार्श्वनाथ, 1 सुपार्श्वनाथ, 1 चतुर्विशंति तीर्थङ्कर, 1 रत्न त्रय, 1 वर्धमान, 1 नेमिनाथ, 1 अनन्तनाथ, 3 पञ्चपरमेष्ठी, 1 वृषभादि, अनन्त पर्यन्त, 1 नवदेवता हैं, शेष का चिन्ह ज्ञात नहीं।

तीसरे कोठे में मूलनायक स्वामी आदिनाथ हैं। यह प्रतिमा कितनी प्राचीन है कहा नहीं जा सकता। हां, मन्दिर का काल मुनिसुब्रतनाथ स्वामी का है। इस मन्दिर के आगे ही विस्तृत प्रशस्त वराण्डा है। इसके भी 4 दरवाजे हैं पर किवाड़ नहीं, मात्र आकार है। अष्टम नम्बर पर गन्ध कुटी समान मूलनायक है। पुनः बाहर परिक्रमा प्रारम्भ होते

Scanned with OKEN Scanner

ही क्षेत्रपाल जी का मन्दिर है। पीछे की ओर दोनों तरफ भी बगीचा है, जिसका आकार पूरा ध्वस्त हो चुका है। पुनः कुआँ आता है, इसके सामने ज्वालामालिनी देवी जी का मंदिर है। इसकी बगल में ब्रह्म यक्ष का पुनः आदित्य ग्रह का मंदिर है। मुख्य द्वार के दायीं ओर बराण्डा सम्भवतः स्वाध्याय शाला हो, इसके ठीक बाद में नैवेद्य बनाने का कमरा है। पूरा मंदिर ईंटों का बनाया हुआ है। मंदिर में प्रविष्ट होते ही परिक्रमा छोड़ कर मण्डप शुरू होते ही ताम्रध्वज दण्ड है, इसके पूर्व छत्री है, जिसमें चारों ओर 24 तीर्थंकरों की मूर्तियां ईंट में ही उकेरी हुई हैं। इसके बायीं ओर 1 शिलापट्ट है। जिस पर मंदिर जीर्णोद्धार का इतिहास खुदा है। इसमें प्रारम्भ में भगवान की, आचार्य की और श्रुत की मूर्तियां कलात्मक ढंग से बनी हैं। मंदिर विशाल है और हाथी दरवाजा है, बाहर दोनों ओर छत्रम् के समान विशाल हाल एवं कमरे बने हैं। एक ओर ब्रह्म महोत्सव के वाहन शेर, हाथी, शेषनाग और देवेन्द्र रक्खे हैं। ये सभी काँच के काम से युक्त और सुन्दर दशा में हैं। 5 वर्ष से ब्रह्मोत्सव बंद पड़ा है। 6 माह पूर्व से आर्चीकल डिपार्टमेंट के अधिकार में चला गया है। 2 व्राचमेन हैं, जो केवल अभिषेक के समय घंटा बजा देता है। मंदिर की दशा दुःखद है और यहां के पण्डे भी एक नम्बर के धूर्त हैं। भक्ति भावना कुछ नहीं है। शिला शासन के आधार पर निम्न ज्ञातव्य बातें विदित हुई है—

शिला शासन मणि प्रवाल ग्रंथ लिपि में है, जिसे जे. राजक्ष्मी तंजाऊर से पढ़वाया था। तदनुसार— (सरस्वती, धरणेंद्र—पद्मावती, सर्वाण्ह यक्षण, कुष्माण्डिनी, ब्रह्मदेव, पूर्ण पुष्कल, धरणेंद्र पद्मावती बड़े, 2 आदिनाथ पद्मासन पाषाण, 1 पार्श्वनाथ (पाषाण) है। मंदिर का जीर्णोद्धार लगभग 300 वर्ष पूर्व हुआ था। उत्तर भारत से श्री आदिसेन भट्टारक ने आकर पंच कल्याणक प्रतिष्ठा कराई जिसमें तंजाऊर, मनारगुडी, तिरबलूर आदि गांवों के श्रावक श्राविका जन एकत्रित हुए थे। इस शिलाखण्ड के ऊपर श्री जिन बिम्ब, दाहिनी ओर

Scanned with OKEN Scanner

श्रुत स्कंध, बायीं ओर गणधर इसके बाद हाथ जोड़े श्रावक का बिम्ब उकेरा है। दाहिनीं ओर गाय के नीचे हुली शेर का बच्चा दुग्धपान कर रहा है। यहां अर्द्धजाभ पूजा भी होती थी अर्थात् अर्द्ध रात्रि दीपाराधना होती थी अभी 10 बजे ही कर लेते हैं।

कुम्भकोनम :—

यहां 1 मंदिर है। 10 घर हैं। जिनालय छोटा है, करीब 300 वर्ष प्राचीन है, अभी जीर्णोद्धार आवश्यक है। यह व्यक्तिगत एक ही व्यक्ति के द्वारा बनाया गया है। इसकी आय पर्याप्त है। मूलनायक श्री चंद्र प्रभु स्वामी जो पाषाणमय पद्मासन हैं, अत्यंत मनोज्ञ नयनाभिराम हैं। 2 प्रकोष्ठों का मंदिर और आगे मण्डप है। इसमें बांस का ध्वज दण्ड है। 2 बड़े तख्त हैं। पीछे नैवेद्य गृह, कुआँ एवं वाटिका है। इसके पीछे नारियल का बगीचा है पर अभी तो घास का जंगल है। जगह तो पर्याप्त लम्बी चौड़ी है परन्तु इसकी व्यवस्था समुचित ढ़ंग से नहीं है। 41 मूर्तियां हैं। 1 विशाल 3 चौबीसी हैं। 8 प्रतिमा जी पाषाण की हैं। 3 चांदी के, सिंहासन, छत्रत्रय एवं भामण्डल सहित हैं। 2 प्रतिमा धरणेन्द्र पद्मावती चन्दन की हैं, जिनके हाथ खण्डित हो चुके हैं। अष्ट प्रातिहार्य पीतल के, दीपार्चना—आरती छोटी-बड़ी सब चांदी की हैं। ज्वालामालिनी, श्याम यक्ष धातुमय आकर्षक वस्त्रालंकारलंकृत हैं। 1 सरस्वती, 1 पद्मावती, 1 धरणेन्द्र, 1 श्रुत स्कन्ध, 1 ब्रह्मयक्ष, 1 क्षेत्रपाल हैं। शेष 33 धातु के और 8 पाषाण के जिन बिम्ब हैं— ये क्रमश: 8 पार्श्वनाथ, 1 बाहुबली, 1 नन्दीश्वर, 1 मेरु, 1 शान्तिनाथ, 1 चौबीसी, 1 पञ्च परमेष्ठी, 1 नवदेवता, 1 गणधर, 1 तीन चौबीसी हैं तथा मूलनायक प्रतिमा चन्द्र प्रभु जी है। चांदी के चन्द्रप्रभु, 1 वासुपूज्य और 1 वर्धमान स्वामी की हैं। श्री चन्द्रनाथस्वामी मूलनायक शुभ्रवर्ण के हैं। यहां के लोग भक्त हैं परन्तु अल्पज्ञ हैं। कुछ विद्वान् भी हैं। अभी पढ़ने आदि की भावना जागृत हुई है। नियम व्रत लिए हैं।

❀ ❀ ❀

Scanned with OKEN Scanner